स्थापित - 1906

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

फरवरी 2024, पृष्ठ : 52, मूल्य 6:00 रूपये

देव - गुरु - धर्म तीनों महान हैं, इन्हें पहचानने वाला बुद्धिमान है।

देव का तात्पर्य अपनी आत्मा से, गुरु का तात्पर्य अपने ज्ञान और
धर्म का तात्पर्य स्व - विवेक से है।

जिसका भी उक्त तीनों तत्वों से संबंध जुड़ गया वहीं संसार के भंवर जाल में पुनः फंसने से बच गया और उसका जन्म - जन्मांतर का दुःख मिट गया।

जैन धर्म दिवाकर, साहित्य मनीषी, अमृत पुरुष, श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर गुरुदेव

आचार्य सम्राट श्री देवेन्द्रमुनिजी महाराज सा. - दीक्षा जयन्ती

फाल्गुन शुक्ल 3, वि. सं. 1997 (13 मार्च 2024) पर कोटिशः वन्दन नमन... स्मरण

श्रमण संघ व जैन कॉन्फ्रेंस की सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियाँ

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ दिल्ली द्वारा भगवान महावीर स्वामी के 2550वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में नई दिल्ली के विज्ञान भवन में 12 फरवरी 2024 को कल्याणक महोत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम में मंगल सान्निध्य हेतु उपस्थित हुए राष्ट्रसंत परम्पराचार्य श्री प्रज्ञसागरजी मुनिराज, चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुनीलसागरजी म., श्रमण संघीय प्रवर्तक डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म., डॉ. श्री सुरेन्द्रमुनिजी म., आचार्य श्री महाश्रमणजी की विदुषी शिष्या साध्वी श्री अणिमाश्रीजी म., महासाध्वी श्री प्रीतिरत्नाश्रीजी म. आदि ठाणा को वंदन, नमन करते हुए सरसंघचालक डॉ. मोहनराव भागवतजी एवं पाट पर विराजमान सभी संत - सतीवृंद तथा जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्षजी का स्वागत अभिनंदन करते हुए संघ के पदाधिकारीगण।

विज्ञान भवन में आयोजित कार्यक्रम में प्रवर्तक गुरुदेव डॉ. श्री राजेंद्रमुनिजी म. द्वारा लिखित पुस्तक ''भगवान महावीर जीवन और दर्शन'' का विमोचन करते हुए सरसंघचालक डॉ. मोहन राव भागवत जी

प्रवर्तक श्री सुकनमुनिजी म., उपप्रवर्तक श्री विनयमुनिजी म. 'वागीश', उपप्रवर्तक श्री गौतममुनिजी म. 'गुणाकार' आदि संत-सतीवृंद के सान्निध्य में जैन कॉन्फ्रेंस के वर्ष 2024 के वार्षिक कैलेण्डर का विमोचन करते हुए जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारीगण।

चेन्नई में विराजित उपप्रवर्तक श्री श्रुतमुनिजी म. आदि ठाणा के दर्शन, वंदन का लाभ लेते हुए जैन कॉन्फ्रेंस के विश्वस्त मण्डल चेयरमैन श्री रमनलालजी लुंकड़ जैन, श्री अशोकजी बाबूसेठ बोरा जैन, श्री सुनीलजी बाफना जैन, रा. कार्य. समिति सदस्य श्री सुरेशजी ललवाणी जैन, श्री गौतमचंदजी दुग्गड़ जैन आदि पदाधिकारीगण।

नाशिक में महासती श्री कुमुदलताजी म. के दर्शन का लाभ लेते हुए राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री पदमचंदजी आच्छा जैन, श्री अशोकजी नाहर जैन आदि महानुभाव।

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

श्रमण संघ निर्देशः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः ।
स्थानकवासीजैनानां कॉन्फ्रेंसनामा विश्रुता, समाजोत्थान कार्येषु संस्थेयमस्तितत्परा ।।

वर्ष - 68 | अंक - 02 | फरवरी - 2024 | मूल्य एक प्रति 6 रुपये

सम्पादक
अतुल जैन, दिल्ली

सम्पादक मण्डल
संजय बाफना जैन, अहमदनगर
83298 28560
डॉ. भद्रेश कुमार जैन, चेन्नई
93822 91400
एन. गौतमचंद दुग्गड़ जैन, चेन्नई
93826 36363

केन्द्रीय कार्यालय
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर
स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
जैन भवन
12, शहीद भगतसिंह मार्ग,
गोल मार्केट, नई दिल्ली-110 001
011-23363729, 23365420
+91 90197 31906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : www.jainconference.org

SHRI ALL INDIA S S JAINCONFERENCE
aissjc137342@cnrb
CANARA BANK
AC. NO. : 0270101137342
IFS CODE : CNRB0000270
BRANCH : GOLE MARKET

सम्पादकीय	- श्री अतुल जैन, राष्ट्रीय महामंत्री	09
अध्यक्षीय	- श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष	10-11
हानिकारक प्रथाओं को...	- आचार्य सम्राट् श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.	12
सुख का वास्तविक पता	- आचार्य सम्राट् श्री शिवमुनिजी म.सा.	13
सरलता का पुरस्कार	- युवाचार्य पू. श्री मिश्रीमलजी म.सा. 'मधुकर'	14
पत्थर का स्वभाव ...	- प्रवर्तक पू. श्री विजयमुनिजी म.सा.	15
ज्ञान बढ़ाओं - प्रश्नमंच	- मंत्री पू. श्री आशीषमुनिजी म.सा.	16-18
मैत्री भाव का महत्व	- उपाध्याय श्री कन्हैयालालजी म.सा. 'कमल'	19-20
सम्यक्त्व निर्मल रखना	- पू. श्री उपेन्द्रमुनि म.सा. 'शास्त्री'	21-23
पू. श्री वेणीचंदजी म.सा.	- स्थानकवासी जैन शासन की दिव्य विभूति	24-27
देव-गुरु और धर्म ...	- पू. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'गुणाकार'	28-29
आत्मधर्म के सुअवसर ...	- पू. साध्वी युगल निधि-कृपाजी म.सा.	30-31
महान समाज सुधारक ...	- श्री संजीव जैन, लुधियाना	32
आज जागो तो कल ...	- श्री आनंद सुभाषचंद बंब जैन, सटाना	33
पौषध : जीवन की ...	- श्री पदमचंद गांधी जैन, जयपुर	34-35
जैन संस्कृति में ...	- डॉ. एन.के. खींचा जैन, जयपुर	36-37
दीवानजी की अहिंसा	- श्री नेमीचंद धाकड़ जैन, उदयपुर	38
महिला पद पर ...	- श्रीमती पुष्पा गोखरू जैन, भीलवाड़ा	39-40
पापा की परी ...	- श्रीमती माया छल्लाणी जैन, चेन्नई	41-42
जमीन रह गई ...	- सौ. रीमा महेन्द्र ठाकुर, झाबुआ	43-44
स्वाध्याय एक आत्मानुभूति	- सौ. शुभांगी मनोज कात्रेला जैन, निगड़ी	45
राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना द्वारा जनवरी माह में सम्पन्न		46
समाचार प्रकाश		47-49
शोक समाचार		50

अस्वीकरण : *लेखक / प्रेषक द्वारा लिखे गए विचारों, सामग्री एवं विषय व उसकी प्रमाणिकता के लिए सम्पादक या जैन कॉन्फ्रेंस जिम्मेदार नहीं है। यह आवश्यक नहीं है कि सभी रचनाएं मौलिक एवं आवश्यकतानुसार सन्दर्भ-युक्त हों। समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।*

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युगप्रधान, ध्यानयोगी,
आचार्य सम्राट् परम पूज्य

श्री शिवमुनिजी म. सा.

आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य

श्री महेन्द्रऋषिजी म. सा.

:: उपाध्याय मण्डल ::

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म. सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म. सा. 'प्रथम'

:: प्रवर्तक मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म. सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म. सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म. सा.

:: मंत्री मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म. सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म. सा. 'कमलेश',
(संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

:: सलाहकार मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म. सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विनयमुनिजी म. सा. 'भीम'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म. सा. 'निर्भय'

:: प्रवर्तिनी मण्डल ::

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री ज्ञानप्रभाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म. सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली विश्वस्त मण्डल

01.	श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना - चेयरमैन	98505 00015	09.	श्री रमेश भण्डारी जैन, इंदौर	93021 03817
02.	श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035	10.	श्री उगमचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
03.	श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे	98222 42795	11.	श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010
04.	श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082	12.	श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
05.	श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336	13.	श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98100 45440
06.	श्री राजीव जैन, दिल्ली	98110 42280	14.	श्री कांतिकुमार लोढा जैन, औरंगाबाद	82862 00000
07.	श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400	15.	डॉ. अमित राय जैन, बड़ौत	98373 94448
08.	श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838	❖❖	❖❖	❖❖

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण - कार्यकाल वर्ष : 2021-24

राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई 98410 30035

राष्ट्रीय चेयरमैन
श्री सुभाष ओसवाल जैन, दिल्ली 98100 45440

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री पारसमल मोदी जैन, मुंबई 98200 60530

राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
श्री अशोककुमार मेहता जैन, सूरत 98251 19082

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री जे. डी. जैन, गाज़ियाबाद 98100 06462
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली 98290 25729
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, नई दिल्ली 93138 13899
पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन, इंदौर 98930 32777
श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक 94239 62818

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
श्री प्रकाश धारीवाल जैन, घोड़नदी, पुणे 98222 42795
श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली 98111 97000
श्री रमेश भंडारी जैन, इंदौर 93021 03817
श्री अशोक बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर 92264 72284
श्री सुरेशचंद छल्लाणी जैन, बैंगलोर 93412 32573

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष
श्री दिनेशकुमार भलगट जैन, चेन्नई 98402 64888

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री पन्नालाल कोठारी जैन, बैंगलोर 98440 11908
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, सिकंदराबाद 92463 61008
श्री सुरेशकुमार लुनावत जैन, चेन्नई 98842 21003
श्री सज्जनराज मेहता जैन, चेन्नई 94440 66089
श्री संजीव जैन, लुधियाना 98140 25325
श्री संदीप कुमार जैन, सिरसा, हरियाणा 92157 37705
श्री मनमोहन जैन, मुजफ्फरनगर 98370 67082
श्री प्रशांत जैन, नई दिल्ली 98101 21450
श्री विपिन आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली 99113 00888
श्री डिपिन जैन, इंदौर 78699 99222
श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली 98113 58110
श्री सुरेश कुमार जैन, दिल्ली 98112 39872
श्री गुमानसिंह पीपारा जैन, कोलकाता 98300 30774
श्री राजेन्द्र नथमल मुथा जैन, जालना 70206 36161
श्री शशिकुमार 'पिंटू' कर्नावट जैन, मालेगांव 98239 55515
श्री बालासाहेब धोका जैन, पुणे 98220 39728
श्री किशोर खाबिया जैन, मुंबई 98200 48618
श्री कांतिलाल बोथरा जैन, शिरूर-घोड़नदी 87882 35525
श्री रमेश कुमार पुनमिया जैन, पालघर 94030 09639
श्री शंभूलाल ललवाणी जैन, अहमदाबाद 99783 47800

राष्ट्रीय महामंत्री
श्री अतुल जैन, नई दिल्ली 98110 75336

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई 98841 67400

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष
श्री जसवन्त जैन, नई दिल्ली 98104 35108

जीवन प्रकाश योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पुणे 98505 00015
राष्ट्रीय मंत्री : श्री चन्द्रशेखर लुंकड़ जैन, पुणे 98903 01635

मानव सेवा योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री राजेश मुथा जैन, बैंगलोर 93428 63447
राष्ट्रीय मंत्री : श्री ज्ञानचंद लोढ़ा जैन, बैंगलोर 98452 21302

जीव दया योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री हुकमीचंद कोठारी जैन, सूरत 70161 20162
राष्ट्रीय मंत्री : श्री चतरलाल लोढ़ा जैन, मुंबई 98201 11839

ज्ञान प्रकाश योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री संजय बाफना जैन, अहमदनगर 83298 28560
राष्ट्रीय मंत्री : श्री किशोरकुमार दलाल जैन, बैंगलोर 94480 81348

वैय्यावच्च योजना
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री अशोक रांका जैन, बैंगलोर 99455 41200
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री जे. रतनचंद सिंघवी जैन, बैंगलोर 93425 97955
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनोहरलाल लोढ़ा जैन, मावली सिंधु 98220 31788

अल्पसंख्यक योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री राजेन्द्र ओस्तवाल जैन, ब्यावर 98280 54770
राष्ट्रीय मंत्री : एडवोकेट डॉ. अर्पित छाजेड़ जैन, ब्यावर 92149 63701

विहारधाम योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री नन्दकुमार भटेवरा जैन, कोल्हार भगवती 98606 67000
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनसुखलाल गुगले जैन, घोड़नदी (शिरूर) 98224 47166

राष्ट्रीय मंत्री
श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन, बैंगलोर 93412 21774
श्री महेन्द्र कुमार मुणोत जैन, बैंगलोर 98450 73276
श्री संपतराज कोठारी जैन, सिकंदराबाद 92461 58452
श्री धर्मीचंद कांकरिया जैन, चेन्नई 98410 59884
श्री राजेन्द्रकुमार बोहरा जैन, चेन्नई 98406 00003
श्री मुकेश कुमार जैन 'सांड', मोहाली 93185 93599
श्री राकेश जैन 'लक्की', लुधियाना 98150 20661
श्री सुभाष जैन 'लिली', मुक्तसर 98146 99393
श्री रविंदर जैन, पानीपत 98960 92861
श्री पुष्कर जैन, मेरठ 94122 06374
श्री रमेश जैन 'शामड़ी', दिल्ली 93509 16150

राष्ट्रीय मंत्री :

श्री रामनिवास जैन, दिल्ली	98112 95715
श्री अंबालाल लोढ़ा जैन, नाथद्वारा	95295 40800
श्री सुधीर जैन, कोटा	94141 79700
श्री जिनेश्वर जैन, इंदौर	99818 50900
श्री वीरप्रकाश जैन, कोलकाता	93310 35450
श्री जीवनराज पुनमिया जैन, इचलकरंजी	92258 31765
श्री सुरेश गुंदेचा जैन, रत्नागिरी	98817 41101
श्री बंसीलाल सूर्या जैन, सूरत	93280 97429
श्री प्यारचन्द कोठारी जैन, सूरत	93745 35686

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री :

एडवोकेट श्री दिलीप खिंवसरा जैन, औरंगाबाद	94222 05434

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री :

श्री गौतमचंद धारीवाल जैन, बैंगलोर	98451 49443
श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567
श्री दीपक सूर्या जैन, भीलवाड़ा	98293 47007
श्री आनंद सुराणा जैन, जालना	94222 18747
श्री गणेश ओसवाल जैन, पुणे	99218 79613

राष्ट्रीय संगठन मंत्री :

श्री राजन जैन, लुधियाना	98140 77445
श्री दिनेश सुराणा जैन, दिल्ली	93100 54428
श्री मदनलाल जैन 'शामड़ी', दिल्ली	98737 76896
श्री कांतिलाल जैन, उदयपुर	93220 90220
श्री प्रकाश मुगदिया जैन, औरंगाबाद	73877 86999

:: प्रांतीय अध्यक्ष ::

श्री पुखराज मेहता जैन (कर्नाटक - ज़ोन 1)	98446 77725
श्री सुरेन्द्र कुमार कटारिया जैन (तेलंगाना - ज़ोन 1)	98480 38094
श्री गौतमचंद कटारिया जैन (तमिलनाडु - ज़ोन 1)	96770 43212
श्री अरुण जैन (पंजाब - ज़ोन 2)	98155 66885
श्री विनय कुमार जैन (हरियाणा - ज़ोन 2)	83968 00000
श्री अमितराय जैन (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - ज़ोन 2)	98373 94448
श्री जितेन्द्र जैन (दिल्ली - ज़ोन 2)	98100 62967
श्री निर्मल पोखरना जैन (राजस्थान - ज़ोन 3)	94141 67544
श्री ललित कुमार छल्लाणी जैन (मध्य प्रदेश - ज़ोन 3)	98260 27927
डॉ. आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल - ज़ोन 3)	98302 49151
श्री मदनलाल कुंदनमल लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र-ज़ोन 4)	98223 76898
श्री सुनील बाफना जैन (मुंबई-पुणे - ज़ोन 5)	98505 67010
श्री जयंतिलाल कुकड़ा जैन (गुजरात - ज़ोन 5)	98251 35744

:: प्रांतीय महामंत्री ::

श्री सुरेंद्रकुमार आंचलिया जैन (कर्नाटक)	98861 86528
श्री राजेश भंडारी जैन (तेलंगाना)	79871 61614
श्री एम. राजेशकुमार रांका जैन (तमिलनाडु)	99949 16455
श्री पंकज जैन (पंजाब)	98150 00791
श्री अजय जैन (हरियाणा)	94161 22219
श्री भास्कर जैन (उत्तर प्रदेश)	98972 33877
श्री संजय जैन (दिल्ली)	99900 22221
श्री शांतिलाल मारु जैन (राजस्थान)	94141 48875
श्री संतोष धारीवाल जैन (मध्य प्रदेश)	98060 44110
श्री राजेश कुमार भुरट जैन (पश्चिम बंगाल)	93310 09391
श्री संतोष चोरड़िया जैन (महाराष्ट्र)	99225 44744
श्री नेमीचंद सोलंकी जैन (मुंबई-पुणे)	93710 89896
श्री आकाशकुमार मादरेचा जैन (गुजरात)	94287 45537

-: आवश्यक सूचना :-

श्री ऑल इंडिया श्वे. स्था. जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के समस्त राष्ट्रीय पदाधिकारी, समस्त योजना अध्यक्ष एवं मंत्रीजी, राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष एवं महामंत्री, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष एवं महामंत्री, समस्त प्रांतीय अध्यक्ष एवं महामंत्री, प्रांतीय महिला अध्यक्ष एवं महामंत्री, प्रांतीय युवा अध्यक्ष एवं महामंत्री आदि से नम्र निवेदन है कि जैन प्रकाश में प्रकाशनार्थ गतिविधियों के जो भी समाचार हों, वे आपके द्वारा अथवा आपके अधिकृत पदाधिकारी द्वारा प्रत्येक महीने की 30 तारीख तक समस्त जानकारी के साथ संक्षिप्तः रूप से भिजवाने का श्रम करें, अधिकृत रूप से प्रेषित सामग्री को जैन प्रकाश में प्रकाशनार्थ प्रमुखता दी जायेगी।

- सम्पादक मण्डल : जैन प्रकाश

जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता हेतु शुल्क राशि

संस्थागत	रु. 750/-
व्यक्तिगत	रु. 1500/-
पति-पत्नी के लिए	रु. 2500/-
पति या पत्नी दोनों में से कोई भी एक आजीवन सदस्य है तो दूसरे को आजीवन सदस्य बनने के लिए	**रु. 1000/-**
जैन प्रकाश हेतु आजीवन सदस्यता **12 वर्ष**	**रु. 1000/-**

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस - महिला शाखा - कार्यकाल वर्ष 2021-24

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

सौ. पुष्पा कीमती जैन, हैदराबाद	99639 11219
सौ. रतनबाई मेहता जैन, बैंगलोर	93412 32857
सौ. नीलम ओसवाल जैन, दिल्ली	93112 45440
सौ. बेबीबेन डागलिया जैन, मुंबई	93203 39560

राष्ट्रीय अध्यक्षा

सौ. पुष्पा राजेन्द्र गोखरु जैन, भीलवाड़ा	94141 84005

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्षा

सौ. विमल सुदर्शन बाफना जैन, पुणे	88050 80002

राष्ट्रीय उपाध्यक्षा

सौ. जतनबाई कांकरिया जैन, हैदराबाद	92901 19207
सौ. संतोष आच्छा जैन, बैंगलोर	97406 17633
सौ. संतोष बोहरा जैन, बैंगलोर	99005 36047
सौ. पुष्पा संचेती जैन, चेन्नई	84282 24444
सौ. बबीता रविन्द्र जैन, पानीपत	98960 92862
सौ. सुमित्रा जैन, दिल्ली	99715 65853
सौ. संतोष सुरेश जैन, दिल्ली	98687 04326
सौ. इंदु जैन, कोटा	94608 50363
सौ. लाडजी मेहता जैन, भीलवाड़ा	87641 22999
सौ. संतोष सिंघवी जैन, भीलवाड़ा	94138 60891
सौ. आशा साम्भर जैन, नीमच	94066 59600
सौ. अंतरदेवी बाघमार जैन, कलकत्ता	93317 15789
सौ. अनिता लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	98816 88988
सौ. कल्पना धारीवाल जैन, नाशिक	82081 74668
सौ. लता पगारिया जैन, पुणे	90287 36831
सौ. सुरेखाजी कटारिया जैन, पुणे	94223 27041
सौ. स्वीटी चण्डालिया जैन, सूरत	94083 52726
सौ. प्रभावती मुथा जैन, पुणे	94220 79908
सौ. लाडजी सिंघवी जैन, मुंबई	90049 67285

राष्ट्रीय महामंत्री

सौ. आरती (प्रेमलता) बुरड़ जैन, बैंगलोर	99451 24476

राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा

सौ. सुषमा धाकड़ जैन, पालघर	99878 52656

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्षा

सौ. मीना तातेड़ जैन, वलसाड़	81419 17775

राष्ट्रीय मंत्री

सौ. चन्द्रकला कोठारी जैन, हैदराबाद	97040 66066
सौ. प्रेमा बोहरा जैन, बैंगलोर	99001 38806
सौ. सपना सिंघवी जैन, बैंगलोर	99168 38735
सौ. पिंकी सुराणा जैन, चेन्नई	97907 44221
सौ. आरती सुराणा जैन, सिकन्द्राबाद	86883 60361
सौ. मोनिका जैन, लुधियाना	78886 65752
सौ. वीणा जैन, दिल्ली	78389 00380
सौ. मधु लोढा जैन, भीलवाड़ा	99284 59794
सौ. सुशीला लोढा जैन, ब्यावर	99500 21210
सौ. नैना नौलखा जैन, उदयपुर	94148 08250
सौ. पुष्पा बागरेचा जैन, कोटा	90790 88691
सौ. भारती चंगेड़िया जैन, इचलकरंजी	99223 59071
सौ. तृप्ति जैन, अहमदनगर	89999 18531
सौ. नन्दा कांकरिया जैन, औरंगाबाद	88888 91223
सौ. कंचन सिंघवी जैन, मुंबई	92243 31981
सौ. सुशीला लोढा जैन, मुंबई	99203 67337
सौ. मन्जू सिंघवी जैन, मुंबई	99307 55670
सौ. सूरज वीरवाल जैन, उदयपुर	94604 45044
सौ. अंजू सिरोया जैन, वापी	98241 40086

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री

सौ. प्राची मुगदिया जैन, औरंगाबाद	82755 13888

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री

सौ. ज्योति गांधी जैन, अहमदनगर	96578 67583
सौ. शोभा जैन, इन्दौर	91793 49386
सौ. बसंती चोपड़ा जैन, बैंगलोर	97396 73194
सौ. वन्दना छाजेड़ जैन, भीलवाड़ा	98280 82728
सौ. शुभ आराधना हिंगड़ जैन, अहमदाबाद	99249 93749

राष्ट्रीय संगठन मंत्री

सौ. नगीना मण्डोत जैन, बैंगलोर	99002 81067
सौ. संगीता छल्लानी जैन, बैंगलोर	97311 06160
सौ. ममता वडाला जैन, मुंबई	98672 62323
सौ. सरोज ढेलावत जैन, निम्बाहेड़ा	94610 09650
सौ. मधु जैन, लुधियाना	84374 14111

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. मन्जू तातेड़ जैन, मुंबई	77381 69999
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. पिंकी नाहर जैन, मुंबई	97571 95533

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. आजाद सांड जैन, चंडीगढ़	93564 52299
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. सुमित्रा बनवट जैन, सूरत	96019 59035

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. प्रेमलता लोढा जैन, नाथद्वारा	75973 47706
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. बरखा कोठारी जैन, सूरत	99049 30907

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. दर्शना तलेसरा जैन, विरार	80803 74525
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. प्रतिभा डांगी जैन, नवी मुंबई	98198 17719

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. प्रेमलता राजावत जैन, मुंबई	99878 54838
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. मनीषा कागरेचा जैन, मुंबई	98920 11619

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. शिल्पा पामेचा जैन, उदयपुर	94146 82462
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. नयना सिसोदिया जैन, उदयपुर	91662 11412

विहार धाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. ज्योति गांधी जैन, नारायणगाँव, पुणे	98811 23552
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. लीला खरवड़ जैन, कलवा मुम्ब्रा, ठाणे	99696 02393

जैन प्रकाश मासिक पत्रिका में प्रकाशनार्थ लेख भेजने हेतु आग्रह

व्हाट्सएप्प नं. - 90197 31906 / 70197 31906 अथवा ई-मेल - aissjc1906@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस - युवा शाखा - कार्यकाल वर्ष 2021-24

राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष :

श्री पद्म चन्द आच्छा जैन, बैंगलोर	99800 59421

निवर्तमान राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष :

श्री सागर सांखला जैन, पुणे	88880 90999

राष्ट्रीय वरिष्ठ युवा उपाध्यक्ष :

श्री कमलेश नाहर जैन, अहमदाबाद	93767 37111

राष्ट्रीय युवा उपाध्यक्ष :

श्री राकेश लुंकड़ जैन, बैंगलोर	99802 84908
श्री भरत कोठारी जैन, बैंगलोर	93796 77127
श्री विशाल बोरा जैन, सिकन्द्राबाद	95500 02225
श्री विमल खाबिया जैन, चेन्नई	99403 25649
श्री श्रेयांस जैन, लुधियाना	98557 99909
श्री अंश रविन्द्र जैन, पानीपत	98960 93861
श्री नितिन राय जैन, बड़ौत	99993 99382
श्री लोकेश धाकड़ जैन, उदयपुर	98280 50143
श्री विकास जैन, सूरत	93770 41606
श्री दिनेश हंसमुख बंबकी जैन, दापोली	94223 82620
श्री अंकित अनिल संचेती जैन, नासिक	83800 00208
श्री प्रितेश प्रदीप गादिया जैन, शिरूर	98229 82244
श्री वैभव तातेड़ जैन, इन्दौर	98264 81900
श्री सागर प्रकाश मुगदिया जैन, औरंगाबाद	90289 59000

राष्ट्रीय युवा मंत्री :

श्री मुकेश बाबेल जैन, बैंगलोर	98444 13227
श्री नवीन कावड़िया जैन, हैदराबाद	98851 85598
श्री आशीष रांका जैन, चेन्नई	98400 85846
श्री कुणाल जैन, लुधियाना	99140 14010
श्री सुमित जैन, करनाल	98124 75000
श्री पुनीत जैन, गाज़ियाबाद	95013 67207
श्री पानिल पोखरणा जैन, उदयपुर	97722 67444
श्री अश्विन गांग जैन, रतलाम	94245 29556
श्री कमलेश मादरेचा जैन, अहमदाबाद	98258 08580
श्री किशोर बाफना जैन, बैंगलोर	98865 02636
श्री लोकेश जैन, दिल्ली	98682 03098
श्री विपुल ढाबरिया जैन, इन्दौर	94250 64243
श्री केतन दुग्गड़ जैन, पुणे	98605 56838
श्री सुनील कुमार बम्ब जैन, बैंगलोर	98455 53001
श्री सुभाष डंक जैन, हुबली	99002 69151

राष्ट्रीय युवा प्रचार-प्रसार मंत्री :

श्री अजय धोका जैन, बैंगलोर	96118 28888
श्री नीलेश कांकरिया जैन, वाघोली	97672 94085
श्री विनय जैन, लुधियाना	95010 03864

राष्ट्रीय युवा संगठन मंत्री :

श्री राकेश बोहरा जैन, बैंगलोर	98443 27580
श्री मुकेश जैन, लुधियाना	98156 09170
श्री गौरव कोठारी जैन, वडगांवशेरी	90284 43181

राष्ट्रीय युवा महामंत्री :

श्री प्रमोद सिंघी जैन, बैंगलोर	98441 17766

राष्ट्रीय युवा कोषाध्यक्ष :

श्री मनोज सोलंकी जैन, बैंगलोर	98441 62930

राष्ट्रीय युवा सह-कोषाध्यक्ष :

श्री प्रवीण सिंघी जैन, बैंगलोर	98443 31009

राष्ट्रीय युवा कानूनी सलाहकार मंत्री :

श्री विशाल छल्लाणी जैन, बैंगलोर	98861 84743

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - प्रवीण बोहरा जैन, सोजत सिटी	98295 00211
राष्ट्रीय मंत्री - श्री विवेक जैन, रोहतक	95412 12000

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री विपुल जैन, दिल्ली	98117 40074
राष्ट्रीय मंत्री - श्री कपिल बडाला जैन, नाथद्वारा	94141 71246

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री विशाल बोहरा जैन, बैंगलोर	89041 41411
राष्ट्रीय मंत्री - श्री अभिषेक डुंगरवाल जैन, बैंगलोर	89705 60900

प्रांतीय युवा अध्यक्ष :

श्री विकास कोठारी जैन, कर्नाटक	98458 50155
श्री पवन कटारिया जैन, आन्ध्र-तेलंगाना	98491 59292
श्री आनंद बालेचा जैन, तमिलनाडु	98413 68579
श्री दीपांशु जैन, पंजाब	88470 11852
श्री प्रवेश जैन, हरियाणा	92116 00001
श्री सुविनित कुमार जैन, उत्तर प्रदेश	87917 03503
श्री दिनेश जैन, दिल्ली	99996 58350
श्री निर्मल सिंघवी जैन, राजस्थान	94141 63710
श्री संदीप गोखरु जैन, मध्य प्रदेश	94250 63976
श्री रोशन चोरड़िया जैन, महाराष्ट्र	94031 51617
श्री बाबूलाल बडोला जैन, मुंबई-पुणे	79776 61263
श्री मंजीत कोठारी जैन, गुजरात	93745 44138

प्रांतीय युवा महामंत्री :

श्री मनोज बोहरा जैन, कर्नाटक	98444 68490
श्री श्रेणिक राज डफारिया जैन, आन्ध्र-तेलंगाना	98490 95411
श्री मनीष रांका जैन, तमिलनाडु	98402 74685
श्री अभय जैन, पंजाब	99156 01005
श्री अतिमुक्त जैन, हरियाणा	94660 51369
श्री विकास जैन, उत्तर प्रदेश	93193 13717
श्री विनीत जैन, दिल्ली	98993 64620
श्री मनीष दाणी जैन, राजस्थान	94148 31484
श्री प्रदीप छल्लाणी जैन, मध्य प्रदेश	98260 87909
श्री पवन कटारिया जैन, महाराष्ट्र	92267 58479
श्री मनोज मेहता जैन, मुंबई-पुणे	93211 11837
श्री आशीष पोखरणा जैन, सूरत	93745 44139

सम्पादकीय

शीलपथ की एकनिष्ठ यात्री महासती श्री सुशीलकुमारी 'बेबीजी' महाराज

E-mail: ajvk1973@gmail.com

- अतुल जैन, राष्ट्रीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस

आदरणीय पाठकगण-आत्मप्रिय बंधुओं, सादर जयजिनेन्द्र!

पुण्य के पावन पथ पर कदम बढ़ाने का साहस हर किसी में नहीं होता, क्योंकि बहुत से लोग दान, धर्माराधन आदि तो करते हैं परन्तु आत्म-प्रशंसा पाने की इच्छा से उसे दूषित भी कर देते हैं, परन्तु कुछ धैर्यशील, साहसी आत्माओं में पुण्य का प्रकाश अपनी शुभता में प्रगट होता है। उन्हीं में एक नाम है- बाल-तपयोगिनी, स्वर्णसंयम-आराधिका, तप-संयमसिंहनी, उपप्रवर्तिनी महासती श्री सुशीलकुमारी 'बेबीजी म.सा., जिनकी तप, संयम, स्वाध्याय, ध्यानादि से परिपूर्ण जीवन शैली ने मानव जगत् को आत्मबोध की दिशा में अभिप्रेरित किया है।

पर्वतों के राजा हिमालय की गोद में बसा एक सुंदर शहर है-नैनीताल, जो झीलों और आसपास के आसमान छूते पर्वतों की वजह से पर्यटकों के विशेष आकर्षण का केंद्र है। इसी शहर में श्रीमान् फतेहचंदजी गोयल अपने परिवार के साथ रहते थे। आपकी धर्मपत्नी थी-श्रीमति वैकुंठीदेवीजी गोयल, जो धर्म के प्रति श्रद्धा से आप्लावित थे। इन्हीं दम्पति के यहाँ 11 जुलाई 1951 को एक कन्यारत्न का जन्म हुआ। परिवार में खुशियाँ मनाई गयी। धर्ममय वातावरण में धीरे-धीरे बालिका का पालन पोषण होने लगा। माता के श्रद्धापूरित स्नेह और पिता की प्रेमपूर्ण छाया में बालिका फूल की भांति खिलने लगी। समय आने पर बालिका के शिक्षण पर भी विशेष ध्यान दिया गया, बालिका ने भी विद्यार्जन में विशेष उत्साह दिखाकर अपना विद्या प्रेम बाल्यकाल से ही प्रगट कर दिया।

गोयलजी का परिवार संत-सतियों के प्रति श्रद्धालु था, दर्शन वंदन को जाते रहते थे, इसी बीच बालिका के मन में साध्वी जीवन के प्रति आकर्षण जगा, जो समय के साथ वैराग्य में बदल गया। लगभग 13 वर्ष की आयु में 16 फरवरी 1964 को संयम शिरोमणि श्री पन्नादेवीजी म.सा. की सुशिष्या संयम निष्ठ, दिव्य साधिका महासती श्री प्रियावतीजी म.सा. के श्रीचरणों में दीक्षा धारण कर साध्वी जीवन में प्रवेश किया। आपके साथ ही उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री सुभद्रमुनिजी म. सा., उत्तर भारतीय प्रवर्तिनी श्री सरिताजी म.सा., महासती श्री लीलाजी म.सा., स्नेहमूर्ति श्री स्नेहकुमारीजी म.सा. ने भी हरियाणा के जीन्द शहर में योगिराज श्री रामजीलालजी म.सा. के श्रीमुख से दीक्षा पाठ पढ़कर जीवन धन्य किया।

दीक्षा के बाद साध्वीजी मौनपूर्वक गुरु चरणों में स्वाध्याय में लीन हो गयीं, लौकिक शिक्षा B.A. तक पूरी की और आध्यात्मिक ज्ञानाराधना में बत्तीस आगमों का गहन अध्ययन, चिंतन-मनन के साथ ही आध्यात्मिक साहित्य का भी अध्ययन किया। चातुर्मास काल में अनेक प्रकार की तपस्या करके धर्माराधना करने का सत्साहस जगाया। संयम, स्वाध्याय, तप-जप से आपने अपने अंतर्जगत् को उज्ज्वल बनाने का महत् कार्य किया है, जो हम सबके लिए अनुकरणीय है।

समय-समय पर आपकी तीन शिष्यायें बनीं, तीन ही प्रशिष्याएं। गुरुणी और शिष्याओं संग आपने पंजाब, उत्तरप्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, राजस्थान में विहार कर जनता में धर्म जागरणा फैलाने का कार्य किया। आपकी सत्प्रेरणा से अनेकों के जीवन में धर्म-रुचि जगी, अनेकों ने कुव्यसनों से मुँह मोड़ा, अनेकों ने दान, शील, तप आदि में साहस दिखाया। आपकी प्रेरणा से ही शिव-विहार और नवीन शाहदरा में जैन स्थानक भवन का निर्माण श्रावकों द्वारा किया गया, जो अब धर्माराधना की पवित्र स्थली बने हुए हैं।

महासती श्री सुशीलकुमारी 'बेबीजी' म.सा. का जीवन साधुता का जीवन है, जिसमें स्वाध्याय का प्रकाश है, तप की ऊष्मा है, शांति एवं क्षमा की शीतलता है, मौन और ध्यान की गहराई है, पवित्रता की ऊंचाई है। संयमनिष्ठा में आप हिमालय की ही भांति सुदृढ़ हैं, जो आपका जन्म स्थान भी है, लगता है वहीं से आपने सुदृढ़ता, निर्भीकता और नियमबद्धता प्राप्त की है। समाज में धर्म जागृति के प्रति आपका विशेष उत्साह रहता है। आत्म-कल्याण के साथ ही समाज कल्याण के प्रति भी आपकी जागृत चेतना आपको साधुता की कसौटी पर सच्चा ठहराती है। 16 फरवरी को महासाध्वीजी का दीक्षा दिवस है, 58 वर्ष का सुदीर्घकाल संयमी जीवन में व्यतीत होना सौभाग्य की बात है। संयम, तप, जप, स्वाध्याय, मौन में बीता आपका जीवन धन्य है, जो समाज को धर्म का उचित मार्ग दिखा रहा है। प्रेरणापुंज के रूप में आपका जीवन हम सभी के लिए भी कल्याणकारक है। दीक्षा दिवस के शुभ अवसर पर मंगलमूर्ति जीवन के प्रति हार्दिक अभिनंदन के भाव व्यक्त करते हैं, आपका प्रेरणास्पद जीवन हम सभी को सद्धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता रहे, ऐसी भावना रखते हैं। ❖❖

अध्यक्षीय उद्गार

जैन धर्म में वैयावच्च तथा सेवा का महत्वपूर्ण स्थान

E-mail : rjachallani@gmail.com

– आनंदमल जवरीलाल छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष – जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

सम्माननीय पाठकगण, सादर जय जिनेन्द्र !

सेवा अपने आप में विनम्रता की निशानी है। सेवा के बारें में लोकोक्ति है – "करो सेवा, पावो मेवा!" संस्कृत में भी कहा है – "सेवा धर्मः परम गहनः, योगिनामपि गम्यते।"

सेवा एक सद्गुण है । सेवा से ही व्यक्ति उत्कृष्ट बनता है। चाहे वह किसी की भी सेवा हो, माता-पिता की हो या वृद्धजनों की अथवा सास-ससुर या बीमार-रूग्ण की, या अशक्त-दिव्यांग की हो या अन्य! इनकी की गई सेवा कभी निष्फल नहीं जाती, बशर्ते सेवा में निःस्वार्थभाव होना चाहिए। पारिवारिक सेवा में यत्किंचित् स्वार्थ रह सकता है कि प्रोपर्टी मिलेगी, उपहार मिलेगा, परन्तु जो जन परोपकार एवं जन-कल्याण की भावना से सेवा करते हैं, वे वास्तव में प्रशंसनीय है।

सेवा के अनेक रूप है, मातृ-पितृ सेवा, पारिवारिक-सेवा, संबन्धीजन की सेवा, रूग्ण सेवा, अतिथि सेवा, संत-सती सेवा, स्वधर्मी सेवा, धर्म सेवा, समाज सेवा इत्यादि। सेवा में विनयभाव व्यक्त होना चाहिये। सेवार्थी अगर अहंकार कर लेता है तो वह सेवा नगण्य हो जाती है। भरत चक्रवर्ती ने लाखों-लाख स्वधर्मियों की सेवा एवं विनय भक्ति की। सरल भाव एवं निःस्वार्थ भाव से सेवा की तो भरतजी का संसार परित हो गया। राजा कुमारपाल आदि ने सेवार्थ कई उदाहरण प्रस्तुत किये। उनके गुरु हेमचन्द्राचार्य थे, जो बहुत ही विद्वान् एवं प्रभावक आचार्य थे। सेवा कभी निष्फल नहीं जाती। बस सेवा का मूल्य मत आँको। गर्वरहित सेवा ही सच्ची सेवा है।

सभी धर्मों में सेवा का महत्व प्रतिपादित है। जैन धर्म में भी सेवा के अनेक सूक्त तथा उदाहरण मिलते हैं। शिष्य गुरु की सेवा में अहर्निश प्रतिपल सन्नद्ध रहता है। शिष्य के लिए "आणाए धम्मो" – गुरु आज्ञा ही धर्म है तथा "विणय जिण धम्म मूलो" – विनय ही धर्म का मूल है। सेवा एवं विनय ही साधक को संयम की ओर अग्रसर करते हैं। अहंकारी एवं घमण्ड में चूर साधक भी विराधक बन जाता है। सेवा से जी चुराता है तो वह गुरु सेवा या मुनि सेवा से वंचित हो जाता है। वैसे संयमी किसी प्रकार की सेवा का आदि नहीं होता तथापि वृद्धावस्था-रूग्णावस्था में उसे भी सेवा की आवश्यकता रहती है। भगवान महावीर से गौतम गणधर ने प्रश्न किया कि भंते ! साधक के लिये आपके दर्शन एवं देशना-श्रवण प्रथम है या रूग्ण-साधक की सेवा / परिचर्या ? भगवान ने कहा – साधक सर्वप्रथम रूग्ण साधक की सेवा-परिचर्या करें, मेरे दर्शन अथवा वाणी-श्रवण तत्पश्चात्।

सेवा के कल्पसूत्र में भी उदाहरण है। यहाँ तक कि जैन श्रमणों की सेवा की पराकाष्ठा का इन्द्र तक ने अपनी देव -सभा में प्रशंसा की, परन्तु एक देव परीक्षार्थ इहलोक आया, साधक सेवा में खरे उतरे तो वह देव अपनी गलती की क्षमा याचना करता हुआ उनके चरणों में नतमस्तक हो गया। कहने का तात्पर्य यह है कि सेवा के महत्व के आगे देवता भी नतमस्तक होते हैं। अरिहंत प्रभु की देशना सुनने, सेवा करने, सभी इन्द्र-इन्द्राणियाँ, अनेक देव-देवियों के साथ देवलोक से चलकर भूतल पर आते हैं तथा दर्शन कर देशना श्रवण कर अपने आपको धन्य-धन्य, कृतकृत्य मानते हैं।

केवल तीर्थंकर प्रभु अपने कर्म काटने हेतु किसी की सेवा का सहारा नहीं लेते। इन्द्र ने महावीर स्वामी से प्रार्थना भी की- "प्रभो! आप अनार्य देश में पधारेंगे, यातनाएं परीषह आदि उपस्थित होंगे। आप आदेश करें तो मैं आपके साथ रहूँ।" भगवान् ने स्पष्टतः मना कर दिया – ऐसा न हुआ है, न हो रहा है, न ही भविष्य में होगा, तीर्थंकर स्वयं ही अपने कर्म काटने में सक्षम होते हैं। सिद्ध प्रभु भी सेवा से परे हैं। वर्तमान में हम शेष तीन पदों की सेवा का लाभ अवश्यमेव ले सकते हैं।

हमारे सकल श्रीसंघ एवं जैन समाज – आचार्य, उपाध्याय, संत-सतीवृन्द की सेवा-वैयावच्च में अग्रणी रहते हैं। जैन कॉन्फ्रेंस, दिल्ली में भी सेवा-वैयावच्च का पृथकरूपेण प्रकल्प है, जो प्रतिमाह लाखों रूपये खर्च करके अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहा है तथापि आज वृद्ध, एकाकी, असहाय, रूग्ण संतों या सतियों के लिए स्थिरवास हेतु प्रत्येक महानगरों

/नगरों के जैन समाज को चाहिये कि वे भेदभाव एवं सम्प्रदाय रहित ऐसे केन्द्र स्थापित करें, जहाँ नए संत-सती, मुमुक्षु आगम-अध्ययन कर सकें तथा स्थिरवासी संत-सतियों की सेवा का लाभ भी ले सकें।

अभी हाल ही में एक रूग्ण मुनि के प्रति बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण प्रसंग सामने आया, संस्था ने सेवा से मुँह मोड़ते हुए आगे से आगे वाहन में उन्हें भेज दिया गया। ऐसा वाक्या श्रमण संघ के ही प्रवर्तक एवं उपप्रवर्तक की मौजूदगी में होता है तो यहाँ और भी प्रश्न चिन्ह लग जाता है कि हम संस्थाओं में अनुदान किसके लिये देते हैं? संस्थाओं का बैंक-बैलेंस बढ़ाने के लिए अथवा संत-सती की सेवा-सुश्रुषा के लिये?

किसी भी संत-सती की सेवा हेतु किसी एक व्यक्ति विशेष का तो पैसा लगता नहीं, फिर ऐसा क्यों किया गया? एक पदाधिकारी संत या अन्य संत ही रूग्ण संत की सेवा से मुँह मोड़ लें तो वह और भी अधिक दुभार्ग्यपूर्ण घटना हो जाती है। कोई भी संस्था किसी भी संत की प्रोपर्टी नहीं होती। वह समाज एवं दानदाताओं की ही धनराशि से बनी प्रोपर्टी होती है। जगह-जगह समाधियाँ बनाने से कुछ नहीं होगा। किसी रूग्ण साधक को साता एवं समाधि पहुँचाना ही वस्तुतः सच्ची समाधि है। इस विषयक जैन समाज एवं सभी संस्थाएं सोचें, आत्म-चिंतन करें। मैं यह बात कोई द्वेषवश नहीं अपितु यथार्थ है, इसलिये लिखकर समाज एवं श्रीसंघों को सचेत करना चाहता हूँ कि एकाकी रूग्ण, असहाय संत-सती की सेवा-परिचर्या करके भगवान महावीर के आदेश की परिपालना अवश्यमेव करें; क्योंकि जैन साधक के लिये श्रावक-श्राविका ही 'अम्मापियरो' होते हैं।

जैन कॉन्फ्रेंस, दिल्ली के सभी प्रकल्प सोत्साह सम्पन्न हो रहे हैं। सभी संत-सतीवृन्द की विहार यात्राएं निर्विघ्नरूपेण सानंद सम्पन्न हो रही है। युवावर्ग एवं श्रीसंघ सेवा-वैयावच्च, विहार-सेवा आदि का अवश्यमेव लाभ लेंवें।...

आप सभी स्वस्थ एवं प्रसन्न रहते, पारिवारिक दायित्वों एवं कर्तव्य का परिपालन करते हुए धर्माभिमुख हो, यही शुभकामना ! पुनः जय जिनेन्द्र ! ❖❖

गुरु भगवंतों के पुनीत दिवस 21 जनवरी से 20 फरवरी 2024 तक

मंगलमय जन्म दिवस		पुण्य स्मृति दिवस	
आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा.	24 जनवरी	मरुधर केसरी श्री मिश्रीमलजी म.सा.	24 जनवरी
उपाध्याय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.	31 जनवरी	आचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा.	27 जनवरी
आचार्य श्री रघुनाथजी म.सा.	14 फरवरी	आचार्य सम्राट् श्री आात्मरामजी म.सा.	04 फरवरी
घोर तपस्वी श्री निहालचंदजी म.सा.	14 फरवरी	खद्दरधारी श्री गणेशीलालजी म.सा.	09 फरवरी
सेवाश्रमण श्री प्रेमसुखजी म.सा.	14 फरवरी	प्रवर्तक श्री पन्नालालजी म.सा.	14 फरवरी
श्री सुमनमुनिजी म.सा.	14 फरवरी	आचार्य श्री रघुनाथजी म.सा.	20 फरवरी
उपाध्याय श्री विशालमुनिजी म.सा.	16 फरवरी		

आत्मोद्धारक दीक्षा दिवस

युवाचार्य प्रवर श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.	03 फरवरी
आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा.	11 फरवरी
आचार्य श्री स्वामीदासजी म.सा.	13 फरवरी
आचार्य श्री अजरामरजी म.सा.	13 फरवरी
आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा.	14 फरवरी
साधकरत्न श्री फूलचंदजी म.सा.	14 फरवरी

हम सभी गुरु भगवंतों के पुनीत दिवस तप-त्याग एवं सामायिक आराधन, धर्माचरण, आयम्बिल-एकासना दिवस के रूप में मनाकर गुरु भगवंतों के श्रीचरणों में अपनी श्रद्धा भक्ति का परिचय प्रस्तुत करते हुए उनके द्वारा बताए गए मार्ग का अनुसरण कर स्वयं के जीवन को सुरभित करें ।

हानिकारक प्रथाओं को तोड़ना

- आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.

प्राचीन काल में एक प्रथा प्रचलित थी उत्तराधिकारीविहीन सम्पत्ति का स्वामी राजा होता था और स्त्री का (चाहे वह पत्नी, माँ अथवा बहन कोई भी क्यों न हो) पुरुष (पति, पिता, भाई) की संपत्ति में कोई अधिकार नहीं माना जाता था। इस प्रथा का आधार राजाओं की स्वार्थभावना थी क्योंकि इसके कारण उनका राजकोष भरता था। लेकिन यह प्रथा व्यभिचार, कलह का कारण बन गई तथा इसने निःसंतान स्त्रियों की दशा बहुत ही पतित कर दी।

जैन धर्म में प्रारम्भ से ही इस नीति के विरोधी स्वर मिलते हैं। जब भृगु पुरोहित अपनी पत्नी और दोनों पुत्रों के साथ श्रामणी दीक्षा ग्रहण करने को तत्पर हो जाता है, तब इस परम्परा के अनुसार राजा इषुकार के राजकोष में जमा करने के लिए पुरोहित का सारा धन लाया जाता है। उस समय रानी कमलावती इसे वमन किया हुआ धन बताकर इसकी निन्दा करती है।

इस निन्दा से भी राजाओं की स्वार्थवृत्ति के कारण यह कुत्सित परम्परा बन्द नहीं हुई अपितु व्यभिचार, कलह आदि की वृद्धि करती हुई वृद्धिंगत होती रही। स्थिति बहुत ही भयंकर हो गई। तब एक घटना के फलस्वरूप आचार्य हेमचन्द्र ने व्यवस्था दी-

पति यदि पतित हो गया हो, कहीं चला गया हो, विक्षिप्त हो गया हो, प्रव्रजित हो गया हो अथवा मृत्यु को प्राप्त हो गया हो तो उसकी संपत्ति की अधिकारिणी उसकी स्त्री होती है।

1. एक वृद्धा सेठानी ग्राम सीमा पर सोते हुए कयवन्ना शाह को चाकरों द्वारा सिर्फ इसलिए उठवा ले आती है कि उसका पुत्र निःसंतान ही मर गया है और कयवन्ना उसकी चार पुत्रवधुओं से पुत्र उत्पन्न करे, जिससे उसके धन को राजा न हड़प सके। (पूरी घटना के लिए देखिए-कथा कोष प्रकरण, धर्मोपदेश विवरण तथा जैन कथाएं भाग 46 उपाध्याय श्री पुष्करमुनिजी म.सा. कृत)

2. दो विधवा स्त्रियाँ एक पुत्र के लिए लड़ती हुई आई और एक शिशु को अपना-अपना पुत्र बताने लगी। इस कलह का कारण भी यही दुर्नीतिपूर्ण परम्परा थी। इसका न्याय भगवान सुमतिनाथ की माता सुमंगला ने किया।

आगे उन्होंने कहा कि उस स्त्री के पुत्र हो अथवा न हो, इसका उस के संपत्ति के स्वामित्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

इस व्यवस्था के मूल में घटना इस प्रकार थी -

एक बार पाटणनरेश कुमारपाल ने रात्रि के समय किसी स्त्री का रुदन स्वर सुना। वे उसके पास पहुंचे। उस समय वह आत्महत्या करने को तैयार हो रही थी। कुमारपाल ने रुदन और आत्महत्या का कारण पूछा तो उस स्त्री ने बताया- मेरे पति मुझे निपुत्री ही छोड़कर स्वर्ग पधार गये हैं। देश की परम्परा के अनुसार प्रातःकाल ही मेरा सारा धन राजकोष में जमा कर दिया जायेगा और मैं दाने-दाने को मोहताज होकर दर-दर भटकती फिरूँगी।

इस बात को सुनकर कुमारपाल का हृदय द्रवित हो गया। उन्हें इस बीभत्स प्रथा से घृणा हो गई जो एक कुलीन स्त्री को इतना पतित व विवश कर दे।

कुमारपाल ने आचार्य हेमचन्द्र के समक्ष अपने मन की उलझन रखी और इसका उचित समाधान चाहा। आचार्यश्री के परामर्श पर राजा ने सभासदों, मंत्रियों, कोषाध्यक्ष के प्रबल विरोध के बावजूद भी इस प्रथा को बन्द कर दिया, और दृढ़ स्वर में कह दिया - स्त्रियों को आत्महत्या पर विवश कर देने वाली इस कुत्सित प्रथा से प्राप्त धन मुझे किसी कीमत पर नहीं चाहिए।

इस व्यवस्था के बाद भी इस कुत्सित प्रथा का अस्तित्व बना रहा जो लाई डलहौजी की हड़प नीति के रूप में सामने आया। उसने भी, जो राजा निःपुत्री मर गये उनके राज्य को कम्पनी शासन के अन्तर्गत लेने का कुचक्र चलाया, यहाँ तक कि हजारों वर्षों से प्रचलित और मान्यता प्राप्त दत्तक पुत्रों को भी उत्तराधिकारी स्वीकार करने से इन्कार कर दिया।

अपनी इस हड़प नीति के अनुसार कम्पनी सरकार ने झांसी आदि अनेक राज्यों को हड़प लिया। यह प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम का एक प्रमुख कारण सिद्ध हुआ। इस प्रकार यह प्रथा एक भयंकर दुर्नीति के रूप में समाज और राज्य तथा व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जीवन के लिए व्यभिचार, क्लेश, कलह, संघर्ष का कारण बनी। विवेक के आधार पर निर्णय लेने वाले नैतिक व्यक्ति को ऐसी हानिकारक रूढ़ियों को तोड़ने का निश्चय करना पड़ता है और उसका यह निश्चय पूर्ण रूप से नैतिक होता है। ❖❖

सुख का वास्तविक पता

- आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

संसार में विचरण करने वाला प्रत्येक जीव सुख चाहता है और वह जन्म से मृत्यु तक उस सुख की खोज में लगा रहता है, किन्तु उसे सुख नहीं मिलता है, वह सुखाभास में ही तृप्त हो जाता है। उस सुखाभास में उसे जो व्यक्ति, वस्तु, स्थान निमित्त बनते है, उन्हें हासिल करने में, उन्हें खुश रखने में वह पुरुषार्थ करता है। कुछ वस्तुएं हासिल करता है और उसके मन में नयी कामनाए, इच्छाएं पैदा हो जाती है और बाद में वह उन कामनाओं की पूर्ति में लग जाता है। एक कामना की पूर्ति होती है कुछ क्षण के लिए सुखाभास मिलता है और नयी कामनाए उत्पन्न हो जाती है। इसीलिए प्रभु ने फरमाया है -

इच्छा हु आगाससमा अनंतिया

इच्छाए आकाश के समान अनंत है। एक व्यक्ति को सोने चाँदी के पहाड़ भी दे दो तो उसकी इच्छाएं पूर्ण नहीं हो सकती है। दशवैकालिक सूत्र में सुखी होने की विधि बताई है -

आयावयाही चय सोग मल्लं,
कामे कमाहिं कमियं खू दुःखं ।
छिन्दाहि दोसं, विणएज्ज रागं,
एवं सुही होहीसी संपराए ।।

दुःख का कारण कामनाए है, द्वेष का छेदन करो राग को समाप्त करो, तो तुम ईसी समय सुखी हो सकते हो।

अरिहंत परमात्मा सीमन्धर स्वामी फरमाते है - सुखी होने का वास्तविक पता ही जीव को मालूम नहीं होने से वह अनादिकाल से सुख के लिए भटक रहा है और उसे सुख नहीं मिल रहा है। वह सुख पुद्गल में ढूँढ रहा है। पुद्गल अर्थात वस्तुओं में, भौतिक सुख सुविधओं में, मनोरंजन में, इंद्रियों के विषय पूर्ण कर सुखी होना चाहता है। वह क्षणिक सुखी होता है और लम्बा काल तुक दुःखी रहता है। क्योंकि जहाँ सुख है वहाँ वह सुख खोज ही नहीं रहा है। सुखी होने के लिए - सुख का सही स्थान मालूम होना चाहिए।

अनंत सिद्ध हो गये, अनेक केवली है किसी ने नहीं बताया की सुख पुद्गल में मिलेगा। किसी ने नहीं बताया कि सुख व्यवहार के रिश्ते पालने में मिलेगा, मनोरंजन में मिलेगा। सुख के सही पते के लिए सबसे पहले अज्ञान को छोड़कर ज्ञान में आना होगा वह ज्ञान है भेद-विज्ञान। शरीर व आत्मा का भेद। शरीर-भिन्न है व आत्मा भिन्न है।

सुख का पता जीव है, देह नहीं। जीव में अनंत सुख है। देह की आवश्यकता व इच्छा की पूर्ति से साता मिलती है सुख नहीं। सुख जीव को जानकर उस पर श्रद्धा करने से, उसने ठहरने से, मन के पार जाकर आत्मा में जो स्थित हुए हैं, होते है, होंगे, वे अनंत सुख का अनुभव करते है। उसके लिए उन्हें किसी भी प्रकार के व्यक्ति, वस्तु, स्थान की आवश्यकता नहीं।

केवल जीव का, आत्मा का ध्यान करना है। मन, वचन, काया को गौण कर इनसे पार आत्मा में स्थित होने वाले वर्तमान में सुख, शांति व आनंद का अनुभव करते हैं, कर रहे है व करेंगे। जिसे ये विधि सीखनी हो वे आत्म-ध्यान से भेद-विज्ञान का ज्ञान प्राप्त कर जीवन को प्रतिपल प्रतिक्षण सुख शांति आनंद से भर सकते हैं। ये अनंत सिद्धों का, केवलियों का अनुभव है आप और हम सब अनुभव करें जीवन को सफल बनायें। ❖❖

सरलता का पुरस्कार

- युवाचार्य पू. श्री मिश्रीमलजी म.सा. 'मधुकर'

भगवान् ऋषभदेव इस युग (अवसर्पिणी काल) के प्रथम तीर्थंकर हुये। उनके ज्येष्ठ पुत्र भरत चक्रवर्ती थे। चक्रवर्ती भरत के अनेक पुत्रों में एक विशिष्ट तेजस्वी पुत्र था मरीचि।

भगवान् ऋषभदेव का प्रथम समवसरण अयोध्या में रचा गया। उनकी दिव्य देशना सुनने के लिए मानव ही क्या, स्वर्ग से असंख्य-असंख्य देव भी विनीता नगरी में एकत्रित हो रहे थे। मरीचि कुमार भी उस समय समवरण में पहुंचा। प्रभु का धर्मोपदेश सुनकर उसका मन प्रतिबुद्ध हो उठा। पिता की अनुमति लेकर वह मुनि बन गया। मरीचि बड़ा तीक्ष्णबुद्धि वाला था, शीघ्र ही वह अनेक शास्त्रों का रहस्यवेत्ता बन गया। प्रारम्भ में वह निस्पृह व कठोर साधना में रुचि रखता था। किन्तु धीरे-धीरे शरीर के प्रति ममत्व जगने लगा, कष्टों से वह घबराने लगा। एक बार भयंकर ग्रीष्मऋतु में गर्मी व प्यास आदि परीषहों से वह व्याकुल हो उठा। उसे लगा - 'उसका सुकुमार शरीर इन दारुण कष्टों को सहने में असमर्थ है।' वह असमंजस में पड़ गया - इधर नाग, उधर नदी। कठोर संयम उससे पल नहीं सकता, यदि छोड़कर गृहस्थ जीवन में पुनः जाता है तो किस मुंह से? आखिर उसने एक रास्ता निकाला। अपने पूर्व जीवन के नियमों में उसने परिवर्तन किया-कंद-मूल खाना, नदि आदि का कच्चा जल पीना, जूते पहनना, जटा धारण करना, रंगीन वस्त्र पहनना, स्नान करना आदि। इस प्रकार वेष एवं नियमों में परिवर्तन कर मरीचि ने साधना का एक सरल मार्ग खोज निकाला। कठोर त्याग और अनियमित भोग के दोनों किनारों के बीच वह एक नवीन मार्ग पर चलने लगा। जैन-परम्परा के अनुसार परिव्राजक परम्परा का आदि पुरुष यही मरीचि था। मरीचि के नवीन वेष व सरल साधनामार्ग को देखकर लोग उससे पूछने लगे-'क्या यह आपका कोई नवीन धर्म है?' मरीचि का हृदय सरल था, वह अपनी दुर्बलता को साधना के आडम्बर में छिपाना नहीं चाहता था। वह लोगों से कहता - 'धर्म तो वही है जो भगवान् ऋषभदेव ने बताया है, मैं उस कठिन साधना पथ का अनुसरण नहीं कर सकता, इसलिए ऐसा मध्यमार्ग निकाला है।'

मरीचि की सरलता ने लोगों के मन में सद्भाव व आदर प्राप्त कर लिया। वह प्रभु ऋषभदेव के साथ-साथ रहने लगा।

एक बार भगवान् ऋषभदेव अयोध्या नगरी में आये। उपदेश सुनने के बाद चक्रवर्ती भरत ने भगवान् से एक प्रश्न पूछा-भंते! आपने जो अनन्त ऐश्वर्य-सम्पन्न जिनदशा व तीर्थंकर पद प्राप्त किया है, क्या भविष्य में ऐसा महान् पद और आध्यात्मिक ऐश्वर्य प्राप्त करने वाला भाग्यशाली आत्मा इस सभा में और भी कोई है? भगवान् ने भरत को संबोधित करके कहा - 'भरत! वह देखो, द्वार पर जो नवीन वेषभूषा धारण किये संन्यासी खड़ा है, जो लोगों को प्रेरित कर इस समवसरण की ओर भेज रहा है, वह तुम्हारा पुत्र मरीचि है। वह श्रमण धर्म के कठोर नियमों को पालन करने में असमर्थ है। किन्तु अपनी असमर्थता को, दुर्बलता को सरलता के साथ स्वीकार करता है और सत्य की ओर लोगों को प्रेरित करता है, वह मरीचि इसी भरत क्षेत्र में वर्धमान नाम का अंतिम तीर्थंकर होगा और उसी बीच वह त्रिपृष्ठ नाम का प्रथम वासुदेव तथा प्रियमित्र नाम का चक्रवर्ती भी होगा।'

मरीचि के सम्बंध में यह भविष्यवाणी सुनकर भरत के हृदय में एक सहज उल्लास जग पड़ा। यह शुभ संवाद सुनाने के लिए वे मरीचि के पास आये और भावावेग में आदरपूर्वक बोले-'मरीचि! तुम धन्य हो गये। भगवान् ऋषभदेव के कथनानुसार तुम इस भरत क्षेत्र में वर्धमान नाम के अंतिम तीर्थंकर बनोगे और उससे पहले वासुदेव और चक्रवर्ती का पद भी प्राप्त करोगे। सचमुच तुम्हारा भविष्य बड़ा गौरवमय है तीन-तीन श्रेष्ठ पद प्राप्त करना वास्तव में ही महान् साधना का फल है' - हर्षावेश में चक्रवर्ती ने मरीचि को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया और उसके भावी तीर्थंकरत्व के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए वंदना की।

यह शुभ संवाद सुनते ही मरीचि खुशी के आवेग में बांसों उछला। ताली पीटता हुआ वह क्षण-भर अपना आपा भूल गया और उन्मत्त की भांति नाचने लगा। भुजाएं ऊंची उठाकर वह तार स्वर में बोला - 'अहा! मैं महान् हूं। मेरा कुल महान् है। मेरे पितामह पहले तीर्थंकर! मेरे पिता पहले चक्रवर्ती और मैं, मैं पहला वासुदेव बनूंगा। फिर चक्रवर्ती सम्राट् बनूंगा और फिर अंतिम तीर्थंकर मैं बनूंगा। आज संसार में है कोई मेरे समान भाग्यशाली! गौरवशाली! महान्!!' भुजाएं बार-बार ऊपर-नीचे करता हुआ, तालियां पीटता हुआ, मरीचि बहुत देर तक हर्ष में नाचता रहा।

साधना में अहंकार जहर है, भले ही वह किसी भी विषय का हो। अपने कुल व अपने भाग्य का अति अहंकार आ जाने से मरीचि ने सचमुच में अपने आप को नीचे गिरा दिया। सहज साधना से प्राप्त उपलब्धियां अहंकार से ग्रस्त हो गई। भगवान् ऋषभदेव के परिनिर्वाण के पश्चात् भी मरीचि उपदेश देकर लोगों को श्रमणों के पास भेजता रहा। बीमारी एवं बुढ़ापे में जब स्वयं उसे सेवा की अपेक्षा हुई तो उसने कपिल नाम के एक राजकुमार को अपना शिष्य बनाया।

पत्थर का स्वभाव है डूबना और लकड़ी का स्वभाव है तैरना

- श्रमण संघीय प्रवर्तक पू. श्री विजयमुनिजी म.सा.

पत्थर का स्वभाव है डूबना और लकड़ी का स्वभाव है तैरना। पत्थर चाहे छोटा हो या बड़ा हो वह डूबेगा, लेकिन लकड़ी कितनी भी बड़ी हो तैरेगी ही। मानव जन्म में आया हुआ जीव हल्का भी तिरेगा और भारी भी तिरेगा। भगवन फरमाते है कि गुणों से भारी और कर्मों से हलके जीव स्वयं तिरते है और दूसरों को भी तारते है, इसलिए हमें चिंतन करना चाहिए और आध्यात्म के मार्ग पर चलना चाहिए।

चिंतन करना हमारा दायित्व है, चिंतन के माध्यम से हम धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक कर्तव्यों का निर्वाह करने में निपुण होंगे। दो शब्द है तीर्थ और तीर्थंकर दोनों में बड़ा अंतर है, तीर्थंकर से तीर्थ बनता है, तीर्थ एक स्थान है जिसके दर्शन करने से आत्मा हर्षित होती है। आत्मिक शांति मिलती है, लेकिन तीर्थंकर की आराधना भक्ति-स्तुति करने से उनके बताये मार्ग पर चलने से जीवन सार्थक हो जाता है।

हर इन्सान का कर्तव्य है व्यवहारिक कर्ज तो किसी भी तरह चुक जायेगा, लेकिन कर्मों का कर्जा कब चुकाओगे। आत्म निर्जरा के लिये पुरूषार्थ के कदमों को आगे बढ़ाना है। तीर्थंकर केवल राह बताते है, चलना स्वयं को पड़ेगा। अपने आप को हल्का करने के लिये क्रोध, मान, माया, लोभ को त्याग कर मुक्ति के मार्ग पर आगे बढ़ो।

मनुष्य जन्म अनमोल है यह बहुत कठिनाई से प्राप्त होता है आप सभी कहते है खाली हाथ आये थे खाली हाथ जायेंगे यह गलत है। हम सभी अपने कर्मों के साथ आये थे और कर्मों के साथ ही जायेंगे। आत्मा ही कर्म का करती है। हमें परमात्मा के दिखाए मार्ग पर चलना है, हमें चिंतन करना है कि हमें किस मार्ग पर चलना है। ❖❖

गजब की आत्मशक्ति के धारक थे तीर्थंकर प्रभु महावीर

- उप-प्रवर्तिनी साध्वी पू. डॉ. दर्शनप्रभाजी म.सा.

इस अवसर्पिणी काल में जैनों के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर हुए। वे सर्वज्ञ, वीतराग, मंगलमय हैं। अभय, वीरत्व, अहिंसा, अनेकांतवाद, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह के प्रतीक भगवान महावीर का नाम लेते ही व्यक्ति नहीं, सत्य का आभास होने लगता है। वे क्षत्रिय कुंड के राजा सिद्धार्थ के पुत्र थे, महारानी त्रिशला उनकी माता थी। जब से शिशु माँ के गर्भ में आया, तब से राज्य चाँदी, स्वर्ण, धन-धान्य, यश और कीर्ति में वृद्धि प्राप्त करने लगा। इसलिए जन्म होते ही उनका नाम वर्धमान रखा गया। महावीर का लालन-पालन उच्च एवं पवित्र संस्कारों के भव्य वातावरण में हुआ। उनका तन सुगठित था। युवा होने पर माता-पिता की आज्ञानुसार उन्होंने राजकुमारी यशोदा से विवाह किया। उनकी प्रियदर्शना नामक पुत्री थी।

30 वर्ष की आयु में मिगसर सुदी 10 को भगवान महावीर ने शाल वृक्ष के नीचे पंच मुष्टि लुंचन कर दीक्षा अंगीकार की। दीक्षा लेते ही उन्हें मनःपर्वज्ञ ज्ञान हुआ। दीक्षा लेते ही उन्होंने अभिग्रह धारण किया कि आज से साढ़े बारह वर्ष पर्यंत, जब तक केवलज्ञान उत्पन्न न हो, तब तक में देह की ममता को छोड़कर रहूँगा। इसी बीच में देव, मानव या तीर्यंच जीवों की ओर से जो भी उपसर्ग कष्ट उत्पन्न होंगे, उनको समतापूर्वक, सम्यक् रूप में सहन करुंगा।

केवलज्ञान होने के बाद भी उन्हें उपसर्ग का सामना करना पड़ा। अपने साधक जीवन के 4515 दिनों में प्रभु ने 359 दिन निर्जल तपश्चर्या की। उपवास का मतलब होता है, अपनी आत्मा में रमण करना। एक व्यक्ति अपनी आत्मा में इतना लीन होता है कि उसे शरीर का पता ही नहीं है। महावीर चार-चार महीने उपवास करते हैं, वह इस बात का सबूत हैं कि उनके पास कितनी आत्मिक शक्ति थी। प्रभु महावीर ने सीधी-सी बात कही है - चलो तो विवेक पूर्वक, बैठो तो विवेक पूर्वक, भोजन करो तो विवेक पूर्वक यानि तुम जो भी कार्य करो, उसे विवेक पूर्वक किए जाओ। धीरे-धीरे तुम्हारा जीवन विवेक का दीप स्तंभ बन जायेगा। ❖❖

ज्ञान बढ़ाओ - प्रश्नमंच

- श्रमण संघीय मंत्री पू. श्री आशीषमुनिजी म.सा.

प्र.1. मंत्र किसे कहते हैं?

उ. जिसमें अक्षर थोड़े और भाव बहुत हों, जिसका जाप, मनन, चिंतन दुःखों से रक्षा करता हो, मनोरथ पूर्ण करता हो उसे मंत्र कहते हैं।

प्र.2. मंगल किसे कहते हैं?

उ. 'म' का अर्थ है पाप और 'गल' का अर्थ है गलाने वाला, अर्थात् पापों को गलाने वाला, आनन्ददायक को मंगल कहते हैं।

प्र.3. प्रतिक्रमण किसे कहते हैं?

उ. पापों से पीछे हटना, पापों की आलोचना करना, अशुभ योग से शुभयोग में आना और व्रतों में लगे अतिचारों से लौटकर पुनः आचार (व्रतों) में आना उसे प्रतिक्रमण कहते हैं।

प्र.4. प्रतिक्रमण का दूसरा नाम क्या है?

उ. आवश्यक सूत्र।

प्र.5. आवश्यक सूत्र किसे कहते हैं?

उ. जो सूत्र साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका को जानना और अवश्य करना चाहिये, उसे आवश्यक सूत्र कहते हैं।

प्र.6. सूत्र किसे कहते हैं?

उ. भगवान की वाणी को गणधरों द्वारा सार रूप में रचा जाये, जिसमें शब्द थोड़े हो पर सागर के समान भाव समाहित हो, उसे सूत्र कहते हैं।

प्र.7. आनुपूर्वी पढ़ने से क्या लाभ?

उ. आनुपूर्वी पढ़ने से मन स्थिर होता है और छः महीने के उपवास का फल मिलता है।

प्र.8. घाती कर्म किसे कहते हैं?

उ. जो कर्म आत्मा के गुणों का घात करते हैं, (आच्छादित करते हैं) उन्हें घाती कर्म कहते हैं। सूर्य को बादल की तरह घाती कर्म आत्मा के गुणों को ढ़कते हैं। शराब पीने पर आदमी जैसे बेभान होता है उसी तरह घाती कर्म (ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय कर्म) आत्मा को बेभान कर देते हैं।

प्र.9. नवकारसी किसे कहते हैं?

उ. सूर्योदय से लेकर 48 मिनट तक कुछ भी खाना, पीना नहीं। दातुन आदि भी न करके पच्चक्खान में रहने को नवकारसी कहते हैं। नवकारसी तप करने से 100 वर्ष के अशुभ कर्म क्षय होते हैं।

प्र.10. पोरसी किसे कहते हैं?

उ. सूर्योदय से सूर्यास्त तक के दिन को चार भागों में बाँटकर उसके पहले भाग में कुछ खाना-पीना नहीं। (चारों आहार का त्याग करने को) पोरसी कहते हैं, पोरसी करने से 1000 वर्ष के अशुभ कर्म क्षय होते हैं।

प्र.11. एकासना किसे कहते हैं?

उ. दिन में केवल एक ही समय भोजन करना, भोजन में एक ही जगह पर बैठकर चावल, दाल, रोटी, दूध, दही, चाय आदि ले सकते हैं। गर्म पानी या धोवन पानी दिन में आवश्यकता के अनुसार 2-4 बार भी ले सकते हैं। एकासना करने से 10 लाख वर्ष के अशुभकर्म क्षय होते हैं।

प्र.12. आयंबिल किसे कहते हैं?

उ. दिन में केवल एक समय रुखा-सुखा निरस (जिसमें नमक, मीर्च, मसाला, चिकनाहट आदि न हो) भोजन करना। आयंबिल करने से 100 करोड़ वर्ष के अशुभ कर्म क्षय होते हैं।

प्र.13. आदमी बड़ा कितने प्रकार से होता है?

उ. दो प्रकार से उम्र से और गुणों से, उम्र से तो कोई भी बड़ा हो सकता है, पर जो गुणों से बड़ा होता है, वास्तव में बड़ा वही कहलाता है।

प्र.14. जैन धर्म के संस्थापक कौन हैं?

उ. आजकल विद्यालय में पढ़ाया जाता है कि भगवान महावीर जैन धर्म के संस्थापक (प्रर्वतक) हैं पर वास्तव में सच्चाई यह है कि महावीर स्वामी से पहले 23 तीर्थकर हुए हैं, उनमें सबसे पहले तीर्थकर भगवान ऋषभदेव से ही इस अवत्सर्पिणी काल में धर्म का प्रारंभ हुआ है। उससे पहले भी ऐसी अनंत चौबिसियां हुई । धर्म अनादि है, परन्तु धर्मचक्र

का पुनः प्रवर्तन तीर्थंकर ही करते हैं । अतः इस अवत्सर्पिणी काल के जैन धर्म के प्रर्वतक भगवान ऋषभदेवजी हैं। सुप्रसिद्ध दार्शनिक डॉ. बलदेव उपाध्याय, भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णनू जैसे विद्वानों ने भी भगवान ऋषभदेव को ही जैन धर्म का आदि प्रर्वतक बताया है।

प्र.15. किसी चीज का प्रत्याख्यान (त्याग) करने से क्या लाभ?

उ. प्रत्याख्यान करने से हमारे आत्मा में आने वाले पाप कर्म रुक जाते हैं। आत्मा पवित्र एवं हल्की हो जाती है, जैसे बहुत तेज धूलभरी आँधी चल रही हो और हमारे मकान के दरवाजे खुले ही हो, तो मकान में धूल, कूड़ा, कचरा भर जाएगा। यदि दरवाजे व खिड़कियों को बन्द कर दिया जाता है, तो मकान के अन्दर कचरा नहीं भरेगा। इसी तरह पच्चक्खाण करने से हमारी आत्मा में पाप रूपी कूड़ा नहीं आ पाएगा।

प्र.16. सामायिक करने से क्या लाभ होता है?

उ. (1) समभाव की प्राप्ति होती है। (2) 18 पाप छूट जाते हैं। (3) दो घड़ी साधु का सा जीवन व्यतीत होता है। (4) जीवों की दया व रक्षा के भाव बढ़ते हैं। (5) जिनवाणी को सुनने-समझने का मौका मिलता है। (6) स्वाध्याय करने का अवसर मिलता है। (7) नये कर्मों का बंध नहीं होता, पुराने कर्म झड़ जाते हैं। (8) कषायों की उपशान्ति से जीवन शान्तिमय बनता है।

प्र.17. गोचरी किसे कहते हैं?

उ. जैसे गाय घास के मैदान में जाकर थोड़ी-थोड़ी घास चरती है, घास को भी अधिक नुकसान नहीं पहुँचाती और अपना पेट भी भर लेती है, इसी तरह स्व और पर आत्मा के कल्याण चाहने वाले साधकगण गृहस्थों के घर में जाकर थोड़ा-थोड़ा भोजन ग्रहण करते हैं। यदि गृहस्थी एक ही घर में साधु के लिए पूरा भोजन देना चाहें तो नहीं लेते, गृहस्थी ने अपने लिए जो भोजन बनाया, उसमें से एक या दो रोटी (वह भी परिवार के सदस्यों को देखकर) ग्रहण करते हैं, उसे गोचरी कहते हैं।

प्र.18. मधुकरी किसे कहते हैं?

उ. जैसे भँवरा एक फूल से दूसरे फूल में, दूसरे फूल से तीसरे में विचरण करता है और फूल में रहे हुए शहद कणों को ग्रहण करता है, वह फूल को भी नुकसान नहीं पहुँचाता और अपना पेट भी भर लेता है। इसी तरह संयमी गृहस्थियों के घर से थोड़ा-थोड़ा भोजन लेकर संयम का निर्वाह करते हैं, गृहस्थियों को भी किसी तरह कष्ट नहीं पहुँचाते हैं, उसे मधुकरी कहते हैं।

प्र. 19. श्रावक किसे कहते हैं?

उ. श्रावक शब्द तीन अक्षरों से मिल कर बना है। 'श्रा' का अर्थ है जिनेन्द्र भगवान की वाणी को श्रवण करने वाला, 'व' का अर्थ है विवेकवान, हर कार्य विवेक पूर्वक करने वाला, 'क' का अर्थ है क्रियावान, शुद्ध आचार का पालन करने वाला श्रावक कहलाता है।

प्र.20. संसार में कितने मंगल हैं?

उ. संसार में अनेक मंगल माने जाते हैं। किन्तु वास्तव में मंगल चार ही हैं। (1) अरिहंत (2) सिद्ध (3) साधु (4) जिनेन्द्र भगवान द्वारा बतलाया धर्म। ये चार ही संसार में उत्तम हैं।

प्र.21. ज्ञान बढ़ाने के उपाय क्या हैं?

उ. (1) परिश्रम करने से (2) विनय करने से (3) ज्ञानी की संगति करने से (4) इन्द्रियों पर संयम रखने से (5) कम बोलने से (6) उनोदरी तप करने से (7) ज्ञानी के पास पढ़ने से (8) कपट रहित तप करने से ज्ञान बढ़ता है।

प्र.22. ज्ञान घटने के कारण?

उ. (1) आलस करने से (2) निन्दा करने से (3) कलह करने से (4) शोक करने से (5) शरीर व परिवार पर मोह करने से (6) क्रोध, अभिमान करने से (7) रोग होने से ज्ञान घटता है।

प्र.23. नरक गति में जाने के चार कारण कौन से हैं?

उ. (1) महाआरंभ- अनगिनत जीवों की हिंसा करने से। (2) महापरिग्रह- धन-दौलत जोड़ने के लिए बहुत अधिक आसक्ति करने से (3) पंचेन्द्रिय जीवों की हिंसा करने से (4) मद्य-मांस का भोजन करने से।

प्र. 24. तिर्यंच गति में जाने के चार कारण कौन

से हैं?

उ. (1) माया करने से (छल-कपट) (2) माया में माया (छल-कपट के ऊपर छल-कपट) करने से (3) झूठ बोलने से (4) खोटा तोल खोटा माप करने से।

प्र.25. मनुष्य गति में जाने के चार कारण कौन से हैं?

उ. (1) स्वभाव से सरल (2) प्रकृति से विनम्र (3) प्राणियों के प्रति दया भाव से (4) ईर्ष्या न करने से।

प्र.26. देव गति में जाने के चार कारण कौन से हैं?

उ. (1) सराग संयम (साधु धर्म का पालन करने से) (2) संयमासंयम (श्रावक धर्म) का पालन करने से (3) अकाम निर्जरा (न चाहते हुए भी कष्ट सहन करने से) (4) अज्ञान तप करने से (पंचाग्नितप, काटों में सोना, पानी में खड़े रहना आदि)

प्र.27. किस के समान क्या नहीं?

उ. (1) क्रोध के समान विष नहीं (2) क्षमा के समान अमृत नहीं (3) लोभ के समान दुःख नहीं (4) सन्तोष के समान सुख नहीं (5) पाप के समान वैरी नहीं (6) धर्म के समान मित्र नहीं (7) कुशील के समान भय नहीं (8) शील के समान शृंगार नहीं।

प्र.28. श्रावक के तीन मनोरथ कौन से हैं?

उ. (1) वह दिन मेरे लिए धन्य एवं कल्याणकारी होगा जब मैं आरंभ और परिग्रह को कम करूंगा। (2) वह दिन मेरा धन्य होगा जब मैं सब पापों को त्याग कर साधु-साध्वी बनूँगा। (3) वह दिन मेरे लिए धन्य होगा जब मैं समाधि-मरण कर देह त्यागूंगा।

प्र.29. शरीर में जलन ही जलन हो ऐसी दाहज्वर बीमारी क्यों होती है?

उ. पशुओं को भूखा-प्यासा रखने से और ज्यादा बोझ लादने से ऐसी बीमारी होती है। ❖❖

''अनाथ दामाद''

- सौ. संगीता अग्रवाल, दिल्ली

' हरीश! बाहर निकलो ज़रा !'' - सुबह सुबह नरेश जी अपने दोस्त के घर के बाहर आकर आवाज लगाने लगे।

''क्या बात है नरेश! ऐसे बाहर से क्यों चिल्ला रहे हो, अंदर आ जाओ !'' - हरीश जी बाहर निकलते हुए बोले।

''नहीं आना तेरे घर, तू तो ये बता कौन-सी दुश्मनी निकाली तूने, जो मेरी लाडली बेटी की शादी ऐसे घर में कर दी।

बहुत भरोसा करके रिश्ता किया था मैनें, पर तेरे उस दोस्त के परिवार वालों ने मेरी बेटी को नौकरानी ही समझ लिया। अरे मेरी बेटी ने यहाँ एक पानी का गिलास खुद नही भरा, वहाँ ससुराल वालों के काम क्यों करेगी वो !'' - नरेश जी गुस्से में बोले।

''दोस्त मेरा गला पकड़ने से पहले ये सोच अपने घर के काम करने से कोई नौकरानी नहीं हो जाती। मायके में हर लड़की लाड से रहती है पर ससुराल में सभी को थोड़ा बहुत काम करना पड़ता है, उस परिवार की बाकी बहुएँ भी तो काम करती हैं !'' - हरीश जी विनम्रता से बोले।

''करती होंगी पर मेरी बेटी नहीं करेगी और अब वो दामाद बाबू के साथ तभी जाएगी जब वो उसे अलग घर में रखेंगे; क्योंकि सारे ससुराल का उसने ठेका नहीं लिया।'' - नरेश जी बोले।

''तो दोस्त तूने अपनी बेटी के लिए रिश्ता ढूंढने में और मैंने बताने में वाकई गलती कर दी। तुझे तो अनाथ दामाद ढूंढना था, जिससे ना ससुराल होता ना दिक्कत आती ।

वैसे एक सलाह दूँगा तुझे अपने बेटे की शादी अपने जीतेजी मत करना, वरना तो कल को तेरा समधी भी किसी का गला पकड़ रहा होगा !'' - हरीश जी ने सधे किन्तु व्यंग्यात्मक शब्दों में कहा, जिसे सुन नरेश जी सन्न रह गये। ❖❖

मैत्री भाव का महत्व

- प्रवचनकार उपाध्याय मुनि श्री कन्हैयालालजी म.सा. 'कमल'

भगवान महावीर का जो दर्शन है उसमें 'मैत्री' का भाव अद्‌भुत है। मैत्री भाव के अभाव में जीवन और जगत् का सारा संतुलन ही बिगड़ जाता है। वैर, विरोध, विषमता, विग्रह, क्रोध, प्रतिशोध आदि को भगवान महावीर के दर्शन में थोड़ा-सा भी स्थान नहीं है। जिसके मन में अर्थात् जिसके जीवन में मैत्री भाव जितना प्रगाढ़ होगा, उतना ही वह सुखी रहेगा और उस सुखी वातावरण में अशांति को उभरने का भी मौका नहीं मिलेगा। मैत्री शब्द में जो माधुर्य है, वह विलक्षण है। मैत्री भाव की मधुरता की अनुभूति मैत्री भाव से जुड़कर ही की जा सकती है। **''मित्ति मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झं न केणइ'** अर्थात् मेरी सभी प्राणियों के साथ मैत्री है, किसी के साथ भी मेरा वैर-विरोध नहीं है। यह सूत्र न केवल जिह्वा पर अपितु अपने जीवन के व्यवहार में आए।

जीवन, जीवन है। जीवन के पथ में चलते हुए परस्पर मैत्री भाव नितांत आवश्यक है। चाहे-अनचाहे कभी भी, कहीं भी कोई प्रतिकूल परिस्थिति बन जाए तो ज्ञानी वह है जो अपनें मन में वैर विरोध एवं राग द्वेष की गांठ को मजबूत नहीं बनाए एवं तुरंत परस्पर क्षमापना करके वातावरण को विषम नहीं बनने दें। जहाँ विषम भाव है वहाँ पर तनाव ही तनाव है। विषम भाव से जुड़कर साधु हो अथवा श्रावक वह साधना के क्षेत्र में गति प्रगति नहीं कर सकता।

मित्रता एक ऐसा भाव है, जो जगत् के सभी रिश्ते नातों में व्याप्त है। मित्रता के बिना तो सुखी जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। दो व्यक्ति आपस में मित्र हो, यह मित्रता का स्थूल रूप है। लेकिन मित्रता का भाव जीवन में सभी से जोड़ना आवश्यक है।

सच्चा मित्र अपने भारी दुःख को भी छोटा समझे और मित्र के छोटे से दुःख को भी भारी समझे। यदि ऐसी समझ नहीं होगी तो मित्र अपने दुःख को याद करता हुआ मित्र के दुःख को दूर नहीं कर पायेगा। राम के दुख पहाड़ जैसे थे उनको वनवास हुआ, फिर वन में सीता हरण हुआ पर अपने दुःखों को भूलकर राम ने मित्र सुग्रीव का दुःख दूर किया।

सच्चे मित्र बहुत हुए हैं और कुमित्र भी बहुत हुए हैं। किन्तु महत्व सुमित्रों का है, कुमित्रों का नहीं। हम सुमित्र बनें, कुमित्र नहीं। आदर्श मित्रों में कृष्ण-अर्जुन और कृष्ण-सुदामा के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।

वासुदेव श्री कृष्ण ने अपने मित्र अर्जुन सहित सभी पाण्डवों को धर्मपथ पर डटे रहने की प्रेरणा दी। पाण्डवों के वनवास काल में उनका मार्गदर्शन किया। बाद में श्री कृष्ण अर्जुन के सारथी बनें। सांख्य योग, कर्मयोग, ज्ञानयोग, सन्यास योग, ध्यान योग, ज्ञान-विज्ञान योग, अक्षर ब्रह्मयोग, भक्ति योग आदि अठारह योगों से युक्त गीता का सदुपदेश देकर श्री कृष्ण ने अर्जुन को देहाभिमान, यानी मोह से मुक्त कर उसे महाभारत के धर्मयुद्ध में लड़ने को तैयार किया। पाण्डवों ने वह युद्ध-सरिता अर्जुन के घनिष्ठ मित्र श्री कृष्ण के सहयोग से ही पार की थी।

कृष्ण-अर्जुन जैसी ही मित्रता कृष्ण-सुदामा की थी। अभावों से पूर्ण दरिद्री सुदामा को श्री कृष्ण ने इतना दिया कि उसके नगर को द्वारका जैसा बना दिया व इस प्रकार दिया कि सुदामा को दीन नहीं बनने दिया। देने वालों में प्रायः यह अहंकार होता है कि मैं गरीब निर्धन की मदद कर रहा हूँ और गरीब निर्धन जब धनवान के सामने हाथ फैलाकर लेता है तो उसमें दीनता का यह भाव आ जाता है कि 'मैं इतना दीन-हीन हूँ कि मदद ले रहा हूँ।' देने के तीन ही रूप होते हैं- मज़दूरी के रूप में देना, खैरात या दान में देना और प्रेम से देना। कृष्ण ने सुदामा को अपने सामने दीन नहीं होने दिया। प्रेम के साथ उनके चावल खाये। अपने सिंहासन पर बैठाकर उनके चरण धोये। उन्हें पहनने को जो वस्त्र दिये थे वे भी यह कहकर उतरवा लिये कि भैया, रास्ते में इन्हें चोर-डाकू कहीं लूट लेंगे। सुदामा ने भी उन दिव्य वस्त्रों को उतार कर बड़ी प्रसन्नता अनुभव की और अपनी फटी पुरानी धोती ही पहन कर चल दिये। स्वाभिमानी सुदामा ने भी कुछ मांगा नहीं और मित्र के स्वाभिमान और सम्मान की पूर्ण सुरक्षा रखने के लिए श्री कृष्ण ने भी सुदामा से नहीं कहा कि 'तुम

कुछ ले जाओ।' लेकिन श्री कृष्ण ने तो गुप्त रूप से सुदामा के यहाँ सब कुछ पहुँचा दिया। सुदामा ने जब अपनी झोपड़ी की जगह भव्य भवन देखा, अपने नगर के सभी भवनों को द्वारका के सदृश भव्य देखा तो वे चकरा गए। उनको घोर आश्चर्य तो तब हुआ जब अपनी पत्नी को अलंकरणों से युक्त अनेकों दासियों से युक्त घिरा देखा। वे विरक्तता से अपनी पत्नी से पूछने लगे-

''अरे, यहाँ तुम जैसी ही मेरी पत्नी भी रहती थी। जो बहुत दुबली-पतली और मैली साड़ी पहने थी।''

पत्नी ने कहा- ''ओ नाथ! अपनी पत्नी को तो पहचानिये। यह सब फेरबदल तो तुम्हारे सखा श्री कृष्ण ने किया है।

श्री कृष्ण का प्रेम देखकर सुदामा रोने लगे। आजकल का मित्र तो अपने मित्र को 100-200 रुपये भी देगा तो कहेगा कि 'मेरे सामने गिन लो।' मैं ऐसे मित्रों को भी जानता हूँ कि जो अपने घर पर आये अभावग्रस्त मित्र के कपड़ों में चुपचाप रुपये छिपा देते और मित्र को पता भी नहीं चल पाता। वह घर जाकर कपड़े खोलता एवं रुपये देखकर मित्र के अगाध स्नेह के प्रति कृतज्ञता से भर जाता। श्रीकृष्ण ने सुदामा के साथ कपट किया कि जो भी दिया, छिपाकर दिया, उसे अपने सामने हीनता-दीनता की अनुभूति नहीं होने दी।

मित्रता या मैत्री अथवा प्रेम का एक ही प्रयोजन है कि लोक के साथ परलोक का भी हित हो। यह हित धर्म से ही होगा। अतः आप की मित्रता ऐसे मित्रों से होनी चाहिए कि जो आपको धर्मोन्मुख करे।

अंत में एक बात यह भी बताना अत्यावश्यक समझता हूँ कि आज न केवल हमारे राष्ट्र की अपितु संपूर्ण संसार की स्थिति बहुत ही भय, आतंक, वैर, विरोध एवं प्रतिशोध से परिपूर्ण है।

जीने को हर एक जी रहा है पर जो शांति एवं पारस्परिकता होनी चाहिए वह नहीं है। मानव का मानव के प्रति विश्वास समाप्त हो रहा है। ऐसी स्थिति में यदि हम मानव मात्र के साथ मैत्री का भाव उदारता के साथ स्थापित कर पाएं तो संपूर्ण जीव-जगत् के लिए वरदान वाली बात होगी।

❖❖

''हाय परीक्षा आई''

- कैलाश चंद जैन, दिल्ली

खेल कूद में दिन बीता, सोने में रात गँवाई।
हाय परीक्षा आई, अब क्या होगा रे भाई।।

आ जाती है हर वर्ष, लाज तक इसे नहीं आती।
जब से आती है, आँखों से नींद चली जाती है।।

कोई ऐसा वीर नहीं, जो टोक सके इसको।
स्कूल, कॉलेजों में आने से रोक सके इसको।।

सब मरते हैं इसकी, अब तक मौत नहीं आई।
हाय परीक्षा आई, अब क्या होगा रे भाई।।

डरते नहीं कभी हम बन्दुकों तलवारों से।
डरते नहीं कभी हम शोलों से अंगारों से।।

क्या कारण है किंतु समझ में बात नहीं आई।
नाम परीक्षा का सुनते ही नानी याद आई।।

हार मानकर भागे इससे कितने बलदाई।
हाय परीक्षा आई, अब क्या होगा रे भाई।।

बिन बादल बरसात, रात-भर बिजली से कड़के।
ज्यों-ज्यों आये पास परीक्षा, त्यों-त्यों दिल धड़के।।

बाथरुम में अब न फिल्म के गाने हम गाते।
जो कुछ पढ़ा रात को, उसको ही है दुहराते।।

आयी परीक्षा सिर पर देखो, मुँह से निकला हाय राम।
बने किताबी कीड़ा है सब, छोड़ के देखो सारे काम।।

❖❖

सम्यक्त्व निर्मल रखना

- पू. श्री उपेन्द्रमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'

सम्यक्त्व का मुख्य अर्थाभिप्राय है। अमुक छः बातों में गहरा विश्वास रखना। प्रथम आत्मा है, आत्मा नित्य है, आत्मा कर्ता है, आत्मा भोक्ता है, मोक्ष है और मोक्ष में जाने के उपाय हैं। नीचे नरक है और ऊपर देव गति है देवलोक है। जीवात्मा अपने शुभाशुभ कर्मों के बलबूते पर नरक गति, तिर्यंच गति, मनुष्य गति, देव गति और पंचम मोक्ष गति में जा सकती है, जाती है।

सम्यक्त्व निर्मल रखने के लिए आचार्य देव फरमाते हैं कि साधु का सम्पर्क रखें तथा श्रावक भी साधुओं के सम्पर्क में रहें। मिथ्यादृष्टियों से सम्पर्क संबंध बनाकर न रखें। सम्यक्त्व शुद्ध पालने के लिए, पहले जिनवाणी/वीतराग वाणी का तलस्पर्शी अध्ययन करें। आराध्य गुरुओं से आगमों का गहरा ज्ञान सीखने का प्रयास करें। गुरुदेवों का दिशा-निर्देशन पाकर चित्त में प्रसन्नता की अनुभूति करें। अश्लील व मिथ्या साहित्य का अनुशीलन न करें ताकि सम्यक्त्व में निर्मलता बनी रहे। सम्यक् दृष्टि व्यक्ति को चाहिए कि वो सम्यक्त्व को निर्मल बनाए रखने के लिए भगवान महावीर व उनकी पावन वाणी से जुड़ा रहे। ये तभी संभव है जब सम्यक् दृष्टि अभिच्छुक साधक की आत्मा अपने प्रभु महावीर व उनकी वाणी के वियोग में उदासीनता महसूस करें।

सूर पदावली में अनमोल शब्द कहे हैं -

केतिक दूरि गयौ रथ, गाई ?
नंद नंदन के चलत सखी हौ,
हरि को मिलन न पाई ।
एक दिवस हो द्वार नंद के,
नाहि रहति बिन आई ।
आज विधाता मति मेरी हरि,
भवन-काज बिरमाई ।
जब हरि ऐसो साज करत है,
काहु न बात चलाई ।
ब्रजहिं बसत विमुख भइ हरि सौं,
सूल न उर तैं जाई ।
सोवत ही सुपने की संपति,
रहीं जियहिं सुखदाई ।
'सूरदास 'प्रभु बिनु ब्रज नसिबौ,
एको पल न सुहाई ।।

जब श्री कृष्ण और बलराम मथुरा जाने के लिए ब्रज से निकले तो उन्हें देखकर एक गोपी कहती है कि हे सखी! रथ कितनी दूर गया होगा? मैं अभागी चलते समय उनके दर्शन भी नहीं कर सकी। मैं नंद जी के घर प्रतिदिन आती थी, किन्तु आज विधाता ने मेरी बुद्धि भ्रमित कर दी और मैं घर के कार्यों में उलझी रह गई। जिस समय श्री कृष्ण भगवान मथुरा जाने की तैयारी कर रहे थे, उस समय किसी ने भी मेरे सामने इस बात की चर्चा नहीं की। प्रभु से विमुख होने की विरह-वेदना मेरे हृदय को भेद रही है। जला रही है। अब प्रभु के बिना ब्रज में रहना, मुझे एक पल के लिए भी अच्छा नहीं लगता।

बस, एक सम्यक् दृष्टि आत्मा की भी यही स्थिति होती है। वो वीतरागी एवं वीतराग की वाणी के अभाव में, अपने आपको असहाय व अनाथ सी महसूस करती है और यह अनाथता ही उसके लिए सनाथ का कारण बनती है अर्थात् जब-जब साधक गौतम स्वामी की तरह अपने को अनाथ मानने लगता है तो सनाथ बनने का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। कहा भी है -

हर किसी से ऐसे मिलो कि
प्रथम बार मिल रहे हो जैसे ।
ऐसे लो विदा प्रेमपूर्वक,
ज्यों अन्तिम मिलना हो उनसे ।
हर मिलन सत्य ही प्रथम मिलन,
हर बिछुड़न है अन्तिम बिछुड़न ।

सम्यक् दृष्टि आत्मा हमेशा ऐसा चिंतन करती है कि अब के बिछुड़े पुनः पता नहीं कब मिलेंगे? उनकी जुदाई भी प्यार भरी होती है। अन्तिम जुदाई कि अब हमारा पुनर्मिलन नहीं होगा। मिलन और जुदाई के समय रखी गई समदृष्टि ही

साधक को महानता के चरण शिखर पर पहुँचाया करती है। कवि रहीम जी कहते हैं -

रहिमन रीस को छांडि के, करो गरीबी भेस।
मीठे बोलो, नम चलो, सबै तुम्हारो देस।

अर्थात् हे जीवात्मा ! क्रोध को, क्षोभ को त्यागो। भीतर की कटुता और भेदभाव को प्रेम में रूपांतरित कर दो। ऐसी सादगी अपनाओ कि दीन-दुःखी भी तुमको अपना समझें और तुम्हारे को, तुम्हारे शांत चेहरे को, तुम्हारे द्वारा किए गए सत्कर्मों को देखकर हर किसी को सांत्वना प्राप्त हो।

हे जीवात्मा! सदैव प्रिय एवं मधुर बोलो। नम्र होकर चलो फिर देखना, तुम्हारे लिए कोई भी व्यक्ति, कोई देश पराया नहीं रहेगा । सज्जनता विश्वमोहिनी होती है। विनम्रता व्यक्ति को विद्वान् और महान् बना देती है। जरूरत है व्यक्ति को अपनी सोच को/सम्यक्त्व को निर्मल बनाए रखने की। याद रखिए-

'रहिमन' यह तन सूप है, लीजे जगत पछोर ।
हलुकन को उडि जान दे, गरुए राखि बटोर ।।

अर्थात् यह संसार अनाज के भंडार की तरह है और तुम्हारी सोच सूप/छाज की तरह है। अन्न में विजातीय तत्त्व भी हैं और कुछ निसत्व भी। तुम्हें अन्न को पछोर कर/पछाड़ कर/साफ करके सार को ले लेना चाहिए। जो कूड़ा है, जो हल्का-निस्सार है, उसको उड जाने दो और जिसमें जीवन है, जो जीवन्त है, जो काम आने वाली वस्तु है, उसे बटोर लो अर्थात् मृत-जीवन मूल्यों का परित्याग करके जीवंत जीवन-मूल्यों को संग्रहीत कर लो।

भर्तृहरि कहते थे -

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता शौर्यस्य वाक्संयमो,
ज्ञानस्योपशमः श्रुतस्य विनयो वित्तस्य पात्रे व्ययः ।
अक्रोधस्तपसः क्षमा प्रभवितुर्धर्मस्य निव्योजता,
सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं शीलं परं भूषणम् ।।

अर्थात् अमीरी की शोभा है - सज्जनता, शूरवीर की शोभा है - वाणी पर संयम, ज्ञान की शोभा है - शांति, विद्वता की शोभा है - विनम्रता, धन की शोभा है - सुपात्र पर खर्च, तप की शोभा है - क्षमा, प्रभुता की शोभा है - निश्छलता तथा इन सब की शोभा है - विचारों को शुद्धि/निर्मल सोच /सम्यक् दृष्टि रखना/वास्तव में ही सज्जनता, संयम, शांति, विनम्रता, क्षमा भाव, त्याग एवं निश्छलता, शील के अपनाने से व्यक्ति स्वतः अध्यात्म के क्षेत्र में विकास कर लेता है।

इसके विपरीत जहां कदम-कदम पर दुष्टतापूर्ण व्यवहार किया जाता है, मन-वचन-काया पर किसी तरह का संयम नहीं, पास में शांति नाम की कोई चीज नहीं, जीवन, कुव्यसनों में पड़ा हुआ है, मन में बराबर बदला लेने की आग जलती रहती है, प्रत्येक कार्य में कपटाचार है। विचारों का स्तर, रसातल को छू रहा है और बातें सम्यक्त्व निर्मल करने को की जा रही हैं, जोकि असम्भव सा ही है। फर्श से अर्श पर पहुँचने के लिए चाहिए सम्यक् सोच।

गिरिधर कवि कहते थे -

बहता पानी निर्मला, पड़ा गंधिला होय ।
त्यों साधु रमता भला, दाग न लागे कोय ।।
दाग न लागे कोय - जगत् में रहे अलेदा ।
राग द्वेष जुग प्रेत, चित्त को करे बिछेदा ।।
कह गिरिधर कविराय, शीत ऊष्णादिक सहता ।
होय न कहूँ आसक्त, यथा गंगा जल बहता ।।

बहता हुआ जल ही निर्मल होता है, जो बहता नहीं वो गंदा हो जाता है। इसी प्रकार योगी, साधु यदि घूमते रहते हैं तो उनके विचार अच्छे बने रहते हैं। घूमते हुए साधु की जिन्दगी बेदाग रहती है क्योंकि घूमते रहने से वो संसार की मोह-माया से बचा रहता है। राग-द्वेष रूपी प्रेत उसे कभी परेशान व अशांत नहीं कर पाते और न ही उन्हें कोई प्राकृतिक विषमता, सर्दी-गर्मी प्रभावित कर पाती है और न ही उनकी किसी के प्रति शत्रुता या आसक्ति बन पाती है। योग साधना करने वाले साधक को अपने विचार गंगा-जल के समान पवित्र तथा एकदम विशुद्ध बनाने होते हैं।

कवि सुन्दरदासजी ने बहुत सुन्दर प्रेरणा प्रदान की है। कहते हैं कि -

शास्त्र-वेद-पुराण कहत हैं,
शब्द ब्रह्म को निश्चयधार ।
मुनि गुरू संत सुनावत सोई,
बार-बार शिष ताहि विचार ।
होइ कि नाहिं शोच मत आनहि,

अप्रतीत हृदय ते टारि ।
करि प्रतीत विश्वास आनि उर,
यह आस्तिक्य बुद्धि निरधारि ।

सभी ग्रन्थ, वेद, पुराण, आगमादि कहते हैं कि जो गुरुदेव ने तुम्हें सम्यक् सोच देने की कृपा की है, उसका बार-बार सिमरण करो। सभी जीवों के प्रति मंगल मैत्री के भाव रखो। अविश्वास और अनास्था की परित्याग कर दो। यदि हृदय में गुरु पर विश्वास तथा उनके बताए गए सन्देशों पर गहरा विश्वास एवं अटूट निष्ठा है तो तुम्हारे हृदय और विचारों को निर्मल होने से कोई नहीं बचा सकता।

कहते हैं कि एक बार तुलसीदासजी के शरीर पर भयंकर कष्ट आया। यकायक उनकी दोनों भुजाओं में पस/मवाद से भरे हुये फोड़े जैसी पीड़ा होने लगी। तब उन्होंने हनुमान जी को उपासना/आराधना करते हुए 'हनुमान बाहु' की रचना की। जिसके अंदर वर्णन आता है।

पाएं पीर, पेट पीर, बांह पीर, मुंह पीर,
जर्जर सकल सरीर, पीर गई है ।
देव, भूत, पित्तर, करम, खल, काल-ग्रह,
मोहि पर दवरि दमानक-सी दई है ।।

यूं हनुमान जी की आराधना करते हुए तुलसीदासजी के विचार, उनकी सोच इतने पवित्र हो गई थी। वो भावों से इतने ऊपर जा चुके थे कि एकदम स्वस्थ हो गए। लोगों को लगा कि एकदम चमत्कार ही हो गया। उनकी भक्ति इतनी गहराई तक जा चुकी थी कि राम का नाम लेने से, हनुमान का नाम लेने से कुछ चमत्कारिक घटनाएं घटित होने लगी।

तुलसीदासजी के चमत्कारों से प्रभावित होकर बादशाह अकबर ने उन्हें आमन्त्रित किया। उनकी काफी आवभगत की, तदनन्तर कोई चमत्कार दिखाने के लिए कहा। तो तुलसीदासजी ऐसा करने से इन्कार करते हुए कहते हैं, यह सब तो व्यक्ति की भक्ति और सोच पर निर्भर करता है। ऐसे में बादशाह ने उन्हें बंदी बनाकर जेल में डाल दिया।

ये क्या? कुछ ही देर में बादशाह को खबर मिलती है कि न केवल राजमहल में अपितु सम्पूर्ण राज्य में ही बंदरों का भयंकर उपद्रव प्रारम्भ हो गया है। अनेक उपाय किए लेकिन उपद्रव शान्त नहीं हुआ तो सम्राट् के सलाहकार ने कहा - बादशाह जान! तुलसीदास भगवान राम के, बजरंग बली हनुमान के परम भक्त हैं। हनुमान जी की आज्ञा से ही ये वानर सेना चारों ओर भयंकर उत्पात मचा रही है, यदि आप अपना राज-परिवार व राज्य की जनता का भला चाहते हैं तो तुलसीदासजी को तुरंत रिहा कर दें, बन्धन मुक्त कर दें।

बादशाह अकबर ने करबद्ध हो, तुलसीदासजी से क्षमायाचना की तथा उन्हें बंधन मुक्त कर दिया, तुरन्त बंदरों का उत्पात भी शांत हो गया। तुलसीदासजी ने लोगों को उद्बोधन देते हुए कहा -

कहिबे कहं रचना रची, सुनिबे कहं किए कान।
धरिबे कहं चित-हित सहित, परमार यहि सुजान।

अर्थात् जीभ मिली है, भगवद चर्चा करने के लिए, कान-जीभ मिले हैं भगवान की स्तुति वाणी सुनने के लिए और चित्त मिला है प्रभु का ध्यान लगाने के लिए। जिसकी दृष्टि, जिसका सम्यक्त्व निर्मल है, उन्हें उपरोक्त तथ्यों का अवलम्बन लेकर सत्य का साक्षात्कार करना चाहिए।

कभी भगवान महावीर ने सत्य का साक्षात्कार करने के लिए तथा सम्यक्त्व निर्मल बनाने के बारे में प्रेरणा देते हुए श्रीमद् ठाणांग सूत्र के चतुर्थ ठाणे में कहा था -

चउहिं ठाणेहिं संते गुणे नासेज्जा- कोहेणं,
पडिनिवेसंग, अक्तयण्णुयाए, मिच्छन्नाभिणिवेसेणं ।

अर्थात् क्रोध, ईर्ष्या, अकृतज्ञता और मिथ्याग्रह ये चार ऐसी बुराई हैं जो मनुष्य के सुन्दर विचारों को, उसके निर्मल सम्यक्त्व को, उसके भीतर विद्यमान गुणों को नष्ट कर देते हैं।

अतः अपना सम्यक्त्व-निर्मल रखें, सोच अच्छी रखें, व्यवहार अच्छा रखें। इसके लिए क्रोध को त्यागें, ईर्ष्या को त्यागें और अपनी जिद्द का परित्याग करें। ❖❖

पिरोलो ... जीवन की सूई में जिनाज्ञा का धागा

- आत्मबल को सशक्त बनाने हेतु 'शांति' रूपी विटामिन्स को आज से ही लेना प्रारंभ करो।
- संसार में जहाँ भी अवसर भ्रष्ट का साम्राज्य फैला हुआ है वहाँ से अपना स्थानांतरण शीघ्र करने हेतु **जाग सके तो जाग।** ❖❖

स्थानकवासी जैन शासन की दिव्य विभूति ...

महाश्रमण घोर तपस्वी अभिग्रह धारक
प. पू. श्री वेणीचन्दजी म. सा.

दिव्य तपोधनी, अभिग्रहधारी श्री वेणीचन्दजी म.सा. के जीवन का कण-कण तप की दिव्य तेजस्वी किरणों से प्रकाशमान तथा तप ही उनके जीवन का प्राण था। आपने अपने अन्तःकरण को तेजस्वी बनाने के लिये तप-दीप प्रज्वलित किया था। बेले-बेले और चोले की तपस्या तो की ही थी लेकिन जीवन के अंतिम 29 वर्षों तक निरंतर छाछ और पानी के आधार पर जीवन गुजार दिया। सभी पाँचों विगय को त्याग दिया तथा अभिग्रहधारी अर्थात् दृढ़ संकल्प लेकर चलते थे और अभिग्रह पूर्ण होने पर एक महीने, डेढ़ महीने व तीन महीने से भी अधिक समय तक छाछ और पानी भी ग्रहण नहीं करते थे। वस्तुतः तपस्वीरत्न घोर अभिग्रह धारक मुनि **श्री वेणीचंदजी महाराज** विगत सदी के महानतम श्रमण थे।

आपका जन्म चित्तौड़गढ़ के सन्निकट 'पहुना' ग्राम में वि. सं. 1898 चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को हुआ तथा जन्म नाम 'वेणीचन्द' रखा गया। सुश्रावक श्री चन्द्रभानजी खिंवसरा तथा उनकी धर्मपरायण अर्धांगिनी श्रीमती कमलादेवी आपके जनक-जननी थे। माता-पिता के देवलोकगमन पर एकान्त में बैठकर संसार की असारता पर चिन्तन करने लगे, मन में वैराग्य का भाव जागृत हुआ।

युवा होने पर वेणीचंदजी की एक प्रतिष्ठित पहुना के कूकड़ा परिवार की कन्या से सगाई उनके चचेरे भाई ने तय कर दी। एक दिन मंगेतर युवती को अनजाने में 'बहन' संबोधित कर बैठे, तभी हृदय में संचित वैराग्य के बीज फूट निकले। हुआ यह कि रास्ते में बैल लड़ते हुए आ रहे थे, वेणीचन्दजी ने कहा- ''बहन ! हट जाओ पीछे से बैल लड़ते हुए आ रहे हैं।'' जब वेणीचन्द को विदित हुआ कि भावी पत्नी को उन्होंने बहन कह कर पुकारा तो चिन्ता में पड़ गए कि जिसको मैंने बहन कह दिया उससे शादी कैसे कर सकता हूँ। उन्होंने प्रतिज्ञा कर ली, अब मैं इसे बहन ही मानूंगा। पारिवारिक ममत्व के आँधी-तूफान, उन कोमल-कोपलों को उखाड़ न सके। जिस दिन शादी होनी थी ठीक उसी दिन 22 वर्ष के लहलहाते यौवन में निष्काम साधक वेणीचंद ने वि.सं. 1920 में आषाढ़ शुक्ला नवमी के दिन तालाब की पाल पर एक विशाल वट वृक्ष के नीचे बड़ी धूमधाम से पूज्य ज्योतिर्धर आचार्य श्री पन्नालालजी म.सा. के चरणों में आर्हती प्रव्रज्या ग्रहण की। आचार्य प्रवर श्री पन्नालालजी म.सा. के वि.सं. 1938 में देवलोकगमन पर मुनि श्री वेणीचन्दजी म.सा. कठोर तपस्या में संलग्न हो गए। शून्य खण्डहरों में, श्मशानों में, गहन वनों में तथा गुफाओं में वे ध्यान करते थे। सिंह जैसे हिंसक प्राणी भी उनके चरण-वन्दन करते थे।

तप पुरुष की भीष्म प्रतिज्ञा - दीक्षा धारण करते ही मुनि श्री वेणीचंदजी म.सा. ने भीष्म व्रत धारण कर लिया था-आजीवन बेले-बेले (दो दिन का उपवास तीसरे दिन भोजन) तप करने का। उनका स्वर था **'तवसा धुणई पुराण पावगं'** अर्थात् तप के द्वारा ही पूर्व संचित कर्म समूहों को विनष्ट किया जा सकता है तथा **'भवकोडीय कम्मं तवसा णिज्जरिज्जई'** करोड़ों भवों के संचित कर्म तप-साधना से ही क्षय किए जा सकते हैं, कुछ वर्ष यह क्रम चला। तपःपुरुष के हृदय में विशिष्ट साधना का चिंतन उभरा। उन्होंने आजीवन पचोले-पचोले (पाँच दिन उपवास, छठे दिन पारणा) तप करने की प्रतिज्ञा ले ली। स्वयं के लिए दो द्रव्य- जल और छाछ रखकर शेष समस्त द्रव्यों का जीवन भर के लिए त्याग कर दिया । पाँच-पाँच दिन बाद पारणा करते, वह भी छाछ से। उनका पारणा भी अभिग्रह व्रत से मंडित होता था। अभिग्रह फला तो छाछ ग्रहण की, अन्यथा तप आगे बढ़ा देते । आप श्री अभिग्रह (संकल्प) लेकर ही गोचरी लेने के लिये निकलते अभिग्रह पूर्ण होने पर ही गोचरी लेते, इनके अभिग्रह भी विस्मयकारी होते थे । वि. सं. 1941 में आपने अभिग्रह धारण किया कि तीन साडू एक साथ 5 लड्डू बहराए तो आहार लेना, नहीं तो छाछ-पानी के आधार पर रहना । वह अभिग्रह दो वर्ष दो दिन में फला ।

श्री वेणीचंदजी म. सा. ग्रीष्म में आतापना लेते, शीत ऋतु में शीत परीषह सहते, महीनों-महीनों तक एकान्त निर्जन गिरि-कन्दराओं में ध्यानावस्थित रहते। कठिनतम अभिग्रह धारण करते। मासों-मास तक जागते रहते। पाँच-पाँच दिन के अन्तराल में अत्यल्प छाछ उदरस्थ करके साधनारत रहते। यह था - जीवनक्रम, साधनाक्रम पूज्यपाद जिनकल्प कोटि के साधक पूज्यवर्य **श्री वेणीचंदजी म. सा.** का ।

महान् अभिग्रह - अभिग्रह विशिष्ट साधना का नाम है। साधक जीवन के मोह से ऊपर उठकर स्वयं को प्रकृति के हाथों में अर्पित कर देता है। वह मन में कुछ अद्भुत संकल्पों को धारण करता है। संकल्पों की सम्पूर्ति यदि पूर्ण होती है तो वह आहार ग्रहण करता है अन्यथा उसका तप वर्धमान रहता है। अढ़ाई हजार वर्ष पूर्व विशिष्ट कर्म निर्जरा के हित महाश्रमण महावीर ने एक साथ 13 अभिग्रह धारण किए थे। पांच मास और पच्चीस दिन के तप के पश्चात् भगवान के अभिग्रह फलित हुए थे। चन्दनबाला का उद्धार हुआ था ।

तप पुरुष पूज्य श्री वेणीचंदजी महाराज ने भी 13 बोल का एक महान् अभिग्रह धारण किया, उनके 13 बोल निम्न प्रकार से थे -

1. पति-पत्नी भिक्षा के लिए निवेदन करें ।
2. पत्नी के केश खुले हो ।
3. गोद में बच्चा हो ।
4. पत्नी केसरिया वस्त्र धारण किए हो ।
5. पति के कान में कलम टंगी हो ।
6. हाथ में कागज हो ।
7. घर में उस दिन खीर बनी हो ।
8. कांसे के कटोरे में खीर हो ।
9. चार बच्चे खीर खाने का आग्रह करें ।
10. पति कहे कि छाछ नहीं, खीर बहरो ।
11. पति-पत्नी की आँखों में आँसू हो ।
12. वे आजन्म शीलव्रत ग्रहण करें ।
13. वे रात्रि भोजन का त्याग करें ।

रूपनगर में इन 13 कठिन प्रतिज्ञाओं को धारण करके पूज्यश्री साधना में लीन थे । पंचोले के पारणे के लिए वे भिक्षा के लिए निकले। एकमात्र ग्राह्य द्रव्य छाछ भी उस दिन उन्होंने ग्रहण नहीं की, तो श्रावक वर्ग समझ गया कि पूज्यश्री अभिग्रह धारण किए हुए हैं।

एक-एक दिन करके मास बीत गया। श्रावक वर्ग चिंतित था, लेकिन विवश था। महाश्रमण की यह साधना एक मास और दो दिन के पश्चात् पूर्ण हुई। प्रकृति तपःपुरुष के समक्ष झुक गई। संयोग स्वतः निर्मित होते चले गए। पूज्यश्री भिक्षा के लिए निकले। द्वार-द्वार को तप चरणों का संस्पर्श देते हुए तपस्वीराज एक गृहद्वार पर रूके। गृहस्वामी ने तपस्वीराज को अपने द्वार पर देखा। वह लेखन में संलग्न था। तत्काल खड़ा हो गया। कलम कान पर चली गई। पेपर हाथ में था ही, इतने में पत्नी भी आ गई। तपस्वीवर से भाव-भरे शब्दों में खीर लेने की प्रार्थना की। कांसे के कटोरे में खीर, एक ओर चार बालक खीर के लिए आग्रहशील, एक बच्चा मातृ गोद में था। तपस्वी अपनी प्रतिज्ञाओं का अध्ययन कर रहे थे। दस बोल पूर्ण हो रहे थे। अंतिम तीन बोल अधूरे थे।

अनन्त समता रस में लीन तपस्वीराज लौटने लगे। श्रावक-श्राविका का हृदय हिल उठा। उनके नैन बरस पड़े। मुनिवर का मार्ग रोककर बोले - 'हे महातपस्वी ! हमारे हाथों से भिक्षा लेकर हमें धन्य कीजिए। हम बड़े से बड़ा बलिदान करने को तैयार हैं। रात्रि भोजन, शीलव्रत- जो भी आप चाहें प्रतिज्ञा दीजिए पर भिक्षा ग्रहण कीजिए।

तपस्वीराज ने उस दम्पत्ति को आजीवन के लिए रात्रि भोजन एवं काम-भोग का त्याग करा दिया। इस तरह 13 बोल पूर्ण हो गए। महामुनि ने एक मास और दो दिन के पश्चात् छाछ ग्रहण करके अभिग्रह तप का पारणा किया।

विचित्र अभिग्रह - तपस्वी राज ने विचार किया - प्रमाद पाप का द्वार है। अप्रमाद पाप का अवरोध तथा विनाशक है। महावीर ने प्रमाद के परिहार के लिए खड़े-खड़े ही साधना की थी। मुझे भी वैसी ही साधना करनी चाहिए।

मांडलगढ़ क्षेत्र में तपस्वीराज ने निरन्तर 22 माह तक खड़े-खड़े ही तप किया। उनकी जराजीर्ण देह अपूर्व कांतियुक्त बन गई। उनके तप को देखकर नरपति, सुरपति तथा साधारण जन आश्चर्यचकित थे। अनुश्रुति है कि देवता उनकी सेवा में रहने लगे थे।

वि.सं. 1959 बनेड़ा (भीलवाड़ा) में एकदा तपस्वीराज अभिग्रह लेकर मौनपूर्वक ध्यानस्थ हो गए। उन्होंने एक विचित्र अभिग्रहण धारण किया - यदि बनेड़ा दरबार चार पीढ़ी सहित आकर इस प्रकार बोले कि - ''वेण्या बैठ जा, नहीं तो मेरी नगरी से बाहर निकल जा।'' तो मैं बैठूंगा वरन् एक वर्ष खड़े-खड़े ही व्यतीत करूंगा।

इस संकल्प को धारण किए तीन मास और दस दिन व्यतीत हो गए थे। तपस्वीराज के पैरों में सूजन आ चुकी थी। पैरों से पानी बहने लगा था। अपार दैहिक कष्ट के क्षणों में भी तपस्वीराज परम शांत थे। श्रद्धालु श्रावक उनसे आग्रह करते थे कि वे विराज कर तप करें । लेकिन सुमेरू डोले तो, तपस्वीराज का संकल्प डोले। अडोल-अकम्प प्रसन्नचेता तपस्वीराज साधनारत थे। इस पर भी एक विशेष बात यह थी कि ऐसे में भी वे साध्वियों और श्रावकों को शास्त्र की वाचना दिया करते।

संयोग से वहाँ के दरबार श्री गोविन्दसिंहजी, अक्षयसिंहजी, अमरसिंहजी, प्रतापसिंहजी चारों पीढ़ियां एक साथ तपरवीराज के दर्शनार्थ उपस्थित हुई। अक्षयसिंहजी ने तपस्वीराज के दर्शन किए, उनके पैरों की दशा देखी, उनका मानस दुखित हो उठा। अक्षयसिंहजी सहसा आवेश में आकर बोल पड़े कि **''वेण्या बैठणो है तो बैठजा, नीतर म्हारा गांव सूं बाहर निकल जा।''**

दरबार के ऐसे धृष्ट शब्द सुनकर उपस्थित जन सन्न रह गए। कोई कुछ बोल पाता, उससे पूर्व ही तपस्वीराज ने रजोहरण से बंधी गांठ खोली। एक कागज का टुकड़ा निकाला, उस पर उपरोक्त शब्दावली ज्यों की त्यों लिखी हुई थी। जिसने सुना-देखा दंग रह गया। आपका अभिग्रह पूर्ण हुआ। पूज्यवर तपस्वीराज का धवल यश कण्ठ-कण्ठ का स्वर बन गया।

दरबार ने पैरों की सूजन को मिटाने के लिए दवाई की प्रार्थना की, परन्तु तपस्वीराज ने यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया कि वे छाछ के अतिरिक्त अन्य द्रव्य नहीं लेते हैं। तपस्वीराज बोले - मैं इस सूजन पर छाछ की ही मालिश करूंगा । ''लेकिन छाछ की खटास से तो सूजन घटने के स्थान पर और बढ़ जाएगी, गुरुदेव !'' लोगों ने कहा - ''तुम केवल देखो, क्या करना है, वह मैं जानता हूँ।'' तपस्वीराज का उत्तर था। भिक्षा में प्राप्त छाछ का लेप उन्होंने पैरों की सूजन पर किया। सबने देखा सूजन गायब हो गई। सहस्रों कण्ठ धन्य-धन्य कह उठे। ऐसे अनेक अभिग्रह आपके जीवन में फलीभूत हुए ।

एकदा आप नीमच जिले के जाट गांव में पधारे। सामने एक प्रज्ञाचक्षु भी आ रहे थें। तपस्वीराज ने कहा- ''लो आँख खोलो और दर्शन कर लो।'' उसी समय रोशनी आ गई, श्वेत वस्त्रधारी संत नजर आने लगे।

अद्‌भुत साधना : सिंह की परिक्रमा - तपस्वीराज मुनि श्री वेणीचंदजी म. सा. ने जनसंकुल बस्तियों से दूर एकान्त ध्यान-साधना करने का संकल्प किया। इसके लिए उन्होंने भीलवाड़ा से कोटा मार्ग पर मांडलगढ़ से 15-20 कि. मी. की दूरी पर विस्तृत बीहड़ कानन को चुना। वर्तमान में यह स्थान सुंदर पर्यटन स्थल में विकसित हो चुका है। उस समय यहाँ घोर घना जंगल था। एक गिरि कन्दरा में बैठकर आप समाधि लगाते थें। यह समाधि कभी आठ दिन, कभी पन्द्रह दिन व कभी महीने भर तक चलती थी। आपकी समाधि-साधना से वन का वातावरण अत्यन्त करुणामय, शांत व सात्त्विक हो जाता था। एक दिन लकड़ी काटने वाले कुछ लकड़हारों ने देखा वनराज सिंह आपकी परिक्रमा कर रहा है। लकड़हारों ने दांतों तले उंगुली दबा ली, उन्होंने बस्ती में आकर लोगों को बतलाया।

उसके बाद अनेक लोगों ने अनेक बार यह आश्चर्यजनक क्षण अपनी आँखों से देखा। निस्संदेह यह दृश्य देखना दर्शकों के साहस की भी कथा कहता है, लेकिन दर्शक प्रबंध सहित यह दृश्य देखने जाते थे। तपस्वीराज का यश-सौरभ जन-जन में व्याप्त हो गया।

निरन्तर 45 वर्षों तक महातपस्वी श्री वेणीचंदजी म. सा. उग्र से उग्रतर तप-साधना, संयम आराधना करते हुए इस धरा धाम पर विचरण करते रहे पर इस विचरण को एक दिन थमना ही था। जीवन के साथ मृत्यु का संबंध अटूट है, लेकिन महासाधक मृत्यु द्वारा मरता नहीं है। वह मृत्यु से युद्ध करता है । उसके समग्र जीवन की साधना का सार ही होता है - मृत्यु को मार कर शिवत्व का वरण करना।

तपस्वीराज का वि. सं. 1965 का वर्षावास शाहपुरा की पुण्य धरा पर हुआ। वर्षावास के बाद आपका स्वास्थ्य नरम हो गया। एक रात्रि में विचार किया - "अब देह क्षीण हो चुकी है। इस जीण-शीर्ण पुरातन वस्त्र को छोड़ देना ही श्रेयस्कर होगा।" सूर्योदय के पश्चात् श्रावक-श्राविकाओं के समक्ष आपश्री ने कहा - "अब मेरा जीवन दीप बुझने वाला है। अतः मैं संघ की साक्षी से यावज्जीवन के लिये संथारा ग्रहण करता हूँ।" श्रीसंघ की साक्षी में संलेखना-संथारा धारण कर लिया। दूसरे दिन पौष कृष्णा चतुर्दशी के दिन (वि. सं. 1965) महायोगीराज दिव्य तपोधनी स्वर्गवासी हुए। समय थम सा गया, जैन समाज जुट-सा गया। हजारों हृदय उदास-उदास हो गए, लाखों आँखें नम हो गई। क्या इसे मृत्यु कहा जा सकता है ? नहीं, कदापि नहीं। मृत्यु तो उसे कहा जाता है, जब प्राणी जीवन से चिपके पर काल उसे बलात् खींच ले जाए। जो जीवन के ममत्व को ठोकर मारकर स्वयं उससे एक ओर खड़ा हो जाए और दोनों बाहें फैलाकर मृत्यु का स्वागत करे, उसकी मृत्यु नहीं होती। उसका तो महाजीवन में प्रवेश होता है।

चन्दन की चिता सजी, अग्नि प्रज्वलित हुई। लकड़ियां जल गई। पार्थिव देह जल कर राख हो गया पर हजारों लोगों ने देखा महामुनि का चोलपट्टा (अधोवस्त्र) का एक तार भी नहीं जला। महामुनि के अखंड ब्रह्मचर्य की गाथा सहस्रों कण्ठों से उच्चरित हुई - वाह मुने ! धन्य तपस्वी ! आग भी आपके अधोवस्त्र को प्रणाम कर रही है। उस अधोवस्त्र के इंच-इंच भर श्रद्धालु श्रावकों ने अमूल्य निधि की भांति अपने-अपने घरों में रख लिया। ऐसे घोर तपस्वी, अभिग्रहधारी पूज्य श्री वेणीचन्दजी म. सा. का जितना गुणगान करें उतना कम है, तपःपूत आत्मा को सश्रद्ध भावभरा वन्दन ।

आप बादल ही नहीं, स्वयं ही आसमान थे,
आप फूल ही नहीं, स्वयं सुरभित उद्यान थे ।
क्या कहना आपकी दिव्य साधना का,
आप पुजारी ही नहीं, स्वयं भगवान् थे ।।
ज्यूँ कमल जल में बसे, रवि शशि बसे आकाश ।
आप हमारे मन में बसे और सब झूठी जग की आश ।।
खोजता हूँ मैं स्वयं ही, क्या प्रभु अर्पित करूँ ।
हाँ, मुझे अब याद आया, श्रद्धा-सुमन अर्पित करूँ ।।

❖❖

जैन-आदर्श

महावीर के आदर्शों की, लिखनी हमें कहानी है।
हो पवित्र मन आत्मा सुन्दर, ऐसी राह दिखानी है।।
सत्य अहिंसा महामंत्र का,
सब हिलमिल कर जाप करें।
दया न छोड़ें धर्म मार्ग पर,
मानव का कल्याण करें।।
सब महावीर की जय जय बोले,
ऐसी सीख सिखानी है।
महावीर के आदर्शों की,
लिखनी हमें कहानी है।।
जैन धर्म अपनाने वाले, रात्री भोजन त्याग करें।
जीओ और जीने दो बोल,जन-जन का आव्हान करें।
परोपकारी हृदय स्वच्छ मन, जैन की यही निशानी है।

महावीर के आदर्शों की, लिखनी हमें कहानी है।।
जैन गुरुओं और आचार्यों का,सहज भाव ही सार है।
जैन धर्म में उनकी सेवा-श्रद्धा, मूलभूत आधार है।
जिन शासन में सर्वधर्मों का, आदर और सत्कार है।
जीव मात्र को जो देता, जीने का अधिकार है।
झूठ, कपट, चोरी, हिंसक, दुर्व्यसन और दुराचारी।
जैनाचरण में अज्ञानी ही है, सबसे ज्यादा अत्याचारी।
अन्धे भी कोसों तक देखे, लंगड़े पवर्त पार करे।
गूंगे-बहरे सुनकर बोले, जयजिनेन्द्र स्वीकार करे।
महावीर के आदर्शो की, महिमा अपरंपार है।
'लौंगपुरिया' की कलम कसौटी, लिखने को तैयार है।
दया भाव रख बढ़ते जाओ, लय से स्वर-ताल मिलानी है
महावीर के आदर्शों की लिखनी हमें कहानी है।

देव - गुरु और धर्म तीनों महान

- उप-प्रवर्तक पू. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'गुणाकार'

देव, गुरु और धर्म ये तीनों तत्व महान् हैं, इन्हें पहचानें वह सच्चा बुद्धिमान है।

देव का तात्पर्य अपनी आत्मा से, गुरु का तात्पर्य अपने ज्ञान और धर्म का तात्पर्य अपने स्वविवेक से है।

गुरु ही विश्व का उज्जवल उजारा है, गुरु ही भवजल का दिखलाते किनारा है। होते हैं पिता, माता, भ्राता के तुल्य गुरु, संसार में गुरु का ही सबसे बड़ा सहारा है।

जिसका भी उक्त तीनों तत्वों से संबंध जुड़ गया, वही संसार के भंवर जाल में पुनः फँसने से बच गया है। जो अरिहंत भगवंतों की आत्मा है, वही आत्मा हमारी है। यही तो आत्म देव है। जो स्वयं धर्म का आचरण करते हैं और दूसरों को उसका अनुसरण कराते हैं, वही तो ज्ञानी हैं। इसे ही आत्म-गुरु कहा गया है।

वाचाल को हर वक्त बात चाहिए,
'घू-घू' को हर वक्त रात चाहिए।
नहीं चाहिए मुझे और कुछ हमेशा,
सिर पर गुरु का केवल हाथ चाहिए।।

जो प्रत्येक कार्य में विवेक रखते हैं और यह भेद विज्ञान समझ जाते हैं कि "अमुक कार्य से पाप और अमुक से पुण्य का लाभ मिलेगा", उसे ही धर्म-विवेक कहा गया है। धर्म किसी मार्केट, खेती-बाड़ी में नही मिलता बल्कि वह विवेक से अपनी अंतर आत्मा में उपजता है।

धर्म न वाड़ी निपजे, धर्म न हाट बेचाय,
धर्म विवेका निपजे, जो करिये तो थाय।

जिसने देव, गुरु और धर्म का आलंबन ले लिया, वही मोक्ष मंजिल की तरफ बढ़ सका है। कोई ज्ञानी है और आचरण में नहीं है, फिर वह अधूरा है। पूरा तभी संभव है जब वह आचरण में सुदृढ़, शुद्ध व पवित्र बनेगा। धर्म की महत्ती वर्षा करने हेतु साधु-संत, साध्वी समाज वर्ष के चार माह स्थिरवास एक स्थान पर करते हैं, जिसे वर्षायोग या चातुर्मास कहा जाता है। वर्षायोग या चातुर्मास धर्मध्यान का सीजन बताया गया है। यह वह समय है जब मानव अपने जीवन उत्थान के लिए समय निकाल कर आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश करता है।

आषाढ़ माह के अंतिम दिन से प्रारंभ होकर कार्तिक माह की पूर्णिमा तक चलने वाला वर्षायोग / चातुर्मास के ये महीने हमें संकेत देते हैं कि हम आषाढ़ माह में धर्मरुपी बाड़ लगाकर जीवन रुपी कल्पवृक्ष की सुरक्षा करें। सावन में संयम साधना की फुआर से मन को परम पवित्र बनायें, भादों में तपस्या कर सांवत्सरिक क्षमापना एवं भक्ति भावों से भगवान सी भद्रता पायें, आसोज में आलस्य को छोड़कर आत्मतत्व को जानें और कार्तिक माह में कर्मठता पूर्वक कर्त्तव्यों का निर्वाह करें, ऐसा करने से ही ये चातुर्मास के चार महीनें हमारे लिये चतुर-मास बन सकते हैं अन्यथा हमारी ना-समझी के कारण चार महीनें आलस्य और असंयम में गुजार कर जीवन को व्यर्थ और बेकार भी कर सकते हैं, अतः इन महीनों को धर्म-ध्यान पूर्वक व्यतीत करें। 'वर्षायोग धर्म ध्यान का सीजन है, अतः इस सीजन का रीजन समझकर भूले हुए धर्म का रिविजन करें और सच्चे मार्ग पर चलने का निर्णय लेकर अपनी पोजीशन को बनायें।' जिस प्रकार मृत्यु के बिना दूसरा जीवन मिलता नहीं है, उसी प्रकार अधर्म को मारे बिना धर्म मिलता नहीं है और धर्म से ही परमात्मा पद की प्राप्ति होती है। दृष्टि बदलने से मनोवृत्ति बदल जाती है, इसके बदलने से समदर्शी भाव उत्पन्न होता है, जिसे सम्यक् दर्शन कहते हैं। सम्यक् दृष्टि का बदलना ही सम्यक् दर्शन है और समर्पण किए बिना यह असंभव है। मोक्ष महल की प्रथम सीढ़ी सम्यक् दर्शन है, जिस प्रकार जड़ के बिना वृक्ष अपना अस्तित्व नहीं रख सकता, उसी प्रकार सम्यक् दर्शन के बिना मोक्ष संभव नहीं है।

इस संदर्भ में एक दृष्टांत से भली प्रकार समझा जा सकता है कि धर्म का शरणा कितना महान् है - बात उन दिनों की है जब मगध देश पर राजा श्रेणिक का राज्य था। जब तक श्रेणिक महावीर के संपर्क में नहीं आए थे, तब तक वे बलि जैसे जघन्य कृत्यों को धर्म मानते थें। श्रेणिक के नगर

का सिंहद्वार बार-बार बनता और गिर जाता, उपाय पूछने पर ब्राह्माणों ने मानव की बलि का उपाय बताया। अतः श्रेणिक तैयार हो गये और उसके बराबर की स्वर्ण मुद्रा देते हुए, नरबलि के लिए घोषणा करा दी। एक ब्राह्मण दंपत्ति अपने आठवें और सबसे छोटे पुत्र अमरकुमार की बलि देने को तैयार हो गया। ब्राह्मण बालक गरीबी के कारण विद्याध्ययन नहीं कर पाता था, वह जंगल से ढाक, बरगद आदि के पत्ते बीन कर लाता और बेच देता।

एक दिन उसे कुछ तपस्वी मुनि मिलें, जिन्होंने उसे कहा कि तुम माता-पिता की सेवा के लिए जो पत्ते बीनते हो वह तो ठीक हैं लेकिन धर्म को अपने जीवन का सहारा भी बनाओ। पतस्वियों ने नवकार मंत्र को याद करने को कहा। जिसे उसने रट लिया और इसे ही धर्म का शरणा मान लिया। माता-पिता उसकी बलि देने को तैयार हो गये और राजा के पास ले आये। जहाँ अमरकुमार ने राजा श्रेणिक से न्याय माँगा, लेकिन राजा का दिल नहीं पसीजा और उसके वध की तैयारी हो गई। अमरकुमार को एकाएक धर्म की, मुनियों की याद आई और उसने मंत्र जाप करना प्रारंभ कर दिया। बलिकर्त्ता के खड्ग उठाते ही वह तलवार दूर जा गिरी। मंत्र रक्षक देव उसके रक्षक हो गये बलि का स्थान राजसिंहासन बन गया। देवों ने व उपस्थित जनसमुदाय ने उसकी जय-जयकार की।

राजा श्रेणिक को बोध हुआ कि अमरकुमार का वध असंभव है, वह धर्म की शरण में है और यदि कोई भी हठ करेगा तो सब मूर्छित हो जायेंगे। अमरकुमार के माता-पिता भी यह सुन दौड़े आये और उसे अपने साथ ले जाने लगे, किन्तु उसने जाने से साफ मना कर दिया और कहा कि अब तो धर्म ही मेरा शरणा है बाकि सारा संसार स्वार्थी है। उसने धर्म का सच्चा स्वरुप समझकर मुनियों के पास दीक्षा लीं और अपने जीवन को धन्य बनाया। ❖❖

कर्ज वाली लक्ष्मी

- **श्री सुभाष ओसवाल जैन,** राष्ट्रीय चेयरमैन - जैन कॉन्फ्रेंस, दिल्ली

एक 15 साल का भाई अपने पापा से कहा- ''पापा-पापा दीदी के होने वाले सास-ससुर कल आ रहे हैं'' अभी जीजाजी ने फोन पर बताया। दीदी मतलब उसकी बड़ी बहन की सगाई कुछ दिन पहले एक अच्छे घर में तय हुई थी।

दीनदयाल जी पहले से ही उदास बैठे थे धीरे से बोले - हाँ बेटा, उनका कल ही फोन आया था कि वो एक दो दिन में दहेज की बात करने आ रहे हैं। बोले दहेज के बारे में आप से जरूरी बात करनी है।

बड़ी मुश्किल से यह अच्छा लड़का मिला था। कल को उनकी दहेज की मांग इतनी ज्यादा हो कि मैं पूरी नही कर पाया तो ? कहते-कहते उनकी आँखें भर आयीं। घर के प्रत्येक सदस्य के मन व चेहरे पर चिंता की लकीरें साफ दिखाई दे रही थीं। लड़की भी उदास हो गयी। खैर, अगले दिन समधी-समधिन आए। उनकी खूब आवभगत की गयी।

कुछ देर बैठने के बाद लड़के के पिता ने लड़की के पिता से कहा - दीनदयाल जी अब काम की बात हो जाए।

दीनदयाल जी की धड़कन बढ़ गयी, बोले - हां हां समधी जी...जो आप हुकुम करें।

लड़के के पिताजी ने धीरे से अपनी कुर्सी दीनदयाल जी और खिसकाई ओर धीरे से उनके कान में बोले... दीनदयाल जी मुझे दहेज के बारे में बात करनी है। दीनदयाल जी हाथ जोड़ते हुये आँखों में पानी लिए हुए बोले बताइए समधी जी. ..जो आप को उचित लगे, मैं पूरी कोशिश करूंगा। समधीजी ने धीरे से दीनदयालजी का हाथ अपने हाथों से दबाते हुए बस इतना ही कहा - आप कन्यादान में कुछ भी देगें या ना भी देंगे, थोड़ा देंगे या ज्यादा देंगे, मुझे सब स्वीकार है पर कर्ज लेकर आप एक रुपया भी दहेज मत देना, वह मुझे स्वीकार नहीं। क्योंकि जो बेटी अपने बाप को कर्ज में डूबो दे वैसी ''कर्ज वाली लक्ष्मी'' मुझे स्वीकार नहीं।मुझे बिना कर्ज वाली बहू ही चाहिए। जो मेरे यहाँ आकर मेरी सम्पति को दो गुना कर देगी। दीनदयाल जी हैरान हो गए, उनसे गले मिलकर बोले - ''समधीजी! बिल्कुल ऐसा ही होगा।''

शिक्षा- कर्ज वाली लक्ष्मी ना कोई विदा करें, न ही कोई स्वीकार करें । ❖❖

•• आत्मधर्म के सुअवसर को खोजो और साधो ••

- पू. साध्वी युगल निधि-कृपा जी म.सा.

जगत में जीने वाले सभी इन्सान प्रायः एक-दूजे से अपेक्षा रखते हैं कि वे शान्ति से जिएँ एवं हमें भी शान्ति से जीने दे। आश्चर्य यह है, जैसा वे चाहते हैं वैसा वे खुद भी नहीं जी पाते। इसी कारण बहुधा वे छोटी बात को बड़ा बना लेते हैं। जब मन अशांत होता है तो वातावरण में फैले हुए अशांति के कीटाणुओं को बहुत जल्दी से पकड़ लेता है। यूँ भी अशांति के कीटाणुओं का कॉलोनाइजेशन (Colonisation) ऐसा है कि पूरा विश्व इनकी कॉलोनी बन जाता है। फलतः इन्सान शांति की चाहत रखते हुए भी अशांति को आमंत्रित कर लेता है, यही उसका अज्ञान है।

इस अज्ञान से ऊपर उठने के लिए श्री आचारांग सूत्र का परामर्श है, जिसे आत्म प्रज्ञा नहीं है अर्थात् जो अपने हित और अहित का विचार नहीं करता वह अपने अज्ञान और पूर्वाग्रह के कारण विषाद प्राप्त करता है, इस सत्य को उजागर करने वाला सरोवर का एक रूपक है। *(देखे आचारांग सूत्र 6/1/178)*

एक सरोवर कमल पत्रों से आच्छादित सघन सैवाल वाला था। उसमें छोटे-बड़े अनेक जलचर जीव रहते थे। एक दिन उस शैवाल में छोटा-सा छिद्र हो गया। एक कछुआ भटकता हुआ उसी छिद्र के पास आ पहुँचा। उसने छिद्र से बाहर गर्दन निकाली तो नील आकाश में तारों के बीच चमकते चंद्रमा को देख वह अपूर्व अनुभूति से हर्षित हो उठा।

इस अद्वितीय दृश्य को देखकर उसने सोचा, जो मैंने देखा है उसे अपने परिवार जनों को भी दिखाऊँ तो वे कितने आनंदित होंगे। वह फौरन उन्हें बुलाने हेतु चल पड़ा। पारिवारिक जनों के साथ जब वह लौटा तो बहुत खोजने पर भी उसे विशाल सरोवर में वह छिद्र कहीं नजर नहीं आया।

इस रूपक का सार समझाते हुए सूत्रकार कहते हैं, संसार के सरोवर में कछुआ रूपी आत्मा कर्मरूप सघन शैवाल से आवृत्त है। पूर्व पुण्योदय से धर्म, त्याग, संयम और समकित के सुअवसर रूपी छिद्र हमें प्राप्त होते हैं। किन्तु जो मनुष्य पारिवारिक मोह के कारण उनकी ओर आकर्षित रहते हैं अथवा दूसरों को अपनी ओर प्रभावित करने के लिए या उसका प्रचार-प्रसार करने हेतु उत्सुक हो जाते हैं वे वहीं अटक जाते हैं। गृहवासी बन वे मोह के रेशमी धागों में उलझ जाते हैं। फलतः मोह की सघनता के कारण पुनः यह अवसर प्राप्त नहीं होता। त्याग, वैराग्य एवं संयम से आलोकित असीम आकाश के दर्शन उसके लिए दुर्लभ हो जाते हैं। यह है, अनात्मप्रज्ञ अर्थात अवसरभ्रष्ट आत्मा के विषाद की स्पष्ट झाँकी।

मानवीय मन की यह अजीब विचित्रता है, जो महत्त्वपूर्ण है उसे वह प्राथमिकता नहीं दे पाता। जो उसके लिए हितकारी है उसे नंबर वन पर नहीं रख पाता। मन और तन की सार-संभाल में 'आत्मा' उसी तरह उपेक्षित हो जाती है जैसे जूते को संभालने में सड़े हुए पांव की देखभाल करने का वक्त नहीं मिलता या संपत्ति बढ़ाने की धुन में, कि परिवार को आत्मीयता देने का समय नहीं मिलता या सुनहरी फ्रेम ढूँढने के प्रयास में आँखों के मोतियाबिन्द का उपचार करने की फुरसत नहीं होती। इसलिए ज्ञानी कहते हैं, कर्मों की गहन परतों में छिपी आत्मा को नजरअंदाज मत करो एवं आत्मा को प्राथमिकता देकर प्राप्त सुअवसर को साध लो। सावधान! अब ऐसा कभी न हो कि एक बार दृष्टि सत्य तक पहुँच जाने पर आत्मा पुनः मोह के आगोश में चली जाए। अतः आत्मा का भान होने पर भी सतत जागृति जरूरी है। चूँकि पूर्व संस्कारों का असर इतनी आसानी से निस्तेज होने वाला नहीं है। जिस ममत्व के संस्कारों को आत्मा ने अनंतकाल से पोषित किया है क्या वे एक बारगी में खत्म हो जाएँगे?

स्मरण रहे, जब तक सम्यक् ज्ञान, त्याग, वैराग्य एवं संयम के सुसंस्कार सुदृढ़ नहीं होंगे तब तक निमित्त मिलते ही आत्मा प्रिय संयोगों में खिंची चली जाएगी। अगर बार-बार पतन होता रहेगा तो उत्थान दुश्वार हो जाएगा। अतः सूत्रकार का संदेश है, साधना में प्रत्येक पल की सजगता जरूरी है एवं फल की लालसा को छोड़ना भी आवश्यक है।

आज के परिप्रेक्ष्य में ऐसा महसूस होता है, धर्म का

सुअवसर मिलने पर कुछ लोग अज्ञानता के कारण अवसर को मूल्य नहीं दे पाते, तो कुछ लोग 'नो टाइम' की समस्या के तले अमूल्य अवसर का लाभ नहीं उठा पाते। चंद लोग निर्वाह की सेटिंग और निर्माण के मैनेजमेंट में अवसर को साध नहीं पाते तो कुछ लोग मोह के मधुर तारों से इतना बंधे होते हैं कि अवसर कब निकल गया, इसका बोध ही नहीं रख पाते। यूँ पूरी जिंदगी संसार की चमक-दमक को प्राथमिकता देने में बीत जाती है।

एक वैदिक लोककथा है। नारदजी स्वर्ग की सैर कर रहे थे तो सहसा विष्णुजी ने उनसे संसार का हाल पूछा। नारदजी बोले, "मैं यही तो बताये आया हूँ। दुनियाँ के हर मंदिर में लोग आपको याद कर रहे हैं, स्थान-स्थान पर आपका पूजन-कीर्तन हो रहा है किन्तु आप भी कैसे देव हैं जो यहाँ निश्चिन्तता से बैठे हैं?"

विष्णुजी ने वास्तविकता का बोध कराया, "नारद! वे मुझे नहीं चाहते मात्र अपनी कामना पूर्ति के लिए मुझे याद करते हैं।" नारद ने इन्कार करते हुए कहा, "प्रभो! ऐसा नहीं है। मैंने खुद देखा है वे आपके दर्शन हेतु बेचैन है। मेरे कहने से एक बार उन्हें दर्शन दे आइए।" विष्णु ने कहा, "ऐसा करो, कुछ विमान ले जाओ और जो दर्शन पिपासु हैं उन्हें ले आओ।"

नारदजी विमान लेकर धरती पर आ गये। उन्होंने देखा एक प्रौढ़ सज्जन को जिनके मुख में मात्र विष्णु का ही नाम है। ऐसी नाम स्मरण की निरंतर रटना देख नारद ने उन्हें रोककर कहा, "भगतजी! प्रभु के दर्शन करने हो तो आओ, इस विमान में बैठ जाओ।" भगतजी यह सुन बहुत प्रसन्न हुए कि स्वयं विष्णुजी ने विमान भेजे हैं। अतः बोले, "मैं अवश्य चलूँगा परंतु आठ दिन बाद पुत्र का विवाह है तभी तो प्रभु स्मरण में लगा हूँ ताकि विवाह के सारे कार्य निर्विघ्न संपन्न हो।" नारद कुछ महिनों बाद हाज़िर हुए तो भगत ने कहा, "विष्णुजी की अनंत कृपा है। मैं उन्हीं के पूजन में मग्न हूँ कि पोता शिक्षित हो जाए और बेटा अपनी जिम्मेदारी संभाल ले, कहीं उन्हें दुःख-संकट न आये।"

सावधान! संसारी जीवों को धर्म भी करना है तो संसार को व्यवस्थित और निर्विघ्न रूप से चलाने के लिए ही करना है। चेक कर लो अपने को! हम धर्म किस इन्टेंशन/उद्देश्य से कर रहे हैं। कामनापूर्ति से या आत्मोत्थान से? आत्महित के लिए या परिवार सुरक्षा के लिए? धर्म के पावर हाऊस से जुड़कर भी संसार ही बढ़ाना है या आत्मा को जगाना है?

नारदजी देखकर दंग रह गए कि भगतजी बूढ़े हो गए, बीमार रहने लगे, लाठी लेकर चलने लगे फिर भी मोहवश गृहवास छोड़कर विष्णु के दर्शन हेतु विमान में बैठने को तैयार नहीं है। अब उन्हें समझ आ गया भगतजी की चाह भी है, सामने अवसर भी उपस्थित है और प्रेरणा देनेवाला भी मौजूद है तथापि मोह के मगरमच्छ ने पैरों को जकड़ रखा है।

गृहवास में आसक्त, सत्य से दूर मनुष्य की दयनीय अवस्था को दर्शाने वाला दूसरा रूपक वृक्ष के माध्यम से समझाते हुए सूत्रकार कहते हैं जैसे वृक्ष अपने स्थान पर स्थित रहता है। सदी, गर्मी, आँधी और वर्षा आदि आपत्तियों को सहता है, फल-फूल तोड़ने वाले लोगों द्वारा पीड़ा, प्रहार व यातना भी झेलता है किन्तु अपने स्थान को नहीं छोड़ पाता। ऐसे ही गृहवासी भी अनेक प्रकार के दुःख, पीड़ा एवं सोलह महारोगों से आक्रान्त होने पर भी गृहवास के दुःखालय से मुख नहीं मोड़ पाता। चाहे आत्म कल्याण के अवसर से वह वंचित रह जाए किन्तु संबंधों का भ्रमजाल वह नहीं तोड़ना चाहता। मोहजाल के दुष्चक्र से उभरना हो तो पल-पल सचेत रहना। एक भँवरा जैसे पराग से भरे विकसित पुष्प को ढूँढता है, हंस जैसे मुक्ताओं से भरे जलाशय को ढूँढता है। ऐस ही हमें आत्मधर्म के अवसरों की खोज करनी है, अवसर बार-बार नहीं मिलते अतः अवसर को साधो।

शाखा से गिरता हुआ पत्ता भी संदेश दे रहा है, अब तो जाग! तू भी मेरे समान दुर्बल होता जा रहा है। एक दिन जर्जरित हो कर तू भी जीवन शाखा से गिरेगा। अतः अब सम्बन्धों की पकड़ एवं मोह की अकड़ छोडकर धर्म के अवसर को साध ले। क्षण पर सुख के पीछे मण भर की दुःख-परंपरा क्यों बढ़ा रहे हो? अपने जीवन सरोवर को धर्म के जल से भर लो ताकि मोह की दीवार ढहेगी और आत्मकल्याण भी सधेगा।

आत्मबल को सशक्त बनाने हेतु 'शांति' रूपी विटामिन्स को आज से ही लेना प्रारंभ करो। संसार में जहाँ भी अक्सर भ्रष्ट का साम्राज्य फैला हुआ है, वहाँ से अपना स्थानांतरण शीघ्र करने हेतु जाग सके तो जाग। ❖❖

महान समाज सुधारक थे - आचार्य सम्राट प. पू. श्री आत्मारामजी म. सा.

- **श्री संजीव जैन,** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस, लुधियाना (पंजाब)

जब हम भारत के इतिहास की तरफ दृष्टि घुमाकर देखते हैं तो हमें पता चलता है कि भारतीय संस्कृति को ऊंचा उठाने में भारतीय ऋषि-मुनियों का बड़ा योगदान रहा है। जिन्होंने जनजीवन के निर्माण उत्थान में तथा मानव को सदाचारी, क्रियाशील, भक्त और वीर बनाने में अपना सर्वस्व अर्पित किया है।

इनमें बीसवीं सदी के अध्याात्मिक साधक आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्मारामजी म. सा. का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उनका जन्म पंजाब प्रांत के राहों नगरी के प्रसिद्ध चोपड़ा परिवार में हुआ था।

किशोरवय में ही आप मुनि बन गए थें। साधु जीवन की कठोर साधनाओं में आपने सफलता प्राप्त की। आपके अध्यात्मिक जीवन के प्रकाश पुंज ने समाज को नया प्रकाश दिया। बाल्यकाल से ही आप बड़े क्षमाशील और विद्या प्रेमी संत थे। आपकी ज्ञान गरिमा को देखकर चतुर्विध श्रीसंघ ने आपको वि.सं. 1913 में उपाध्याय पद से विभूषित किया। 1952 में सादड़ी मारवाड़ में बृहद् साधु-सम्मेलन का आयोजन हुआ। इसमें आपके गंभीरतापूर्ण जीवनको चतुर्विध संघ ने सूक्ष्मता से आंका।

आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्मारामजी म. सा. का जीवन अत्यंत संयमी और विरक्ति पूर्ण होने के कारण चमत्कारी हो गया था। वाणी में न जाने कौन-सा जादू था कि आप अपने समीप बैठे हुए व्यक्ति को मंत्रमुग्ध कर लेते थे। आपके आध्यात्म साधना के चमत्कारों के प्रभाव से आचार्य के रूप में आपका नाम घोषित किया गया।

आज आपका नाशवान शरीर तो इस भूतल पर नहीं है, पर आपके ब्रह्मचर्य का तेज, आगम अनुभूति का प्रकाश, तप-त्याग तथा वैराग्य का अध्यात्म, सौंदर्य क्षमा का प्रवाह सर्वत्र प्रवाहित है जो युगों तक मानव समाज को प्रकाश देता रहेगा, आपकी याद दिलाता रहेगा। ❖❖

सच्चाई और ईमानदारी

- **श्री अशोक नाहर जैन,** राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य-जैन कॉन्फ्रेंस, सिकन्द्राबाद (तेलंगाना)

जापान के टोक्यो शहर में एक आदमी टैक्सी में सवार हुआ और उसके ड्राइवर से कहा के यहाँ का जो एक हॉस्पिटल है उसके नजदीक जो इंस्टिट्यूट है मुझे वहां जाना है।

वहां का एक कल्चर है, टैक्सी में सवार होने से पहले वहां के ड्राइवर आपको रेस्पेक्ट देने के लिए अपना सर झुकाते हैं तब टैक्सी में बिठाते है, सर झुकाना वहां के कल्चर में शामिल है।

वो आदमी टैक्सी में बैठ गया, थोड़ी देर के बाद उसने देखा के ड्राइवर ने टैक्सी का मीटर बंद कर दिया। उसे बड़ी हैरत हुई लेकिन चूँकि वहां की जबान नहीं जानता था इसलिए कुछ कह नहीं सका, तकरीबन 2-3 किलोमीटर चलने के बाद टैक्सी ड्राइवर ने मीटर फिर चालू किया।

जब वो आदमी अपनी मंजिल पर पहुंचा तो वहां के स्थानिक लोगों ने उसका बड़े उम्दा तरीके से स्वागत किया, तब उस आदमी ने उन लोगों से कहा के आप जरा इस ड्राइवर से पूछिए के रस्ते में इसने 2-3 किलोमीटर तक मीटर बंद क्यों रखा? मैं तो पूरा किराया देना चाहता हूँ लेकिन ये समझ नहीं आ रहा कि इसने ऐसा क्यों किया?

तो उस ड्राइवर का जवाब था असल में मुझे जहाँ से मुड़ना था मैं वहां चूक गया और आगे बढ़ गया, वहां से कोई टर्न नहीं था, तो जो दूरी मैंने अपनी गलती से बढ़ाई उसके पैसे मैं मुसाफिर से नहीं ले सकता। सच्चाई और ईमानदारी समाज को तरक्की और इज्जत दिलाने में सबसे बड़े सहायक हुआ करते हैं। ❖❖

आज जागो तो कल सुरक्षित

- श्री आनंद सुभाषचंदजी बंब जैन, सटाना 'नासिक' (महाराष्ट्र)

नई जनरेशन (लड़के-लड़कियों) की, अब छोटे गाँव में भविष्य में रहने की अरुचि के कारण, कुछ सालों में धीरे-धीरे जैन समाज अधिकांश रूप में बड़े शहरों में बस जाएगा। जहाँ पर बड़े अपार्टमेंट में रहना तथा व्यस्त जीवनशैली के कारण साधु-संतों के समागम का नित्य अभाव रहेगा तो नयी पीढ़ी के लिए जैन धर्म का परिचय-आस्था ही कमजोर रह जाएगी। ऐसे समय पर बच्चों को पाठशाला एवं घर के धार्मिक संस्कार ही बचाएँगे। अनेक माता-पिता को, 12वीं के बाद आज उच्च शिक्षा की पद्धति कितनी बदल गयी है, इसकी जानकारी ही नहीं है। 12वीं के मार्क्स मात्र कॉलेज के एडमिशन तक सीमित रह गये हैं। आगे भविष्य Entrance Exam पर आधारित हो गया है। जहाँ पर मैरिट में आने वालों को लुढ़कते हुये एवं न आने वाले को Without Donation के आगे बढ़ते देखा गया है। लेकिन हमने बच्चों को उनके बचपन से ही स्कूल-ट्यूशन-होमवर्क में व्यस्त करके मशीन की तरह बना दिया है।

स्कूल की पढ़ाई बच्चों का "जीवन निर्वाह" करा सकती है, लेकिन संस्कार की पढ़ाई "जीवन निर्माण" करा सकती है। संस्कारी परिवार पढ़ा-लिखा थोड़ा कम रहा तो कम से कम सुखी रहेगा, लेकिन पढ़ा-लिखा परिवार संस्कारी न रहा तो दुःखी रहने की संभावना रहेगी, लेकिन पढ़ा-लिखा परिवार संस्कारी रहा तो घर एवं जीवन स्वर्ग बन जाएगा।

दुर्भाग्य से आज माता-पिता स्कूली पढ़ाई के साथ म्यूजिक, डान्स, खेल-कूद आदि क्लास को जितना महत्व देते है, क्या उतना महत्व संस्कार पाठशाला को देते है? हमें हमारे बच्चों को 'रोमियो' बनाना है अथवा 'राम' बनाना है?

आज जितना समय हम मोबाईल पर अनावश्यक Online रहते हैं, क्या उतना समय बच्चों के साथ Offline रहते है? हर भौतिक उपलब्धि में हम अपने आपको जितना Update रखते है, क्या बच्चों को संस्कार में एवं उनके अध्यात्मिक विकास में Update रखना क्या पिछड़ेपन की निशानी है?

हम स्कूल ट्यूशन-मनोरंजन-खेलकूद के लिए बाहर भेजना आदि में बहाने नहीं बनाते है, लेकिन संस्कार पाठशाला/बच्चों को जैन धर्म स्थानक में न भेजने के लिए मानो बहाने के इंतजार में रहते हैं।

आज के माहौल का असर टी. वी. - हमारी अपरिपक्व दृष्टिकोण (Parenting Skill का अभाव) आदि कारणों से अधिकांश बच्चे माता-पिता के नियंत्रण में नहीं, घर में बड़ों की सुनते नहीं, Father का आदर नहीं, Mother की कदर नहीं, यह सहते हुए भी उनकी आँखें नहीं खुलती हैं। दया-अनुकंपा आती है उनकी सोच पर, वे अपना अंधकारमय भविष्य की दंतकथा अपनी हाथों से लिख रहे हैं। बच्चों को खिलौना नहीं दिया तो बच्चा एक दिन रोएगा, लेकिन बच्चों को संस्कार नहीं दिये तो माँ-बाप को जीवन भर रोना पड़ेगा।

गुरुकुल शिक्षा पद्धति के अभाव में आज की शिक्षा पद्धति यह ब्रिटिश लॉर्ड मँकेलो के षड्यंत्र पर आधारित है - जहाँ Moral Education का स्थान न के बराबर है तथा ऐसी शिक्षा पद्धति जिसमें बचपन ने रटा ज्ञान जीवन में आगे बहुत ही कम Practical रूप में काम आता है जो आज सेठ कम बड़ा नौकर ज्यादा बना रहा है।

हम सभी बच्चों के संस्कार निर्माण में सतर्क नहीं रहे तो वह दिन दूर नहीं जहाँ जैन होस्टल, जैन विद्यापीठ, जैन धर्म स्थानक, जैन धर्मशाला, जैन मंदिर के साथ एक दिन जैन समाज को 'जैन वृध्दाश्रम' खोलने पड़ेंगे। जरा चिंतन करें।

आज जैन समाज में लड़कों की संख्या नैसर्गिक रूप में कम दिखाई देती है। सैकड़ों लड़कियाँ घर से भागकर अन्य समाज में जा रही है, बदले में कितनी आ रही है? न के बराबर, लेकिन हम मूक दर्शक ही रहेंगे? बस समय पर हमने बच्चों को संस्कार नहीं दिए तो भावी जैन समाज विनाश के कगार पर पहुँच जाएगा।

एक मुसलमान अपने बच्चों को शुक्रवार को बचपन से ही समय पर मस्जिद लेके जाता है। एक ईसाई अपने बच्चों को बचपन से ही रविवार को चर्च लेके जाता है, लेकिन कितना दुर्भाग्य है जैनियों का, अपने बच्चे छुट्टी के दिन मोबाईल में, कार्टून में व्यस्त, कितने हफ्ते, महीनों से धर्म स्थानक नहीं गए, पाठशाला नहीं गए, इसकी किसी को भी फिक्र नहीं होती, यह बात बहुत दुःखदायक-पीड़ादायक है । आज जागो जैनियों तो कल सुरक्षित रहेगा। ❖❖

"पौषध : जीवन की औषध है !"

- श्री पदमचंद गांधी जैन, जयपुर (राजस्थान)

भौतिकता की उपभोगवादि प्रवृत्ति ने मानव को मशीन बना दिया है। उसके लिए चौबीस घन्टे भी कम पड़ते हैं। वह पौद्गलिक वस्तुओं की प्राप्ति के लिए अहर्निश दौड़ता है, चन्द रुपयों के टुकड़ों के लिए अपना अमूल्य एवं दुर्लभ मानव जीवन दाँव पर लगा देता है। उसे कहीं विश्राम तथा शान्ति एवं सन्तोष भी नहीं मिलता। प्रभु महावीर ने इस भाग-दौड़ से बचने के लिए "विश्राम" करके, अपनी खोई हुई ऊर्जा को पुनः प्राप्त करने का उपदेश दिया है। योगशास्त्र भी इसको प्रमाणित एवं सिद्ध करता है कि काम करते-करते जब थकान हो जाती है, तो विश्राम करना औषध का काम करता है और व्यक्ति पुनः ऊर्जावान (चार्ज हो जाता है) बन जाता है।

श्रावक के बारह व्रतों में ग्यारह तथा चार शिक्षा व्रतों में तीसरा शिक्षा व्रत पौषधव्रत है। इस व्रत को अंगीकार करने से आत्मा प्रबल पुष्ट होती है। अनुपम शान्ति की अनुभूति होती है और आत्मा की बहिर्मुखता मिटकर अन्तर्मुखता का विकास होता है। इस व्रत को अंगीकार करने से श्रावक आत्म-रमणता के शान्त सरोवर में अवगाहन करके संसार के ताप से एवं भार से मुक्त होकर परम शान्ति का रसास्वादन करता है। गृहस्थ श्रावक के लिए पौषधपोवास को "विश्रान्ति स्थल" कहा गया है। स्थानांग सूत्र में गृहस्थ श्रावक को भारवाहक श्रमिक की उपमा दी है और बताया है कि जैसे भारवाहक श्रमिक के लिए थकान मिटाने के लिए विश्राम का पड़ाव जरूरी है, जिससे वह विश्राम करके तरोताजा होकर पुनः अपने कार्य में द्विगुणित शक्ति से प्रवृत्त होता है, वैसे ही गृहस्थ श्रमणोपासक के सिर पर गृहस्थ कर्तव्यों का बहुत भार है, जिन्हें वह 'विश्राम स्थल' पर भार/बोझ उतार कर, थकान उतार सकता है।

गृहस्थ श्रमणोपासक के लिए यह उचित विश्राम स्थल पौषधशाला ही है, जिसमें वह गार्हस्थ जीवन का भार उतार कर विश्राम करता है। विश्राम करने के लिए ऐसे चार स्थान प्रमुख बताए हैं- (१) गृहस्थ के लिए भार उतारने का पहला विश्रान्ति स्थान तब होता है, जब वह भावना करे कि "मैं अणुव्रत, गुणव्रत शिक्षाव्रत स्वीकार करके पौषधोपवास करता हुआ विचरण करूँ । (२) दूसरा विश्रान्ति स्थान तब होता है, जब वह सावद्य योग के त्याग और निरवद्य योग स्वीकार रूप सामायिक लेकर चित्त को समाधिभाव में प्रवृत्त करता है अर्थात् देशावकाशिक व्रत स्वीकार करके अपने पर आ पड़े भार को कुछ समय के लिए उतार सकता है। (३) तीसरा विश्रान्ति स्थान गृहस्थ के लिए वह होता है, जो रात्रि विश्राम के लिए (थकान उतारने के लिए) अष्टमी, चर्तुदशी, पक्खी आदि पर्वों पर एक दिन-रात के लिए पौषध युक्त उपवास करे। (४) चौथा पड़ाव वह होता है, जब संसार मुक्ति हेतु संथारा ग्रहण करे।

उक्त चारों पड़ावों में तीसरा पड़ाव गृहस्थ के लिए श्रेष्ठ माना गया है, क्योंकि पूरे एक दिन-रात का गृहस्थ प्रपंचों से एवं शारीरिक खटपटों से दूर रहकर निराहार निर्जल रहकर धर्माराधन एवं आत्मचिन्तन के रूप में पौषधोपवास करना अद्भुद विश्रान्ति का स्थान है, जो श्रेष्ठ औषध के समान है। पौषधव्रत आत्मविकास की सर्वोत्तम साधना की औषधि है। आत्मा में अनन्त शक्तियाँ छिपी पड़ी हैं। पौषध आत्मा का "ब्रह्म-रसायन है।" पौषध समय में आत्मा का चिन्तन किया जाता है। आत्म-चिन्तन द्वारा उन शक्तियों के द्वारा उद्घाटित होने पर अन्दर सोया हुआ आत्म रूप महापौरूष जाग्रत होता है।

ग्यारहवाँ प्रतिपूर्व पौषध में साधक प्रतिज्ञा करता है कि वह समस्त असन, पान, खान और स्वाद्य रूप चारों प्रकार के आहार का त्याग करता है, ब्रह्मचर्य का पालन, अमुक मणि, सोना, चाँदी, माला वर्णक (चूर्ण, पॉउडर) विलेपन का त्याग करता है। शस्त्र, मूसल आदि समस्त सावद्य योग का त्याग करता है। ये सभी त्याग एक अहोरात्रि के लिए मन, वचन, काया से करता है। वह न स्वयं करता है, न करवाता है, न ही करते हुए की अनुमोदना करता है। वह पूर्वकृत पापों का प्रतिक्रमण करता है। निन्दा और गर्हा करता है, अपनी आत्मा को उनसे अलग कर शुद्ध एवं निर्मल बनाता है। यही प्रतिपूर्ण पौषध की अनुपालना होती है, जिसे आठ प्रहर का पौषध कहते हैं। यदि कोई आठ प्रहर का नहीं कर सके तो वह आठ

प्रहर से कम समय तथा पाँच प्रहर से अधिक समय का दसवां पौषध भी कर सकता है।

पौषध व्रत में पाँच आस्रवों का त्याग करने से गृहस्थ श्रावक भी आचार से महाव्रती हो जाता है। हेमचन्द्राचार्य ने कहा है- "पौषध व्रत का पालन करने वाले श्रावक धन्य है, जो इसकी अनुपालना करते हैं।" इस व्रत की अवस्था में श्रावक एक दिन-रात के लिए सर्व विरत साधु के समान हो जाता है, इसलिए सूक्ष्म हिंसा से बचने के लिए वह पूरा विवेक एवं उपयोग रखता है। वह शैया, संस्तारक, वस्त्रादि की ध्यानपूर्वक प्रतिलेखना करता है। शारीरिक बाधा निवृत्ति के लिए भूमि को पूर्व में अच्छी तरह देख लेता है, उस स्थान को पूँज लेता है, इस प्रकार वह पाँच समिति, तीन गुप्ति (अणगार की अष्ट प्रवचन माता) का अभ्यास भी कर लेता है।

पौषध व्रत ग्रहण करने के पश्चात् साधक दैनिक आजीविका, खान-पान, शरीर-सुश्रूषा एवं गृह कार्यों से मुक्त हो जाता है, इसलिए अधिकाधिक समय आत्म-साधना एवं धर्माराधना में लगता है। धर्मजागरण करता है। धर्मजागरण का अर्थ है- चार भेद, चार लक्षण, चार आलम्बन और चार अनुप्रेक्षाओं सहित धर्म-ध्यान में समय लगाना। पौषध में उस साधक का पूरा समय धर्म-ध्यान में लगता है, जिससे वह मानसिक शान्ति को प्राप्त करता है। उपवास रखने से काया को विश्राम मिलता है, जिससे आधि-व्याधि समाप्त हो जाती है। विज्ञान भी "उपवास" को औषधि के रूप में तथा योग "विश्राम" (पौषध) को औषध के रूप में स्वीकार करता है तथा ध्यान को श्रेष्ठ मानता है। अतः धर्म-ध्यान ही पौषध व्रत में आत्म-चिन्तन का मूल स्रोत है।

इस प्रकार गृहस्थ श्रावक के लिए अतिभार उतारने के लिए "पौषध" करना औषध का पर्याय है। उसे अन्य औषधि की आवश्यकता नहीं है। अतः पौषध की औषध को जीवन में आचरित करके हम निरोगी एवं आत्म-योगी बन सकते हैं।

❖❖

खरपतवार

- **श्री देवीचंद बरलोटा जैन**-राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य-जैन कॉन्फ्रेंस, चेन्नई (तमिलनाडु)

सुषमा के बेटे की नौकरी लगते ही उसके लिए लड़की वालों की तरफ से रिश्ते आने लगे। एक जगह रिश्ता तय हो गया। 'चट मंगनी पट ब्याह', शादी की तारीख भी तय हो गई । सुषमा बहुत खुश थी। माँ के घर दो दिन के लिए गई ताकि शादी का न्योता भी दे दे और माँ से शादी की तैयारियों के बारे में अच्छे से पता भी कर ले।

सुषमा ससुराल में सबसे छोटी बहू है। अभी तक दो बड़ी जेठानियों और ननदों के यहाँ बहू का आगमन हो चुका है, उनसे कई-कई बातें उसने सुन रखी थी तो सास बनने का उत्साह भी था और मन में आने वाली बहू को लेकर अनेक शंकाए भी।

माँ ने प्यार से समझाया - ''देखो सुषमा, हम खेती-बाड़ी वाले हैं।'' 'हां, तो?' - सुषमा ने असमंजस से कहा। 'तो बीज बोने से पहले खेत को तैयार करना पड़ता है गुड़ाई, निदाई कर खरपतवार (खेत में उग आये बेकार पौधें) उखाड़ना पड़ता हैं, मौसम देखकर ही बीज-पानी डालना पड़ता है।' - माँ ने कहा। 'हां माँ, पर आप यह सब मुझे क्यों समझा रही हैं?' - सुषमा ने कहा।

'बेटी तुम भी अपनी गृहस्थी के बगियाँ में नया पौधा लगा रही हो ना? तो पहले सुनी-सुनाई बातों की खरपतवार हटाओ और अपने मन-आँगन को साफ कर आने वाली बहू का स्वागत करो और हाँ, यह पौधा जो तुम्हारे घर-आँगन की शोभा बनेगा, उसकी देखभाल बहुत प्यार से करो पर जल्दी फल पाने की इच्छा मत रखना, तुम्हारे अच्छे व्यवहार रूपी खाद से ही प्यार के फूल खिलेंगे।' - माँ ने कहा।

माँ की बातों ने मन के अँगन में उगी शंकाओं की सारी खरपतवार - बेमतलब की सोच/आशंका/चिंताएं उखाड़ दी और एक साफ सुथरा मन-आँगन लेकर सुषमा नई नवेली बहू के स्वागतार्थ अपने पीहर से अपने घर चल पड़ी।

❖❖

जैन संस्कृति में ''मैत्री भावना'' से पर्यावरण बोध

- डॉ. एन. के. खींचा जैन, जयपुर (राजस्थान)

जैन संस्कृति में परस्पर मैत्री भावना एक अद्वितीय सद्गुण एवं उच्च सांस्कृतिक मूल्य है। हृदय में मित्र-भावना के उदित होने पर वैर-विरोध की अग्नि स्वतः ही शान्त हो जाती है। मित्रता/मैत्री भावना सद्भाव का स्वरूप है।

जैन संस्कृति के जिनवाणी में मैत्री भावना की अवधारणा (Concept) अत्यन्त विशाल एवं उदार है। *यह प्राणी मात्र के प्रति आत्मौपम्य की धारणा है। जिसकी प्राणी मात्र के साथ मैत्री है, वे समस्त प्राणियों को अपनी आत्मा के तुल्य जानते और मानते तथा देखते हैं।* जैन संस्कृति किसी अन्य को अपना शत्रु-मित्र नहीं मानकर, अपनी आत्मा को ही शत्रु-मित्र मानती है। सुमार्ग में स्थित आत्मा ही अपना मित्र है और कुमार्ग में स्थित आत्मा ही अपना शत्रु है।

आगमों में कहा भी गया है -

''अप्पा मित्तममित्तं च सुपट्ठिय दुपट्ठियो''

अर्थात् हमारी शुभाशुभ वृत्तियाँ और प्रवृत्तियां ही वास्तव में हमारे मित्र/अमित्र की दुनियां है। आत्म तत्व की एकता, समानता को समझकर ही आत्मस्वरूप के चिंतक, जैन संस्कृति के पालनकर्ता, जीव हिंसा वो भी सूक्ष्म हिंसा का दैनिक जीवन में परित्याग करते हैं। जीव-जगत् के साथ यह अभेदता का भाव मैत्री भावना का उत्कृष्ट स्वरूप है।

मैत्री भावना के मर्म को समझकर ही 'जैन' बनने का प्रयास प्रतिदिन जैन लोग करते हैं। राग-द्वेष रूपी कषायों (विकारों-प्रदूषण) के त्याग के अभिलाषी, मित्रवत् होकर किसी भी प्राणी के साथ हुए कटु व्यवहार के लिए उनसे प्रत्यक्ष/अपरोक्ष रूप से क्षमायाचना प्रतिदिन आत्मलोचना, प्रतिक्रमण करते हैं तथा अनुचित, अनुवांछित व्यवहारों से दूसरे को हानि, नुकसान, क्षोभ, द्वेष के लिए क्षमा मांगते हैं। उनका यह उद्घोष आगम सूत्र में वर्णित कथन पर आधारित है-

'मित्ती मे सव्वभूएसु'' (उत्तरा. 2/27)

अर्थात् सब जीवों के साथ मेरी मैत्री है। किसी के साथ भी वैरभाव नहीं है।

वस्तुतः मैत्री भावना ही शांति, सुरक्षा और आनन्द की पावन गंगा है, सरिता है। जिसमें अवगाहन कर हमारी आत्माएं पवित्र बन जाती है। इसके अतिरिक्त दूसरों के लिए मंगलकामना करना, दूसरों के हित की चिन्ता करना, परस्पर मैत्री का शुद्ध स्वरूप है। परस्पर मैत्री भावना से मानवता पोषित होती है। हृदय उदार एवं संवेदनशील बनता है। कठोर, क्रोधी भावनाएं, हिंसात्मक द्वेष की, विकारों की कलुषता स्वतः मिटती है। चारों ओर की प्रकृति सहज बनती है। हमारा स्वयं का आभामंडल भी पर्यावरण के अनुकूल बनता है। हम सभी चैतन्य के बीच है, पृथ्वी चैतन्य है, आकाश चैतन्य है, जल चैतन्य है, वनस्पति चैतन्य है, अतः समस्त प्राणियों के प्रति मित्रता का भाव होना चाहिए। (तत्त्वार्थ सूत्र 7.11)

जैन संस्कृति के दशवैकालिक आगम में (4, 11) कहा गया है कि **'जं सेयं तं समायरे'** अर्थात् जो श्रेष्ठ हो, उसका आचरण करें। यह तभी संभव है जब इन सूत्रों को हृदयगंम किया जाए, जोकि बिना संयम के सम्भव नहीं है।

मैत्री भावना से सोचने, विचारने का दृष्टिकोण बदल जाता है, विवेक जगता है। मन की कुटिलता, जटिलता मिटती है। स्वानुशासन पोषित होता है। मैत्री से क्रोध, मान, माया, मद और लोभ क्षीण होता है। स्वभाव से व्यक्ति संतुष्ट होकर सकारात्मक चिंतन करता है। सदाचार का अंकुरण होता है तब व्यक्ति हिंसक प्रतिक्रिया नहीं करता है। जैन जीवन शैली अपनाने से प्रकृति रूपी धरोहर को संरक्षित रखा जा सकता है।

मैत्री भावना - शांति, व्यवस्था, सह-अस्तित्व, समन्वय, सत्य, अभय, अहिंसा और अपरिग्रह का आधार बनकर पर्यावरण संरक्षण का पोषण करती है। तब मैत्री भावना से व्यक्तिगत उपभोग के बजाय सर्वलाभ, सर्वहित का चिंतन बढ़ता है। तब व्यक्तिगत स्वार्थ के बजाय समृष्टि का चिंतन करता है। संयम का विकास होता है। मैत्री भाव से अनुप्रेरित होकर समानता एवं अपरिग्रह की भावना बलवती होती है।

मैत्री भावना से कामैषणा, वित्तैषणा और सुतैषणा की भावना तिरोहित होती है। तब संकल्पजा, विरोधजा, आरम्भजा हिंसा का परित्याग स्वतः मन से व्यक्ति मैत्री भावना के कारण

करता है। मैत्री भाव से कर्त्तव्य-बोध जगता है, आत्मनुशासन का बीज अंकुरित होता है। मैत्री भावना सह-अस्तित्व को पोषित करती है कि मैं भी रहूँ तथा तुम भी रहो। मैत्री भावना पोषित होने में समस्या आग्रह की है। आग्रह के कारण पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता है। जीवन में अनाग्रह एवं सत्य आना चाहिए।

जैन आगम सूत्र कृतांग में बतलाया गया है -

'समया धम्म मुदाहरे मुणी''

अर्थात् 24वें जैन तीर्थंकर महावीर ने समता का धर्म एवं उसके महत्व को उजागर किया है। जैन संस्कृति अल्प परिग्रह, स्वतंत्रता एवं अनर्थ हिंसा के संदर्भ में सोचती है, विचारती है। जैन संस्कृति में 'अभाव- दुःख नहीं देता है किन्तु अतिभाव पागलपन और उन्माद देता है जोकि पर्यावरण के खिलाफ खतरा है। जरूरी है कि मन के मालिक बनें, मन को सेवक मानें। विवेकजन्य कृत्य करें।

पर्यावरण का दुश्मन है 'परिग्रह'। प्रदूषण की जड़ है परिग्रह। पर्यावरण चेतना के लिए जरूरी है 'अणुव्रत'। अणुव्रत हृदय शुद्धि की प्रक्रिया है। अतः मैत्री भावना ज्ञात से अज्ञात की, प्रदूषण से पर्यावरण संवर्धन की परिमित यात्रा है।

जैन संस्कृति में समस्त जगत् के प्रति मैत्री भाव सहयोगी है। 24वें तीर्थंकर महावीर ने कहा- **''मित्ति से सव्वभूएसु वैरं मज्झं ण केणइ।''** अर्थात् मेरा किसी से वैर नहीं, मेरी इस सारे जगत् से मैत्री है। यह सूत्र जितना गहरा होगा उतने ही शांति, शुद्धता, पवित्रता, सरलता, सहृदयता और मानवीयता पोषित होगी। जितना दूसरों के प्रति वैमनस्यता और दुर्भाव बढ़ेगा, उतनी ही अशांति और प्रदूषण बढ़ेगा। होता यह है कि जब व्यक्ति जगत के प्रति मैत्री के भाव संवेदित करता है तो वे भावनाएं दूसरे व्यक्ति को प्रभावित करती है। हम जो फेंकते हैं उसी को वापस (प्रतिक्रिया स्वरूप) झेलना पड़ता है। यह सारा जगत् इकोप्वाइंट (Eco Point) है। इसमें हम जो फेंकते है, वही हम पर वापस लौट-लौट कर आता है। **अतः प्राणी मात्र के प्रति समभाव रखे।** (दशवैकालिक सूत्र अ.4 गाथा 9)

जब हम किसी के प्रति घृणा का भाव रखते हैं, तब हम अपने आपको भीतर ही भीतर दुःख में, तनाव में, क्रोध में, पीड़ा में भरते हैं। लेकिन जब प्रेम और मैत्री तथा सहृदयता संजोते हैं तब हमारे भीतर समता और शांति पैदा होती है। जो स्वस्थ पर्यावरण का संर्वधन करती है।

पर्यावरण प्रदूषण से बचा जा सकता है ।

जीवन प्रतिध्वनि है। जो देगें, वही लौटकर वापस आयेगा। सुख देगें, सुख मिलेगा। दुःख देगें, दुःख मिलेगा। यही सत्य है।

समस्त जगत् के प्रति, प्रकृति के प्रति मैत्री भाव प्रगाढ़ करें। तब उपभोग के बजाय उपयोग करने से हम उतने ही शांत होते जायेगें। मैत्री भाव अगर सभी जन साध लें तो जीवन सरल, सहज, वीतरागी हो सकता है। जीवन कल्याणकारी एवं संवेदनशील तथा करूणा, मुदिता, वात्सल्य से परिपूर्ण हो सकता है। इसका भी अपना विज्ञान है, मनोविज्ञान है। एक्शन का रिऐक्शन होता है। चित्त में जितना वैमनस्य और जितना दूसरों के प्रति दुर्भाव होगा उतने ही हम ज्यादा अशांत होगें। ज्यादा तनाव, कुण्ठा, दुःख, पीडा, अवसाद तथा कषाय में जीयेगें। तब स्वतः ही पर्यावरण बाह्य एवं आन्तरिक, दोनों ही विनष्ट होगें। अतः मैत्री भाव एवं भावना रखने से पर्यावरण बोध संभव है। यदि हम कल्पना करें कि सारा जगत् हमारा मित्र है, सारे पशु-पक्षी, पौधे, जीव-जन्तु एवं समस्त प्राणी हमारे मित्र हैं तब मानव के भीतर कुण्ठा, दाह, ईर्ष्या, वैमनस्य तिरोहित होंगे। परस्पर स्नेह, कारूण्य एवं सहोदर भाव से पर्यावरण चेतना का संरक्षण होता चला जायेगा । ❖❖

सफलता की कुंजी ...

हमारी कमजोरियाँ हमारी योग्यताओं को कम नहीं कर सकतीं। हमें अपनी कमजोरियाँ स्वीकार करनी चाहिए, लेकिन हमें उनका इस्तेमाल करना चाहिए ताकि हम खुद को सशक्त बना सकें।

सफलता पाने के लिए हमें निरंतर प्रयास करना चाहिए। हमें अपने सपनों की प्राथमिकता देनी चाहिए और उन्हें हासिल करने के लिए हमेशा मेहनत और समर्पण दिखाना चाहिए। चाहे जीवन के किसी भी क्षेत्र में हो, संघर्ष और परिश्रम हमारी सफलता की मुख्य चाबी होती हैं। हमारे अंदर छिपी हुई क्षमताओं को पहचानना और उन्हें सही दिशा में उपयोग करना हमें सफलता तक पहुंचा सकता है। ❖❖

दीवानजी की अहिंसा

- श्री नेमीचंद धाकड़ जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य-जैन कॉन्फ्रेंस, उदयपुर (राजस्थान)

जब जयपुर राजघराना था, तब वहाँ अनेक व्यक्ति दीवान हुए। साहू, नानू, लाल, गोधा, राव, कृपाराम, संघी, झूथाराम, रामचंद्र, छाबड़ा, अमरचंद्र, बालचंद्र, रतनचंद्र, रामचंद्र आदि प्रमुख रहे हैं। ये सभी दीवान जैन थे, जो कुशल प्रशासक, चतुर राजनीतिज्ञ और बड़े कर्तव्य परायण थे। घटना अमरचंद्र के समय की है। एक दिन जयपुर महाराज ने कुछ दरबारियों के बहकावे में आकर चिड़ियाघर के बब्बर शेर के भोजन की जिम्मेदारी दीवान अमरचंद्र को सौंप दी।

महाराज के इस आदेश से दीवान अमरचंद्र के सामने धर्म संकट उत्पन्न हो गया। वे माँस की व्यवस्था कर नहीं सकते थे। वे समझ गए कि जरुर इसमें किसी दरबारी का हाथ है। आखिरकार दीवानजी अपना कर्त्तव्य निभाने को तैयार हुए और एक बड़े से थाल में शेर का भोजन भरकर और उसे कपड़े से ढ़ंककर चिड़िया घर पहुँच गए। उन्हें देखकर सभी आश्चर्यचकित थे। शेर के पिंजरे का द्वार खुलवाया गया। शेर भूखा था, जोर से दहाड़ा। दीवानजी कर्त्तव्य पथ पर प्राण देने के लिए तैयार थे।

वे थाल लेकर, निर्भय होकर आगे बढ़े। थाल ज़मीन पर रखा और कपड़ा हटाकर शेर से करुण स्वर में बोले, 'हे वनराज, तुम्हें भोजन चाहिए तो ये जलेबियां रखी हैं और यदि माँस ही चाहिए, तो मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूँ। मैं माँस नहीं दे सकता, यह मेरे धर्म का प्रश्न है। तुम चाहो तो तुम्हारा पेट इन जलेबियों से भी भर सकता है।'

कहते हैं कि शायद शेर दीवानजी के हृदय की भाषा समझ गया और अगले ही पल वह जलेबी खाने लगा। जयपुर राज्य में लोगों ने पहली बार शेर को जलेबी खाते हुए देखा और उनके मुँह से बरबस ही फूट पड़ा, हृदय की भाषा पशु भी समझते हैं। जब महाराज को उपरोक्त घटना का पता चला तो वे भी दीवानजी की अहिंसा और कर्त्तव्य निष्ठा के प्रति नतमस्तक हो गए।

❖❖

भारतीय पुरातत्व द्वारा 1969-70 में अयोध्या में खुदाई के दौरान प्राप्त जैन प्रतिमाएँ

अयोध्या पुरातत्व संग्रहालय में संग्रहित प्रथम जैन तीर्थंकर ऋषभदेव भगवान की 10वीं सदी की प्राचीन प्रतिमा और मस्तक के ऊपर 22वें जैन तीर्थंकर नेमिनाथ भगवान धारण किये । यक्षिणी अम्बिका की 14-15वीं सदी की प्राचीन प्रतिमा व आसपास के क्षेत्र में 10वीं और 14-15 सदी में जैन धर्म और जैन मंदिर के प्रचलन का प्रमाण है।

अयोध्या में प्रसिद्ध ''हनुमान गढ़ी'' के पश्चिम में खुले क्षेत्र में पुरातात्त्विक स्थलों की खोज हेतु वरिष्ठ इतिहासकार प्रो. बी. बी. लालजी के नेतृत्व में टीम द्वारा हुई खुदाई में प्राप्त केश रहित कायोत्सर्ग मुद्रा में ''जैन केवली प्रतिमा'' ई.पू. 400 वर्ष (लगभग 2400 वर्ष पूर्व मौर्यकालीन) प्राचीन जैन प्रतिमा होने का अर्थ आस-पास जैन मंदिर व अन्य प्रतिमाओं के भूगर्भ में होने की पूर्ण संभावना है।

''टाइम्स ऑफ इंडिया'' के अनुसार यहाँ सिर्फ जैन प्रतिमाएं मिली हैं और किसी देवी-देवता की नहीं। भूगर्भ में प्रचुर मात्रा में जैन पुरातत्व भी अवश्य होगा, जिसे आज खोजे जाने की अत्यंत आवश्यकता है। काफी जैन अवशेष और प्रतिमाएं मिली है अयोध्या से परन्तु क्यों छिपाया जा रहा है, जैन इतिहास को? सरकार से और ASI से सवाल है कि क्यों जैन इतिहास को सामने नहीं लाया जा रहा है?

❖❖

महिला पद पर कार्य करने में समस्या व निदान

- सौ. पुष्पा गोखरु जैन, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा - जैन कॉन्फ्रेंस

एक महिला किसी पद पर कार्य करती है, तो उसे किन दिक्कतों का सामना करना पड़ता है? उसका उपाय क्या है?

वर्षों से नारी को गृह गोचरी, गृह लक्ष्मी कहा जाता रहा है। मध्यकाल में तो वे केवल गृह दासी बन गयी, जिसे मर्यादा व लाज शर्म में इतना संकुचित बना दिया कि वे घूंघट व घर की दीवारों में ही सिमट कर रह गई। उनके मानसिक, बौद्धिक विकास पर तालेबंदी जड़ दी गई। उनके भौतिक, आध्यात्मिक, आत्मिक, शारीरिक व प्रगति के क्षितिज घर की चौखट में समा गये।

एक समय परिवर्तन की हवा ने रुख बदला और 'अबला' कहलाने वाली नारी में भी आत्मविश्वास, आत्मशक्ति व आत्मानुरंजन के भावों ने ज्वार का जोश पकड़ा। उनके लिए शिक्षा का प्लेटफॉर्म खुला, विशाल कार्यक्षेत्र का मैदान और विकास की मैराथन दौड़ शुरु हुई। ''पक्षी पंखों से नहीं उड़ते, हौसलों से वे वायुमंडल को चीर कर आगे बढ़ते हैं।'' अब तो नारियों की चहुंदिशी प्रगति को निमंत्रण मिलने लगा। आज नारी बहुमुखी क्षेत्रों में अपने-अपने विकास व गौरव की आत्मकथा स्वयं लिख रही है, लेकिन विकास की पगडंडी पर उनके सामने कई प्रश्नचिन्ह खड़े हो जाते हैं। उनके 'रोड़ मेप' को चीरने वाले कई अनैतिक, दुराचारी, अशिष्ट व्यक्ति उनके बढ़ते कदम के सामने वाग्शूल बिछाते रहते हैं। वे अपने वाग्वाणों से नारी की अस्मिता को छेदने के लिए कई रुपों में जैसे आलोचकों, मसखरों के रुप में प्रकट होते हैं। उनमें ईर्ष्या व अपने सामने उनकी उन्नति होते हुए देखने की सामर्थ्य नहीं होती। उनकी आँखों में अपशकुनि छाया का वास रहता है। मार्ग, कार्यक्षेत्र या अन्य समारोह स्थल क्रीड़ा क्षेत्र बनते हैं। ये ही स्थल उनके षडयन्त्रों की दुदुंभी बजाते हैं। जब नारियों का शंखनाद सोया रहता है, तब जगह-जगह उनको प्रताड़ित होना पड़ता है।

कुछ लोग किसी पद पर काम करने वाली महिलाओं से उनके अधिकार क्षेत्र में अपना काम करवाना चाहते हैं, ऐसे आदमी गुलाब जामुन की मीठी वाणी में चमचागिरी करने से नहीं चूकते, परंतु कामकाजी या किसी जिम्मेवार पद पर अपनी सार्थक भूमिका निभानी चाहिए।

Even the Devil अर्थात् शैतान भी संतों की मीठी वाणी में बोल सकते हैं। ऐसे लोग पदनिष्ठ महिलाओं से अपना काम निकालने के लिए कई हथकंडे अपनाते हैं जैसे - रिश्वत, चमचागिरी, किसी से फोन के माध्यम से, धमकी से या अनर्गल प्रचार, बदनामी का डर दिखाकर। कच्चे मनोबल वाली पदासीन महिला उनके झाँसे में आ जाती है और ऐसे लोगों के साम-दाम-दंड-भेद के षडयंत्र में फँसकर अनैतिक गैर कानूनी कार्य कर बैठती हैं, जिसका हर्जाना उसे बाद में भुगतना पड़ता है। जैसे - आत्मा की अवमानना से चिन्ता सताना, पकड़े जाने पर कानूनी शिंकजा आदि।

लोगों के पैदा किये इस चक्रव्यूह से बचने के लिए महिलाएँ नौकरी छोड़ने, ट्रांसफर कराने व अन्य तरीके से बचना चाहती है, लेकिन ये सर्वोपरी उपाय नहीं है। ऐसी स्थिति में उन्हें 'महिला मंडल' या महिला संरक्षण समिति के सामने अपनी समस्या रखनी चाहिए, पुलिस विभाग का सहारा लेना चाहिए या अकेले ही स्वयं के बल पर इन समस्याओं से निपटने का साहस या अन्य साहसिक संस्थाओं में अपनी शिकायत दर्ज करनी चाहिए। ऐसे मनचलों से निपटने के लिए आत्मबल एक सबसे बड़ा उपाय है। कई उदाहरण देखे गये हैं कि साहसी सदारुढ़ कई नारियों ने अपनी समस्याओं का निस्तारण स्वयं की चतुरता, बार फुटिंग शैली या अन्य तरीकों से किया है और ऐसे मनचलों, दमन कर्ताओं, चुनौती देने वालों या बदनाम करने वालों को अच्छा सबक सिखाया है।

इस संदर्भ में, मैं नारी एकता की भी वकालत करती हूँ। सामूहिक एकता कार्यक्षेत्र या मार्ग में आने वाली आँधियों को उलटने का कार्य कर सकती हैं।

नारी शक्ति व जागरण स्वयं अपना सम्बल बन सकता है। वह स्वयं समस्याओं के ज्वार के लिए तटबंध बन सकती

है। समस्याएँ तब सर पर हावी हो जाती हैं, जब महिलाएँ अपनी कमजोरी, दब्बूपन, नासमझी आदि से उन्हें निमंत्रण दे बैठती हैं। समस्याओं का मुख मोड़ने के लिए उनके पास आत्मबल, जुझारु प्रवृति सुउपाय, आत्मबल व एकता हो।

Point - Suggestions

1. रास्ते में मनचलों का सामना।

2. कार्यक्षेत्र (ऑफिस आदि) में प्रबंधकों, व्यवस्थापकों व बॉस की।

3. अन्य महिलाओं - घर, बाहर, ऑफिस, घर की भीतरी या आभ्यांतरिक समस्या।

4. आप बीती समस्या - घबराहट, दब्बू, प्रवृति मर्यादा व लाज-शर्म यानी फंसाने का व्यूह या घेरा।

5. सामाजिक प्रताड़ना तथा षडयंत्रों का दुष्ट सर्कल, गलत वीडियो वायरल करने की चेतावनी आदि।

6. कभी-कभी मंत्री-पुत्रों, उच्च अधिकारियों का वास्ता या धमकी या ट्रांसफर कराने की धमकी।

7. आपसी रिश्तों के माध्यम से अपना स्वार्थ या काम पूरा करवाने की चेष्टा।

8. रिश्वत का जाल।

9. अकेली पदासीन महिला के आगे वाग्वाणों, छेड़छाड़ व व्यंग्य दृष्टिकोण।

समाधान -

कोई ऐसी समस्या नहीं होती, जिसका समाधान नहीं होता।

1. महिला संगठनों की आवश्यकता।

2. पुलिस कार्यवाही समाज-कंटको के खिलाफ।

3. स्वयं को अबला मात्र न समझकर, अपने मनोबल या साहस से युद्ध स्तर पर सामना करने का साहस।

4. पुलिस का सहयोग।

5. ऑफिस, कार्यक्षेत्र में अन्य कार्यकर्ती महिलाओं के एकता (संगठन का शंखनाद)।

6. ऐसे अनाचारी लोगों के खिलाफ अवाज उठाना।

7. जैसे को तैसे वाला सबक।

इस संदर्भ में -

नारी तेरे हाथों में व्रज लेखनी,
तेरी वाणी षडयंत्र मेदिनी,
तेरी आँखों में क्रांत झलक,
तेरे पांवों में धरा-फलक,
तू खुद की निर्माता,
तुझसे है सौभाग्य का नाता,
नारी तू है बड़भागिनी ।

❖❖

समझदारी ...

होटल पर बैठे एक शख्स ने दूसरे से कहा यह होटल पर काम करने वाला बच्चा इतना बेवकूफ है कि मैं पाँच सौ और पचास का नोट रखूंगा तो यह पचास का ही नोट उठाएगा और साथ ही बच्चे को आवाज दी और दो नोट सामने रखते हुए बोला इन में से ज्यादा पैसों वाला नोट उठा लो, बच्चे ने पचास का नोट उठा लिया।

दोनों ने कहकहे लगाए और बच्चा अपने काम में लग गया पास बैठे शख्स ने उन दोनों के जाने के बाद बच्चे को बुलाया और पूछा तुम इतने बड़े हो गए तुम को पचास और पाँच सौ के नोट में फर्क नही पता। यह सुनकर बच्चा मुस्कुराया और बोला - यह आदमी अक्सर किसी न किसी दोस्त को मेरी बेवकूफी दिखाकर एन्जॉय करने के लिए यह काम करता है और मैं पचास का नोट उठा लेता हूँ, वह खुश हो जाते है और मुझे पचास रुपये मिल जाते है। जिस दिन मैंने पाँच सौ उठा लिया उस दिन यह खेल भी खत्म हो जाएगा और मेरी आमदनी भी।

जिन्दगी भी इस खेल की ही तरह है हर जगह समझदार बनने की जरूरत नही होती, “जहाँ समझदार बनने से अपनी ही खुशियाँ मुतासिर होती हो वहाँ बेवकूफ बन जाना समझदारी है।” ❖❖

पापा की परी होती हैं बेटियाँ

- **श्रीमती मायाजी छल्लाणी जैन,** राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्या-जैन कॉन्फ्रेंस, चेन्नई (तमिलनाडु)

पापा आफिस में पहुंचे ही थे कि स्कूल से फोन आया! सुरीली आवाज में एक मैम बोली - ''सर! आप की बेटी जो सेकंड क्लास में है, मैं उसकी क्लास टीचर बोल रही हूँ। आज पैरेन्ट्स टीचर मीटिंग है। रिपोर्ट कार्ड दिखाया जाएगा। आप अपनी बेटी के साथ टाईम से पहुँचे।''

बेचारे पापा क्या करते। आदेश के पाबंद, तुरंत छुट्टी लेकर, घर से बेटी को लेकर स्कूल पहुँच गए।

सामने गुलाबी साड़ी पहने, छोटी-सी बिंदी लगाए, नयी उम्र की, गोरी-सी लेकिन बेहद तेज मैम बैठी थी।

पापा कुछ बोल पाते कि इससे पहले लगभग डाँटते हुए बोली - ''आप अभी रुकिए, मैं आप से अलग से बात करूंगी।''

पापा ने बेटी की तरफ देखा और दोनों चुपचाप पीछे जाकर बैठ गए। ''मैम बहुत गुस्से में लगती हैं'' - बेटी ने धीरे से कहा।

''तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड तो ठीक है'' - उसी तरह पापा भी धीरे से बोले।

''पता नहीं पापा, मैंने तो देखा नहीं।'' - बेटी ने अपना बचाव किया।

''मुझे भी लगता है, आज तुम्हारी मैम तुम्हारे साथ मेरी भी क्लास लेंगी।'' - पापा खुद को तैयार करते हुए बोले।

वो दोनों आपस में फुसफुसा ही रहे थे कि तभी मैम खाली होकर बोलीं - ''हाँ! अब आप दोनों भी आ जाइए।''

पापा किसी तरह उस शहद भरी मिर्ची-सी आवाज के पास पहुंचे और बेटी पापा के पीछे छुप कर खड़ी हो गई।

मैम - देखिए! आप की बेटी की शिकायत तो बहुत है लेकिन पहले आप इसकी परीक्षा की किताबें और रिपोर्ट देखिए और बताइए इसको कैसे पढ़ाया जाये । मैम ने सारांश में लगभग सारी बात कह दी । पहले इंग्लिश की कॉपी देखिए, फेल है आप की बेटी।

पापा ने एक नजर बेटी को देखा, जो सहमी-सी खड़ी थी, फिर मुस्कुरा कर बोले अंग्रेजी एक विदेशी भाषा है। इस उम्र में बच्चे अपनी ही भाषा नहीं समझ पाते।

इतना मैम को चिढ़ने के लिए काफी था। मैम - अच्छा और ये देखिए! ये हिंदी में भी फेल है। क्यों ?

पापा ने फिर बेटी की तरफ देखा, मानो उसकी नजरें सॉरी बोल रही हो। पापा - हिंदी एक कठिन भाषा है। ध्वनि आधारित है। इसको जैसा बोला जाता है, वैसा लिखा जाता है। अब आप के इंग्लिश स्कूल में कोई शुद्ध हिंदी बोलने वाला नहीं होगा।

पापा की बात मैम बीच में काटते हुए बोली, अच्छा तो आप और बच्चों के बारे में क्या कहेंगे ?

इस बार पापा मैम की बात काट कर बोले - और बच्चे क्यों फेल हुए ये मैं नहीं बता सकता, मैं तो...

मैम चिढ़ते हुए बोली - आप पूरी बात तो सुन लिया करो, मेरा मतलब था कि और बच्चे कैसे पास हो गये, फेल नहीं। अच्छा छोड़ो ये दूसरी कॉपी देखो आप। आज के बच्चे जब मोबाइल और लैपटॉप की रग-रग से वाकिफ हैं तो आप की बच्ची कम्प्यूटर में कैसे फेल हो गई?

पापा इस बार कॉपी को गौर से देखते हुए, गंभीरता से बोले - ये कोई उम्र है कम्प्यूटर पढ़ने और मोबाइल चलाने की। अभी तो बच्चों को फील्ड में खेलना चाहिए।

मैम का पारा अब सातवें आसमान पर था वो कॉपियां समेटते हुए बोली - ''सांइस की कापी दिखाने से तो कोई फायदा है नहीं क्योंकि मैं भी जानती हूँ कि आल्बर्ट आइंस्टाइन बचपन में फेल होते थे।''

पापा चुपचाप थे। मैम ने फिर शिकायत आगे बढ़ाई - ''ये क्लास में अनुशासन में नहीं रहती, बात करती है, शोर करती है, इधर-उधर घूमती है।

पापा - मैम को बीच में रोक कर, खोजती हुई निगाह से बोले - वो सब छोड़िए! आप कुछ भूल रहीं हैं। इसमें गणित की कापी कहाँ है। उसका रिजल्ट तो बताइए।

मैम - (मुंह फेरते हुए) हाँ, उसे दिखाने की जरूरत नहीं है।

पापा - फिर भी, जब सारी कॉपियां दिखा दी तो वही

क्यों बाकी रहे।

मैम ने इस बार बेटी की तरफ देखा और अनमने मन से गणित की कॉपी निकाल कर दे दी।

गणित का नम्बर और विषयों से अलग था - 100%

मैम अब भी मुँह फेरे बैठी थीं लेकिन पापा पूरे जोश में थे।

पापा - हाँ तो मैम, मेरी बेटी को इंग्लिश कौन पढ़ाता है?

मैम - (धीरे से) मैं।

पापा - और हिंदी कौन पढ़ाता है।

मैम - ''मैं''

पापा - और कम्प्यूटर कौन पढ़ाता है?

मैम - वो भी ''मैं''

पापा - अब ये भी बता दीजिए कि गणित कौन पढ़ाता है?

मैम कुछ बोल पाती, पापा उससे पहले ही जवाब देकर खड़े हो गए।

पापा -''मैं''

मैम - हाँ पता है।

पापा - तो अच्छा टीचर कौन है? दुबारा मुझसे मेरी बेटी की शिकायत मत करना। बच्ची है, शरारत तो करेगी ही।

मैम तिलमिला कर खड़ी हो गई और जोर से बोली- ''मिलना तुम दोनों आज घर पर, दोनों बाप-बेटी की अच्छे से खबर लेती हूँ'' !

पापा की परी होती हैं - बेटियाँ । ❖❖

सद्भाग्य से मिलती है - संस्कारी संतान

- **श्री महेन्द्रकुमार मुणोत जैन,** राष्ट्रीय मंत्री-जैन कॉन्फ्रेंस, बैंगलोर (कर्नाटक)

लगभग दस साल का अखबार बेचने वाला बालक एक मकान का गेट बजा रहा है।

(शायद उस दिन अखबार नहीं छपा होगा)

मालकिन ने बाहर आकर पूछा - क्या है ?

बालक - ''आंटीजी! क्या मैं आपका गार्डन साफ कर दूँ?

मालकिन - नहीं, हमें नहीं करवाना।

बालक - हाथ जोड़ते हुए दयनीय स्वर में.. ''प्लीज आंटीजी! करा लीजिये न, अच्छे से साफ करूंगा।

मालकिन - द्रवित होते हुए 'अच्छा ठीक है, कितने पैसे लेगा?'

बालक - पैसे नहीं आंटीजी, खाना दे देना।

मालकिन - ओह ! आ जाओ अच्छे से काम करना।

(लगता है बेचारा भूखा है पहले खाना दे देती हूँ - मालकिन बुदबुदायी)

मालकिन - अय लड़के! पहले खाना खा लो फिर काम करना।

बालक - नहीं आंटीजी! पहले काम कर लूँ फिर आप खाना दे देना।

मालकिन - ठीक है, कहकर अपने काम में लग गयी।

बालक - एक घंटे बाद ''आंटीजी! देख लीजिए, सफाई अच्छे से हुई की नहीं।''

मालकिन - अरे वाह ! तूने तो बहुत बढ़िया सफाई की है, गमले भी किनारे से जमा दिए। यहाँ बैठ, मैं खाना लाती हूँ।

जैसे ही मालकिन ने उसे खाना दिया, बालक जेब से पन्नी निकाल कर उसमें खाना रखने लगा।

मालकिन - भूखे पेट काम किया है, अब खाना तो यहीं बैठकर खा लो। जरूरत होगी तो और दे दूंगी।

बालक - नहीं आंटीजी! मेरी बीमार माँ घर पर है। सरकारी अस्पताल से दवा तो मिल गयी है पर डॉक्टर साहब ने कहा है ''दवा खाली पेट नहीं खाना है।''

मालकिन रो पड़ी और अपने हाथों से मासूम को उसकी दूसरी माँ बनकर खाना खिलाया। फिर उसकी माँ के लिए रोटियाँ बनाई और उसके साथ घर जाकर उसकी माँ को भी भरपूर भोजन दे आयी।

साथ ही कह आयी कि - ''बहन! आप तो बहुत अमीर हो, जो दौलत आपने अपने बेटे को दी है वो हम अपने बच्चों को नहीं दे पाते हैं।' बहुत नसीब वालों को ही ऐसी संतान मिला करती है। ❖❖

जमीन रह गई - जमीर चला गया

- सौ. रीमा महेन्द्र ठाकुर, झाबुआ (मध्य प्रदेश)

हरिया, अपनी पत्नी के साथ, कन्धे पर अपनी इकलौती बेटी को बिठाये लम्बे डग भरता चला जा रहा था। अगर आज छोटे मालिक चले गये तो, बड़े मालिक से नजरे कैसे मिला पायेगा। छोटे मालिक के बड़े एहसान है उस पर। इस साल तो टिड्डियों के दल ने पूरी फसल चौपट कर दी थी, भला हो छोटे मलिक का जो समय रहते ही अन्य फसलों को सुरक्षित कर दिया था। जिससे आस-पास के किसानों को दुर्भिक्ष नहीं देखना पड़ा। हवेली दूर से ही नजर आ रही थी। हरिया ने अपनी टूटी-फूटी चप्पल उतार ली और साथ में लायी हुई थैली में डाल ली, आगे का रास्ता उसे नंगे पैरों ही तय करना था।

अब तक हरिया ने अपनी बेटी रधिया को नीचे उतार दिया था। रधिया पक्की सड़क को अचम्भे से देख रही थी। धूप से सड़क अभी भी गरम थी। रधिया के पैर झुलस रहे थे। रधिया की माँ से उसकी वेदना नहीं देखी गई, लपक कर उसने बिटिया को गोदी में उठा लिया और लम्बे डग भरते हुऐ हवेली की ओर चल पड़ी। बड़े मलिक सामने ही बैठे दिखाई दिये, हरिया का मन सिहर गया। हरिया की नजरें छोटे मालिक को ढूढ़ँने लगी।

मालिक - अरे आओ भाई हरिया, किसे ढूँढ रहे हो?

हरिया - अचकचा गया, उसे लगा जैसे बड़े मालिक ने उसकी चोरी पकड़ ली हो। हरिया बड़े मालिक के पैरों पर गिर पड़ा, पाय लागू मालिक।

हां-हां ठीक है। - बड़े मालिक तल्खी से बोले। मेहरारू और बिटिया भी साथ में लाये हो।

अब तक कोने में खड़ी हरिया की पत्नी, रधिया को सीने से चिपका कर और भी सहम गई।

और बताओ हवेली का रास्ता कैसे भूल गये ? - बड़े मालिक की आवाज में गर्जना थी।

हारिया की आवाज हलक में फँस गई, वो डरते-डरते बोला, मालिक वो ज़मीन के...

पैसे लाये हो - इस बार मुनीम बीच में ही बोल पड़ा। छोटे मालिक ने बुलाया था।

छोटे मालिक के हिसाब से चलेंगे तो कुछ दिन में ही हम भी ऐसे भीख माँगते नजर आयेंगे। बड़े मालिक दहाड़े।

हॉर्न की आवाज के साथ सबकी नजरें उधर गेट की ओर उठ गई।

छोटे मालिक अपनी पत्नी के साथ उनकी ओर ही आ रहे थे।

हरिया के चेहरे पर उम्मीद की लाली छा गई।

छोटे मालिक ने आते ही बड़े मालिक के पैर छुए और खुशखबरी वाला कागज उनकी ओर बढ़ा दिया।

बड़े मालिक ने मुस्कुराते हुए, छोटी मालकिन की ओर देखा।

छोटी मालकिन का चेहरा शर्म से लाल हो गया। वो अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से जमीन को निहारे जा रही थी। मातृत्व से उनका मुखड़ा खिल गया था।

अरे हरिया ! सही समय पर आये तुम, आज बहुत बड़ी खुशी का दिन है। छोटे मालिक ने हरिया की जमीन के कागज हरिया को सौंप दिये।

हरिया उनके पैरों में गिर पड़ा। मालिक, ये अहसान जीवन देकर भी न चुका पाऊँगा।

इसमें एहसान कैसा? जमीन तुम्हारी थी। तुम्हें वापस दे दी, रही एहसान की बात तो उतारने का मौका भी है।

हरिया टुकुर-टुकुर उनकी ओर देखने लगा।

प्रभाजी के पास अपनी पत्नी को कुछ दिनों के लिए छोड़ दो। घर में कोई और है नहीं। प्रभाजी को कुछ मदद मिल जायेगी और हम भी बेफिक्र हो जाएंगे।

बड़े मालिक और मुनीमजी कुछ न बोले।

प्रभाजी - बच्ची भूखी होगी, इन दोनों को अन्दर ले जाओ। हरिया कृतज्ञता से छोटे मालिक को देखता रहा।

कजरी ने पहली बार हवेली में पैर रखा था। रधिया की ऊँगली पकड़े, धीरे कदमों से मालकिन के पीछे चल रही थी।

देखते-देखते महीनों निकल गये, बच्चे की किलकारियों से हवेली का सूनापन खत्म हो गया।

आज कजरी का बदन बुखार से तप रहा था। वो हवेली न जा सकी थी। रधिया का भूख से बुरा हाल था। जैसै-तैसे कुछ रोटियाँ बनाई हरिया ने। रधिया ने ज़िद पकड़ ली कि रोटी हवेली वाले आचार से खायेगी। बेटी की ज़िद से हार गया हरिया।

हरिया ने सोचा कि कुछ मदद भी कर देगा और आचार भी माँग लेगा। मालकिन बहुत अच्छी है, मना नहीं करेगी। हरिया सोचते-सोचते हवेली कब पहुँच गया, पता ही नहीं चला।

अरे हरिया, अच्छा हुआ तुम आ गये। अच्छा, कजरी की तबियत कैसी है?

अभी ताप तेज है, मालकिन। कल शहर जाकर बता आना। हरिया का मन हुआ आचार माँग ले पर हिम्मत न हुई। सारा काम खत्म हो गया पर बेटी का चेहरा घूमता रहा हरिया की आँखों में, बापू आचार लाना।

अरे हरिया, तुम अभी गये नहीं। मालकिन एक बात.. इसके आगे हरिया की जुबान तालु से चिपक गई।

हरिया, जाने से पहले आचार की बरनी नीचे ले आना। धूप में रखी थी कजरी ने, मौसम भी ठीक नहीं है, आचार खराब हो जायेगा।

हरिया की आँखो में चमक तैर गई वह छत पर पहुँच गया। उसने बरनी खोली, आचार की खुशबू सब ओर फैल गई। उसने कद्दू के दो चार पत्ते तोड़ लिए, जिस की बेल छत पर चढ़ आयी थी। थोड़ा-सा आचार निकाल पत्ते में बाँधकर, अंगोछे में लपेट लिया। तभी किसी की पदचाप सुनाई दी। हरिया डर गया, कहीं उसकी चोरी न पकड़ी जाए, झट से उसने अगोछा, घर के पीछे फेंक दिया। फिर झाँककर देखा, वहाँ कोई नहीं था। हरिया फिर वापस आया, उसने पोटली देखने की कोशिश की, वो पसीना-पसीना हो गया। आचार की पोटली, दीवार में उग आयी झड़ियों मे फँसकर लटक रही थी और उसे मुँह चिढ़ा रही थी। हरिया सन्न रह गया, अब वो क्या करे। बहुत कोशिश की पर वो पोटली नहीं निकाल पाया।

सुबह वह पकड़ा जायेगा, उसके मन में बुरे-बुरे ख्याल आने लगे। छोटे मालिक क्या सोचेंगे, धिक्कार है उसे, वह आत्म-ग्लनि से भर उठा। उसे उसका जीवन निरार्थक लगने लगा । वह कपड़े सूखाने की रस्सी खोलने लगा और कुछ ही देर में हरिया का शरीर हवा में तड़पकर झूल रहा था। हरिया ने आत्म-ग्लनि के कारण फांसी लगाकर ऐहिक जीवनलीला समाप्त कर दी ।

सुबह सबकी नजरें हरिया के बेजान जिस्म को हवा में लटकते देख रही थी पर कोई नहीं जान पाया की हरिया ने ऐसा क्यों किया ? हरिया का शरीर उसकी ज़मीन की मिट्टी में एक हो गया था पर वह पोटली अभी भी मुहँ चिढ़ा रही थी।

कई ऋतुएँ बीत गई, अब वह पोटली भी जर्जर हो गई और फिर एक दिन हवा के थपेड़ों ने उसे भी जमीदोंज कर दिया। ❖❖

स्पष्टीकरण ...

सभी को सादर प्रणाम, जय जिनेन्द्र !

जैन भवन, नई दिल्ली के सांस्कृतिक हॉल में आयोजित निजी आयोजन के संबंध में एक वीडियों किसी भी संस्था के आर्थिक विकास में बाधा डालने वाले महानुभावों द्वारा सोशल मीडिया पर वायरल किया जा रहा है। वर्तमान परिस्थिति में देशभर में स्थित जैन समाज के हजारों स्थान, भवन, दादावाड़ी आदि गुणीजनों, महात्माओं की प्रेरणा स्मरण में निर्मित धाम, भवन, केंद्र आदि के सुचारू संचालन संवर्धन के निमित्त आर्थिक सहयोग प्राप्ति हेतु इन स्थलों को विशेष आयोजनो, कार्यक्रमों हेतु उपलब्ध कराए जाते हैं, जिससे संस्थाओं के कुशल संचालन हेतु सहयोग राशि प्राप्त होती है।

सामाजिक धार्मिक संस्थाओं को आज के परिप्रेक्ष्य और आवश्यकताओं को देखते हुए उनकी मूल जरूरतों की पूर्ति हेतु कुछ ना कुछ कार्य करना आवश्यक हो जाता है, दूसरे के प्रति निर्भरता की जगह बेहतर है हम स्वयं निर्भर बनें। अतः इस विषय के पॉजीटिव पहलू पर सभी को ध्यान देना चाहिए। सजाज के सभी भवीजनों से निवेदन है कि इस विषय पर सकारात्मकता का परिचय दें।

- संपादक मंडल

''स्वाध्याय'' एक आत्मानुभूति

- **सौ. शुभांगी मनोजकुमार कात्रेला जैन,** निगडी, पुणे (महाराष्ट्र)

प्रतिबिंब देखने के लिए दर्पण जरुरी है ।
साधक के लिए गुरु-चरणों में अर्पण जरुरी है ।।
आत्म-धन पाने के लिए शुद्धाचरण जरुरी है ।
'स्व' में 'स्व' के अवलोकनार्थ 'स्वाध्याय' जरुरी है ।।

जिस प्रकार सूर्य की सुनहली किरणें धरती को स्पर्श करते ही, अन्धेरा दूर हो जाता है। वैसे ही प्रभु का, गुरु का स्मरण हमें ज्ञान का प्रकाश देता है। प्रकृति हर रोज सुबह पृथ्वी पर सुख-दुख के कॉइन भेजती है, जिसके हाथ सुख का कॉइन आता है, वे सुख और आनंद लेते हैं। ये स्वाध्याय शिविर हम सबके लिए ज्ञान, सुख, आनंद का कॉइन है जिसके द्वारा हम अपने अन्तर् मन की ऊर्जा को प्रभावित कर सकते हैं। आज हम सब ''मोबाईल मैन ऑन द लाईन'' हो गये हैं। आज हमारे एंड्रॉयड मोबाईल में सब सिस्टम अपडेट होती है, वैसे ही हमारा ज्ञान, हमारी लाइफ स्टाईल सिस्टम भी अपडेट होनी चाहिए, जो इस शिविर से निश्चित रूप से हो गई है। हम जो भी साधना करते हैं वो आत्मकल्याण के लिए हो। अरिहंत की भक्ति से सद्गुरु की प्राप्ति होती है। सद्गुरु की कृपा से साधना मिलती है। साधना करने से व्यक्ति साधक बनता है। साधक अंत में एक दिन कर्म रहित हो, सिद्ध बन जाता है। तो क्यों न हम साधक के माध्यम से सिद्ध बनने का प्रयास करें।

'स्व' का अध्ययन करना, स्वाध्याय एक आत्मानुभूति है, याने अपनी अंतर् आत्मा में झाँककर अपने आपको देखाना है। स्वयं के द्वारा स्वयं का अध्ययन ही स्वाध्याय है। आत्मचिंतन, आत्मसमीक्षा, सद्शास्त्रों का मर्यादापूर्वक अध्ययन करना, विधिसहित श्रेष्ठ पुस्तकों का अध्ययन करना स्वाध्याय है। आत्म-कल्याण के लिए सिद्धि का सफर तय करने के लिए स्वाध्याय हमारे जीवन में अत्याावश्यक है। इससे हम कर्मशत्रुओं को असानी से जीत सकते हैं।

गणधर गौतम ने भगवान महावीर से पूछा, **''सज्झाइएणं भंते, जीवे कि जणयई भंते''**। स्वाध्याय की निष्पति क्या है? श्रमण भगवान महावीर ने फरमाया, **''सज्झाइएणं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ।''** स्वाध्याय करने से ज्ञानावरणीय कर्म क्षीण होता है। इसके अतिरिक्त सद्संस्कारों की प्राप्ति, ज्ञान एवं विनय की आराधना, मोक्ष की उपलब्धि, कुशल कर्मों का अर्जन, मोहनीय कर्म का विच्छेद ये सारे लाभ प्राप्त होते हैं। स्वाध्याय वह योग है जिसमें ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग का समन्वय है, जिससे हमें परमात्मा पद की प्राप्ति होती है।

धर्म ही वह कल्पतरु है, नहीं जिसमें याचना ।
धर्म ही चिंतामणि है, नहीं जिसमें चाहना ।।
धर्म-तरु से याचना बिन, पूर्ण होती कामना ।
धर्म चिंतामणि है, शुद्धात्मा की चाहना ।।

हीरा याने डायमंड जब ज़मीन के पेट से बाहर निकाला जाता है, तब वह एक पत्थर की तरह होता है, उसकी किमत नहीं होती। जब उसके पैलू निकालते हैं तब वह चमकता है। तब जाकर उसकी कीमत होती है, बढ़ती है। वैसे ही हमारी असली पहचान - हमारी शिक्षा, संस्कार, हमारे अच्छे गुणों से होती है, सद्गुणों के विकास से होती है। हम सबके विकास की शुरुआत इस शिविर से ही हो गई है। भक्ति में बालक बनें, कर्म में युवा बनें और ज्ञान में वृद्ध बनें। यहीं जीवन की नीति को अपनाकर हम शुरुआत करें।

श्रुतधर्म और चारित्रधर्म - ये दो प्रकार के धर्म हैं। श्रुत याने ज्ञान और चारित्र याने आचार। अतः आचार के पूर्व विचार और क्रिया के पूर्व ज्ञान का होना आवश्यक है। **'पढमं णाणं तओ दया'** तो क्यों न हम स्वाध्याय के मार्ग से जीवन में आचार का ज्ञान लें। जब तक ज्ञान आचरण में नहीं आता, तब तक वह सशक्त नहीं होता।

जिसका जीवन करुणाशील मधुरता से ओत-प्रोत जन कल्याण करने की भावना से भरा होगा, उतना ही धर्म उसके जीवन में जीवन्त हो उठेगा, इसलिए सौ बात की एक बात यही है कि जीवन में स्वाध्याय को स्थान दो। *वीर प्रभु की वाणी, है सर्व जगत् की कल्याणी ।* निरंतर हम जिनवाणी-श्रवण, पठन-पाठन की आदत डालें तो हमें आत्मानंद रूप चिन्तामणि रत्न की अवश्य ही सम्प्राप्ति होगी ❖❖

जनवरी 2024 माह में सम्पन्न कार्यों की प्रगति रिपोर्ट ...

जैन कॉन्फ्रेंस की साधु-साध्वीवृन्द की सेवार्थ गठित राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना द्वारा समर्पण भावों के साथ जारी सेवा कार्यों का प्रेरणात्मक विवरण

बैंगलुरु (कर्नाटक) : जैन कॉन्फ्रेंस की अति महत्वपूर्ण वैय्यावच्च योजना द्वारा सेवा कार्यों को पूर्व की भांति जनवरी माह में भी गति प्रदान की गई है। वर्तमान में विहार चल रहे हैं और हर प्रांत की वैय्यावच्च समितियों ने स्थानीय श्रीसंघ और उनके पदाधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर सम्पूर्ण देश में वैय्यावच्च गतिविधियों के माध्यम से पूज्य गुरु भगवंतों के लिए सेवा कार्यों को आगे बढ़ाया जा रहा है। वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री अशोकजी रांका जैन, राष्ट्रीय योजना अध्यक्ष श्री जे. रतनचंदजी सिंघवी जैन के सामूहिक सद्प्रयासों से गुरु भगवंतों की वैय्यावच्च संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इस माह अप्रत्याशित कार्य हुए।

जनवरी माह में लगभग 92 के आस-पास सक्षम संघों ने सेवादारों को मासिक वेतन प्रदान किया। राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना की केन्द्रीय समिति ने विभिन्न सिंघाड़ों के सेवादारों को 10,02,000 रुपये की धनराशि वेतन के रूप में प्रदान की। संत-सतीवृंद के स्वास्थ्य हेतु दवाइयों के रूप में 1,13,800 रुपये की धनराशि योजना के माध्यम से खर्च कर एक कीर्तिमान स्थापित किया गया। इस प्रकार कुल 11,15,800 रुपये की धनराशि वैय्यावच्च गतिविधियों में जनवरी माह में सेवार्थ खर्च की गई।

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी, वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री अशोकजी रांका, योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे. रतनचंदजी सिंघवी, राष्ट्रीय मंत्री श्री मनोहरलालजी लोढ़ा, योजना की राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती प्रेमलताजी राजावत, राष्ट्रीय महिला मंत्री श्रीमती मनीषाजी कागरेचा, योजना के राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुलजी जैन ने सभी दानदाताओं के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए वैय्यावच्च या सेवा में अभिरुचि रखने वाले सभी महानुभावों से योजना में अधिक से अधिक सहयोग देने की पुरजोर करबद्ध अपील की है। वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे. रतनचन्दजी सिंघवी द्वारा साधु-साध्वीवृन्द के प्रति सेवा कार्यों को जहाँ मुक्तहस्त से पूर्ण किया जा रहा है, वहीं आप पूज्य संत-सतीवर्ग की सेवा को अपना परम सौभाग्य मानते हैं। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी को इस पुण्यात्मक कार्य से जोड़ने के लिए अपनी एवं अपनी टीम की ओर से तहेदिल से आभार प्रकट किया।

<u>VAYYAVACCH YOJANA ACCOUNT</u>

SHRI ALL INDIA S. S. JAIN CONFERENCE
CANARA BANK BRANCH
GOLE MARKET, NEW DELHI - 110 001
ACCOUNT NO - 0270101137280
IFSC CODE : CNRB0000270

जैन दर्शन की कुछ बातें

दस लक्षण : क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य ।
नव तत्व : जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा, बंध, मोक्ष ।
आठ कर्म : ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, वेदनीय, आयु, गौत्र, नाम, अंतराय ।
सात सुख : निरोगी काया, घर में माया, पतिव्रता नारी, पुत्र आज्ञाकारी, स्वस्थान में वासा, राज में पासा, बैकुंठ में वासा।
पांच महाव्रत : अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह ।
चार शिक्षा : दान, शील, तप, भाव ।
तीन गुण : कम खाओ, गम खाओ, नम जाओ ।

समाचार प्रकाश

नई दिल्ली का विज्ञान भवन गूंजा भगवान महावीर के जय-जयकारों से

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ द्वारा आयोजित हुआ 2550वाँ निर्वाण कल्याणक

नई दिल्ली : राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के तत्वावधान में सोमवार, 12 फरवरी 2022 को विज्ञान भवन में आयोजित भगवान महावीर के 2550वें निर्वाण कल्याणक महोत्सव में जैन व जैनेत्तर समाज ने अपने श्रद्धासुमन समर्पित किए। इन्दुजी जैन के मंगलाचरण से शुभारंभ करते हुए मंच संचालक ने पधारे हुए संत-साध्वीजनों का परिचय व विशेष महानुभावों का उल्लेख किया। कार्यक्रम में पधारे हुए अतिथियों के स्वागत अभिनंदन के पश्चात प्रवचन श्रृंखला में सर्वप्रथम राष्ट्रसंत परंपराचार्य प्रज्ञसागरजी ने महावीर के सिद्धांतों का वर्णन करते हुए भारत माता के प्रति अपने श्रद्धा भाव व्यक्त किए एवं आयोजकों का साधुवाद प्रदान किया।

आचार्य सुनीलसागरजी ने संघ संगठन पर जोर देते हुए आज के युग में महावीर की मान्यता का वर्णन करते हुए उनके उपदेशों को आत्मसात करने की पावन प्रेरणा दी। श्रमण संघीय प्रवर्तक पू. डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा. ने महावीर के जीवन दर्शन पर प्रकाश डालते हुए विश्वशांति के लिए महावीर के अहिंसा, सत्य, क्षमा, शाकाहार, कर्म व अनेकांतवाद को अपनाने की एवं आर.एस.एस. द्वारा किए जा रहे शुभ कार्यों की सराहना के साथ जैन समाज द्वारा किए जा रहे सामाजिक, आर्थिक योगदान जो लगभग देश में 40 प्रतिशत भागीदारी का उल्लेख किया। आदरणीय श्री कन्हैयालालजी जैन, दिल्ली संघ संचालक डॉ. अनिलजी अग्रवाल, जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन व समस्त समाज के गणमान्य अतिथिगण समाजसेवी जन व सुदूर स्थानों से वरिष्ठजनों से विज्ञान भवन महावीर के जयकारों से गूंजता रहा।

इस अवसर पर मूर्तिपूजक समुदाय की विदुषी महासाध्वी पू. श्री प्रीतिरत्नाश्रीजी एवं तेरापंथ समुदाय की विदुषी महासाध्वी श्री अणिमाश्रीजी ने अपनी ओजस्वी वाणी द्वारा जैन समाज को जागृत करते हुए अपना उद्‌बोधन प्रदान किया। अंतिम मुख्य वक्ता के रूप में विशेष रूप से उपस्थित आदरणीय सरसंघचालक मोहनराव भागवत जी ने भगवान महावीर के अनेकांतवाद के साथ यह वर्ष मन-वचन-काया से संयमी जीवन बिताने की पावन प्रेरणा दी। आपने भारतभर में व्याप्त लगभग 70 हजार शाखाओं को महावीर कल्याणक महोत्सव मनाने का संकल्प घोषित किया एवं भारत माता हम सबकी माता है। जैन समाज भी हमारा अपना है। राष्ट्र उत्थान में सभी का उत्थान मंगल है। रामकृष्ण महावीर हमारे आदर्श प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं। जैन मुनि जन हमारे मार्गदर्शक है। इस अवसर पर जैन मुनियों द्वारा लिखित ग्रंथों का आपने विमोचन किया। पू. डॉ. श्री सुरेन्द्रमुनिजी म.सा. द्वारा भगवान महावीर जीवन दर्शन आदि ग्रंथों का भागवतजी द्वारा विमोचन कराया एवं प्रवर्तक गुरुदेव पू. डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा. का पी.एचडी. ग्रन्थ **'जैन आगमों में श्रीकृष्ण चरित्र'** भेंट किया।

राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित इस कार्यक्रम के पूर्व आदरणीय भागवतजी द्वारा जैन संतों से मंत्रणा की गई एवं सम-सामायिक विषयों पर चर्चा विचारणा की। विभिन्न पत्रकारों व टी.वी. चैनलों द्वारा कार्यक्रम का प्रसारण किया गया। प्रारंभ में शोभायात्रा द्वारा सामूहिक संतों का विज्ञान भवन में पदार्पण हुआ। प्रवर्तक पू. डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा., डॉ. श्री सुरेन्द्रमुनिजी म. सा., श्री पार्श्वेंद्रमुनिजी म.सा., जैन कॉन्फ्रेंस के जैन भवन में विराजमान रहे। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन के आग्रह पर कुछ समय यहाँ विराजमान रहकर दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में विचरण के भाव रखते हैं।

उपरोक्त कार्यक्रम में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री श्री अतुलजी जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सुरेशकुमारजी जैन, श्री महावीर प्रसादजी जैन, राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष श्री जसवंतजी जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री रामनिवासजी जैन, दिल्ली प्रांतीय अध्यक्ष श्री जितेन्द्रजी जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री जयप्रकाशजी ललवानी जैन, श्री विपुलजी जैन, दिल्ली प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री दिनेशजी जैन 'रिंढ़ाना', श्रावक समिति के महामंत्री श्री मुन्नालालजी जैन आदि महानुभाव उपस्थित रहे।

प्रेषक : जयप्रकाश ललवानी जैन

आगमज्ञाता, युवा प्रेरक, योगिराज गुरुदेव श्री अरुणचन्द्र जी म. के श्रीचरणों में वैरागी राघव जैन बने श्री अमृतमुनिजी म.

कलश यात्रा में शामिल लगभग 4000 बहनों की सहभागिता से दीक्षा महोत्सव बना एक अविस्मरणीय ऐतिहासिक प्रसंग

दिल्ली : संघशास्ता, शासन प्रभावक पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शनलालजी म.सा. के अतिप्रिय सुशिष्य रत्न युवा प्रेरक, आगमज्ञाता, योगिराज गुरुदेव श्री अरुणचन्द्रजी म.सा. के परम पावन सान्निध्य में वैरागी राघव जैन द्वारा 28 जनवरी 2024 को जे.एम.डी. टैन्ट, जापानी पार्क, रोहिणी में चतुर्विध संघ की भारी संख्या में उपस्थिति के बीच जैन भागवती दीक्षा अंगीकार की गई। उल्लेखनीय है कि उत्तर भारत में चल रही शीतलहर के बीच प्रातः 7:30 बजे से लगभग 4000 बहनें सिर पर कलश रखकर पूरे हर्षोल्लास के साथ इस शोभा यात्रा में शामिल हुईं।

रोहिणी सैक्टर-9 स्थित कादम्बरी अपार्टमेन्ट से प्रारम्भ हुई इस भव्यातिभव्य शोभा यात्रा का दृश्य वास्तव में बहुत ही नयनाभिराम प्रतीत हुआ। इस शोभायात्रा में श्रमण-श्रमणी वर्ग सहित लगभग 5 से 6 हज़ार लोग इस अवसर में सहभागी बने। लगभग 9 बजे यह शोभायात्रा अपने गंतव्य स्थल जापानी पार्क पहुंचकर धर्मसभा में परिवर्तित हो गई। जैन कोकिला महासाध्वी श्री सुषमा जी म. ने भी इस अवसर पर दीक्षार्थियों को अपना मंगलमय शुभाशीर्वाद प्रदान किया।

वेश परिवर्तन से पूर्व वैरागी श्री राघव जी जैन ने गुरुदेवश्री जी के प्रति जहां हृदय से आभार प्रकट किया वहीं उन्होंने कहा कि वे सांसारिकता से विमुख होकर सत्यपथ पर पूरी निष्ठा से आगे बढ़ेंगे और गुरु परम्परा की कीर्ति को उत्कर्ष प्रदान करने में निष्णात रहेंगे। प्रशान्त विहार श्रीसंघ के महामंत्री श्री जितेन्द्रजी जैन ने पूज्यवर्गं के प्रति श्रद्धा भावना अर्पित करते हुए बड़ी संख्या में उपस्थित महानुभावों के प्रति आभार एवं कृतज्ञता के भाव प्रकट किए। वेश परिवर्तन के उपरान्त पधारे मुमुक्षु श्री राघवजी जैन को श्रद्धेय गुरुदेव श्री अरुणचन्द्र जी म. द्वारा चतुर्विध संघ की भारी उपस्थिति के बीच जहां दीक्षा पाठ प्रदान किया गया वहीं उनका नामकरण श्री अमृत मुनि के रूप में घोषित किया गया।

इस अवसर पर दीक्षार्थी बन्धु के धर्म के माता-पिता श्री विनोद जी जैन व श्रीमती आशी जी जैन (गोयम) बने वहीं दीक्षा अध्यक्ष श्री संजीव जैन (श्री अतिमुक्त मुनि जी म. के सांसारिक पिता), मुख्य अतिथि श्री सत्यनारायण जैन-श्री सुदर्शन जैन, ध्वजारोहणकर्ता श्री प्रवीण जैन-श्री राजेश जैन 'चुलकाना', स्वागत समिति में जैन कॉन्फ्रेंस के रा. उपाध्यक्ष श्री सुरेशकुमार जैन-श्री सौरभ जैन, श्री गौरव जैन 'पाथरी', जैन कॉन्फ्रेंस के रा. कार्य. समिति सदस्य श्री दीपक जैन-श्री चिराग जैन 'बिनोली', जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश मंत्री श्री सुशील जैन 'पाथरी' व श्री पवन जैन 'हथवाला', के अलावा बड़ी संख्या में महानुभावों एवं श्रीसंघों द्वारा आयोजन में परम सहयोग प्राप्त हुआ।

श्री एस. एस. जैन सभा, प्रशान्त विहार के अध्यक्ष समाजरत्न श्री जगदीश प्रसाद जैन ने बताया कि इस दिव्य भव्य अवसर को चिरस्मरणीय बनाने में श्रीसंघ के संरक्षक श्री रामकुमार जैन, श्री खजांचीलाल जैन, श्री रामनिवास जैन, श्री दयाराम जैन, श्री श्यामलाल जैन, श्री मोहनलाल जैन, महामंत्री श्री जितेन्द्र जैन, कोषाध्यक्ष श्री तरसेम जैन, उपाध्यक्ष श्री अनन्तराम जैन, श्री सुशील जैन, श्री रमेश जैन के अलावा कार्यकारिणी समिति सदस्यों, जैन कॉन्फ्रेंस महिला राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमती सन्तोष जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्रीमती वीणा जैन, जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश महिला अध्यक्षा श्रीमती शीला जैन, स्थानीय महिला मंडल तथा ब्राह्मी सुन्दरी युवती महिला संघ प्रशान्त विहार, श्री जितेन्द्रजी जैन द्वारा कार्यक्रम समापन से पूर्व सभी संत-सतीवृन्द के प्रति जहां आभार प्रदर्शन किया गया। दीक्षा महामहोत्सव की व्यवस्थाओं में जैन कॉन्फ्रेंस विहार सेवा योजना के अध्यक्ष श्री पंकज जैन एवं मंत्री श्री चिराग जैन की देखरेख में लगभग 250 सदस्यों द्वारा सेवा सहयोग प्रदान किया गया।

प्रेषक : जितेन्द्र जैन, महामंत्री, प्रशान्त विहार श्रीसंघ

गणेशीलालजी म.सा. के जयकारों से गूंजा समस्त भारतवर्ष

जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा 62वीं पुण्यतिथि पर 62000 जप-तप का लिया था संकल्प

एक दिन में हजारों लोगों ने जप-तप के माध्यम से दी श्रद्धांजलि

जालना, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) : ध्यान योगी, आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. शुभाशीर्वाद से एवं श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के आव्हान पर घोर तपस्वी, बालब्रह्मचारी, आगम ज्ञाता, कर्नाटक गजकेसरी पूज्य गुरुदेव श्री गणेशीलालजी म.सा. की 62वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में एक उपवास जप-तप के साथ खद्दरधारी गुरु गणेश के नाम करने का संकल्प लिया गया था।

इस आव्हान को सभी गुरुभक्तों ने आत्मसात किया और तपोभूमि जालना, औरंगाबाद सहित समस्त भारतवर्ष में श्रद्धालु भक्तों ने जप-तप के माध्यम से हजारों गुरु भक्तों / श्रावक-श्राविकाओं ने उपवास रखकर अपनी श्रद्धांजलि गुरुदेव को समर्पित की। इस अवसर पर जालना में श्रमण संघीय सलाहकार नवकार आराधक पू. श्री तारकऋषिजी म.सा., मधुर वक्ता सुयोग्यऋषिजी म.सा., उप-प्रवर्तिनी पू. श्री मधुबालाजी म., पू. श्री किरणसुधाजी म., पू. श्री प्रशांतकंवरजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में हजारों की संख्या में जप-तप के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित की गई। देशभर से हजारों लोग इस अवसर पर जालना तपोधाम पधारे। वहीं जालना में इस अवसर पर पधारे हुए सभी अतिथियों का स्वागत जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री श्री आनंदजी सुराणा जैन, जालना श्रीसंघ अध्यक्ष श्री सुदेशजी सकलेचा जैन, श्री राजेशजी लुणिया जैन आदि द्वारा किया गया।

औरंगाबाद में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि कोटा सम्प्रदाय के श्री प्रेमराजजी म.सा से सम्पर्क व भागवती दीक्षा ग्रहण, दीक्षा ग्रहण करते ही एकान्तर की तपस्या पारणे में सीमीत द्रव्यों की मर्यादा ओर एसी साधना कि सुनने वाले चकित रह जाए। खादी पहनने वाला व्यक्ति व मुख वस्त्रिका लगाने वाला ही दर्शन कर सके, ऐसा कठोर नियम लिया। ऐसी वचन सिद्धि कि कितने ही गंभीर बीमारियों वाले रोगियों को तपस्या कराई ओर वह पूर्ण स्वस्थ हो गये, जो वह कहते हो जाता। दक्षिण भारत में प्रभु महावीर के जयकारे के बाद कर्नाटक गज केसरी श्री गणेशीलालजी म.सा. का जयकारा लगाया जाता है। अपने उपदेशो व सदप्रेरणा से कई गौशाला संचालित हुई जो आज भी सफलतापूर्वक चल रही हैं। वो एसे महापुरुष थे कि उनके जीवन में इतनी चमत्कारी घटनाए हुई कि वह कहानी के रूप में बन गई। मिथ्यात्व मान्यताओं को बिल्कुल भी प्रश्रय नही दिया, जिनका विचरण क्षेत्र मुख्य रुप से दक्षिण भारत व महाराष्ट्र रहा। जालना महाराष्ट्र में 4 फरवरी 1962 को देवलोक गमन हुआ तिथी थी माघ सुदी अमावस्या। जिनका पूर्वाभास उन्हे पहले ही हो गया था। जालना जहां उनकी समाधी है सदैव भक्तों की भीड़ बनी रहती है व हर अमावस्या को तो मेले जैसा माहौल रहता है। ऐसे महापुरुष की पावन पुण्य तिथी पर हृदय की अनन्त आस्था के साथ कोटिशः वंदन, नमन! आप जहाँ पर भी विराजमान है, समाज पर आपकी कृपा बरसती रहे।

औरंगाबाद में पू. श्री शालीभद्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा ने गुरुदेव के जीवन की झांकी से भक्तों को अवगत कराया। तथा परमेष्ठी ग्रुप की ओर से छत्रपति संभाजीनगर से जालना के बीच पदयात्रा निकाली गई, जो कुंभारवाड़ा स्थित महावीर भवन से शुरु हुई। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री श्री दिलीपजी खिंवसरा जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री जयप्रकाशजी ललवानी जैन, श्री गौतमचंदजी दुग्गड़ जैन, मुंबई-पुणे प्रांतीय अध्यक्ष श्री सुनीलजी बाफना जैन, गुरु गणेश शिक्षण समिति के अध्यक्ष श्री ताराचंदजी दुग्गड़ जैन, श्रीमती हेमलताजी मुगदिया जैन, श्रावक संघ अध्यक्ष श्री झुंबरलालजी पगारिया, मीठालालजी कांकरिया, मनीषजी आंचलिया, विजयजी देसरड़ा, मनुसखजी चोपड़ा आदि महानुभावों ने उपस्थित थे।

प्रेषक : आनंद सुराणा जैन

शोक समाचार

श्रीमती पिस्ताकंवरजी खेतपालिया की स्वर्गवास उपरांत गुणानुवाद सभा का आयोजन

चेन्नई (तमिलनाडु) : जैन दादावाडी में उप-प्रवर्तक श्री श्रुतमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में सम्पन्न भामाशाह श्री सुनीलसा खेतपालिया की मातूश्री सुश्राविका धर्मपरायणा श्रीमती पिस्ताकंवरजी खेतपालिया धर्मपत्नी श्रीपारसमलसा खेतपालिया की गुणानुवाद सभा शहर के गणमान्य, विशिष्ट प्रमुख महानुभावों की उपस्थिति में गौरवपूर्ण सम्पन्न हुई।

संचालक महोदय द्वारा धर्मपरायणा सुश्राविका श्रीमती पिस्ताकंवरजी के जीवन के सद्गुणों पर विशेष प्रकाश डालते हुए आपके उत्कृष्ट गुरु सेवाभक्ति अतिथि सत्कार सत्कार्यों की भुरि भुरि प्रशंसा करते हुए कहा सुनीलसा खेतपालिया जैन आपके ही बताए संस्कारों, सन्मार्गों, पदचिन्हों पर चलते हुए सर्वत्र ख्यातिमय गुंजायमान हो रहे हैं। सचमुच में वह जननी महान है जिसने कुक्षी से बब्बर शेर को जन्म दिया है। सभा में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनन्दमलजी छल्लाणी जैन, श्री रिखबचंदसा बोहरा, श्री मदनलालसा गुंदेचा, श्री दिलीपजी आदि वक्ताओं ने सटीक एवं सारगर्भित शब्दों में मातोश्री के प्रति भावांजलि, आदरांजलि, गुणाजंलि समर्पित करते हुए खेतपालिया परिवार के प्रति हार्दिक संवेदनाएं प्रकट कर धर्म-ध्यान, शुक्ल-ध्यान की और कार्यरत करने की बात रखी। इस अवसर पर अनेक गुरु भगवंतों के मंगल संदेश प्राप्त हुए। अंत में उप-प्रवर्तक श्री श्रुतमुनि जी म.सा. ने मंगलसंदेश फरमाया। दिवंगत आत्मा के उत्तरोतर प्रगति कर अरिहंत स्वरुप को प्राप्त करते हैं सिद्ध सिला पर विराजमान होवे। **प्रेषक : जे.पी. ललवानी जैन**

दिल्ली : ऋषभ विहार श्रीसंघ के संस्थापक सदस्य समाजरत्न श्रीमान् नेमिनाथजी जैन का दिनांक 18 जनवरी 2024 को देवलोक गमन हो गया। **प्रेषक : अशोक जैन 'जयचंदा'**

रहाता, अहमदनगर (महाराष्ट्र) : डॉ. अशोकजी कुंदनमलजी लोढ़ा जैन की धर्मपत्नी श्रीमती उज्जवलाजी लोढ़ा जैन का दिनांक 18 जनवरी 2024 को सागारी संथारा व्रत की पूर्णाहूति के साथ देवलोकगमन हो गया। आपको आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. द्वारा संथारा के पच्चक्खान करवाये गये। **प्रेषक : लोढ़ा परिवार**

दिवंगत आत्माओं के प्रति जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि

चील और मुर्गी

एक जंगल में बरगद का पेड़ था। उस पेड़ के ऊपर एक चील घौंसला बनाकर रहती थी, जहाँ उसने अंडे दे रखे थे। उसी पेड़ के नीचे एक जंगली मुर्गी ने भी अंडे दे रखें थे। एक दिन उस चील के अंडों में से एक अंडा नीचे गिरा और मुर्गी के अंडों में जाकर मिल गया। समय बीता अंडा फूटा और चील का बच्चा उस अंडे से निकला और वह यह सोचते बड़ा हुआ कि वो एक मुर्गी है। वो मुर्गी के बाकी बच्चों के साथ बड़ा हुआ। वह उन्हीं कामों को करता जिन्हें एक मुर्गी करती है। वो मुर्गी की तरह ही कुड़कुड़ाता, जमीन खोद कर दाने चुगता और वो इतना ही ऊँचा उड़ पाता जितना कि एक मुर्गी उड़ती है।

एक दिन उसने आसमान में एक चील को देखा जो बड़ी शान से उड़ रही थी। उसने अपनी मुर्गी माँ से पूछा कि उस चिड़िया का क्या नाम है जो इतना ऊँचा बड़ी शान से उड़ रही है। मुर्गी ने जबाब दिया वह एक चील है। फिर चील के बच्चे ने पूछा माँ - मैं इतना ऊँचा क्यों नहीं उड़ पाता। मुर्गी बोली तुम इतना ऊँचा नहीं उड़ सकते क्योंकि तुम एक मुर्गे हो। उसने मुर्गी की बात मान ली और मुर्गे की जिंदगी जीता हुआ एक दिन मर गया।

सीख : जो भी हम सोचते हैं या कुछ नया करने की कोशिश करते हैं तो दूसरे हमें यह कहकर रोकते हैं कि तुम ऐसा नहीं कर सकते, ऐसा नहीं हो सकता और हम अपना इरादा यह सोचकर बदल लेते हैं कि वाकई मैं यह नहीं कर सकता और हार मान लेते हैं।

इसका मुख्य कारण है अपने ऊपर भरोसा न होना, अपनी शक्तिओं पर भरोसा न होना, अपने काम पर भरोसा न होना. दोस्तों जो लोग कहते हैं कहने दीजिये लोगों का काम है कहना, अपने आप पर भरोसा रखें, अपने आप को पहचाने, दोस्तों अगर जीत निश्चित हो तो कायर भी लड़ जाते हैं, बहादुर वो कहलाते हैं, जो हार निश्चित हो, फिर भी मैदान नहीं छोड़ते। ❖❖

श्रमण संघ व जैन कॉन्फ्रेंस की सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियाँ

जालना में खद्दूरधारी, घोर तपस्वी पू. श्री गणेशीलालजी म. सा. की 62वीं पुण्यतिथि श्रमण संघीय सलाहकार पू. श्री तारकऋषिजी म., मधुर वक्ता पू. श्री सुयोग्यऋषिजी म. सा., उपप्रवर्तिनी पू. श्री मधुबालाजी म. सा., उपप्रवर्तिनी पू. श्री किरणसुधाजी म. सा., आदि ठाणा के सान्निध्य में हजारों की जनमेदिनी में मनाई गई। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रव्यापी पहल एक उपवास जप - तप के साथ खद्दूरधारी के नाम को अपूर्व समर्थन मिला।
इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष सहित सैंकड़ों कार्यकर्ताओं ने शिरकत की।

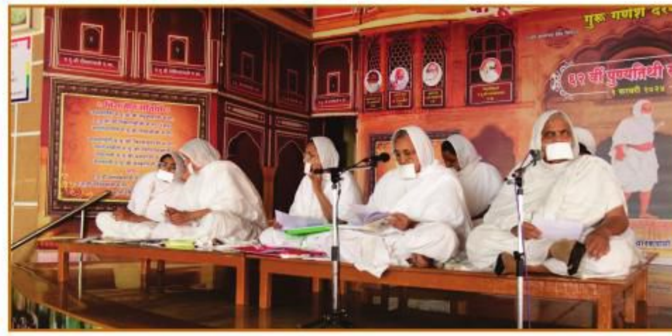

गुरु गणेशनगर औरंगाबाद में खद्दूरधारी, घोर तपस्वी, कर्नाटक गजकेसरी पू. श्री गणेशीलालजी म. सा. की 62वीं पुण्यतिथि पू. श्री शालीभद्रमुनिजी म. सा. के पावन सान्निध्य में जप - तप, धर्म आराधना के साथ मनाई गई।
इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्षजी एवं अन्य पदाधिकारीगण ने उपस्थित होकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्रमण संघ व जैन कॉन्फ्रेंस की सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियाँ

चेन्नई में राष्ट्रीय अध्यक्षजी के साथ सौजन्य भेंट करते हुए श्री रमनलालजी लुंकड़ जैन, सी. ए. श्री राजीवजी जैन श्री अशोकजी बाबूसेठ बोरा जैन, श्री दिलीपजी खिंवसरा जैन, श्री सुनीलजी बाफना जैन, श्री दिनेशजी भलगट जैन श्री राजेन्द्रजी बोहरा जैन, श्री गौतमचंदजी दुग्गड़ जैन आदि महानुभाव

बैंगलोर में राष्ट्रीय अध्यक्षजी के साथ सौजन्य भेंट एवं स्वागत परस्पर अभिनंदन करते हुए विश्वस्त श्री बाबूलालजी रांका जैन श्री सुरेशजी छल्लाणी जैन, श्री रतनजी सिंघवी जैन, श्री राजेशजी मुथा जैन, श्री ज्ञानंचदजी लोढ़ा जैन, श्री शांतिलालजी पोखरना जैन श्री अशोकजी धोका जैन, श्री सुनीलजी लोढ़ा जैन, श्री गौतमचंदजी दुग्गड़ जैन, श्री पदमचंदजी आच्छा जैन, तपस्विनी, सुश्राविका श्रीमती हेमाजी हिरण जैन धर्मपत्नी श्री हिम्मतलालजी हिरण जैन आदि।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

आनंदमल छल्लाणी जैन	अशोक मेहता जैन	अतुल जैन	पदमचंद कांकरिया जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक अतुल जैन द्वारा जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, 1526 वेस्ट रोहताश नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित